CMYK

अधिकतम : 20°C
न्यूनतम : 09°C

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

हल्द्वानी, शुक्रवार 13 फरवरी 2026 हल्द्वानी संस्करण: वर्ष 23 अंक 169 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com | फाल्गुन कृष्ण पक्ष 10 विक्रमी सम्वत् 2082 | 24 शाबान 1447 हिजरी | नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

विदेशी दबाव में आकर समझौते देशहित के खिलाफः खड़गे पेज 2

ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर ने जीता स्वर्ण पदक खेल टाइम्स

संघर्ष, सेवा और साहित्य का संगम था सरोजिनी नायडू का जीवन सम्पादकीय

इजरायल ने गिराए थे गाजा में प्रतिबंधित वैक्यूम बम पेज 12

संक्षिप्त समाचार

जनवरी में 2.75 प्रतिशत रही महंगाई दर

नई दिल्ली। सरकार ने नई सीरीज (आधार वर्ष 2024) के तहत खुदरा महंगाई का पहला आंकड़ा गुरुवार को जारी कर दिया। इसके अनुसार, जनवरी 2026 में महंगाई दर 2.75 प्रतिशत दर्ज की गई। नई सीरीज में जनवरी 2025 से अब तक के उपलब्ध महंगाई के आंकड़ों में जनवरी 2026 की महंगाई दर सबसे अधिक है। इसके आधार पर पिछले साल जनवरी में खुदरा महंगाई 1.67 प्रतिशत और दिसम्बर 2025 में 0.08 प्रतिशत रही थी। इस साल जनवरी में खाद्य महंगाई दर 2.13 प्रतिशत दर्ज की गई। केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जारी आंकड़ों में बताया गया है कि जनवरी में ग्रामीण क्षेत्रों में महंगाई दर 2.73 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 2.77 प्रतिशत रही। इसमें खाद्य एवं पेय पदार्थों की महंगाई दर 2.11 प्रतिशत, कपड़ों तथा जूते-चप्पलों की 2.98 प्रतिशत और स्वास्थ्य सेवाओं की 2.19 प्रतिशत दर्ज की गई है।

मशहूर समाचार वाचिका सरला माहेश्वरी का निधन

नई दिल्ली। मशहूर समाचार वाचिका सरला माहेश्वरी का गुरुवार सुबह राष्ट्रीय राजधानी में निधन हो गया। वह 71 वर्ष की थीं। सुश्री माहेश्वरी दूरदर्शन के साथ अपने लंबे जुड़ाव के लिए जानी जाती हैं। कई दशकों तक दूरदर्शन पर अपनी शांत, गंभीर आवाज और संतुलित समाचार प्रस्तुति के कारण उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। परिवार के सूत्रों ने बताया कि उनका अंतिम संस्कार गुरुवार शाम 4 बजे दिल्ली के निगम बोध घाट पर किया गया। हिंदी में पीएचडी करने के बाद 1976 में समाचार प्रस्तोता के रूप में वह दूरदर्शन से जुड़ीं और दो साल की संक्षिप्त अवधि को छोड़कर, वह हमेशा राष्ट्रीय प्रसारक के साथ जुड़ी रहीं।

30 करोड़ श्रमिकों की हड़ताल का दिखा मिला-जुला असर

नई दिल्ली। सरकार पर कॉरपोरेट समर्थक नीतियों का आरोप लगाते हुए श्रमिक संगठनों के भारत बंद का गुरुवार को देशभर में मिला-जुला असर दिखा। इसका सामान्य जनजीवन पर ज्यादा असर नहीं पड़ा। बता दें कि मजदूर संगठनों ने सरकार पर मजदूर विरोधी, किसान विरोधी नीतियों का आरोप लगाते हुए भारत बंद का ऐलान किया था। इसमें 30 करोड़ मजदूरों के शामिल होने का दावा किया गया था। फाइट फॉर राइट के राष्ट्रीय कोआर्डिनेटर उमंग बंसल ने कहा कि यह पूरी ही राजनीतिक से प्रेरित हड़ताल है और इसका असर देश में नहीं पड़ने वाला है।

दिल्ली की वायु गुणवत्ता सूचकांक में हुआ सुधार

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में तेज दक्षिण-पश्चिमी हवाओं के चलने से गुरुवार सुबह वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में सुधार दर्ज किया गया। समीर एप के आंकड़ों के अनुसार, गुरुवार सुबह नौ बजे राजधानी का एक्यूआई 194 दर्ज किया गया, जो 'मध्यम' श्रेणी में आता है। यह बुधवार के 305 (खराब) के स्तर से काफी बेहतर है।

भारतीय वायुसेना को मिलेंगे 114 राफेल लड़ाकू विमान

दो दशक से भी अधिक समय से लटकी पड़ी खरीद के प्रस्ताव को हरी झंडी दिखाई

रक्षा अधिग्रहण परिषद की बैठक में 3.60 लाख करोड़ के रक्षा सौदों को दी गई मंजूरी

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की अगले सप्ताह की भारत यात्रा से पहले सरकार ने वायुसेना के लिए फ्रांस से अतिरिक्त बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान राफेल की दो दशक से भी अधिक समय से लटकी पड़ी खरीद के प्रस्ताव को गुरुवार को हरी झंडी दिखा दी।

रक्षा मंत्रालय ने गुरुवार को बताया कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में यहां हुई रक्षा अधिग्रहण परिषद की बैठक में 3.60 लाख करोड़ रुपये की लागत से राफेल लड़ाकू विमानों के साथ-साथ नौसेना के लिए आठ पी-8 आई टोही विमानों, मिसाइलों तथा स्यूडो सैटेलाइट की खरीद को भी मंजूरी दी गई। इन प्रस्तावों को आवश्यकता के आधार पर खरीद की मंजूरी दी गई है। इन खरीद सौदों के पूरा होने से सशस्त्र बलों की युद्धक तैयारी तथा मारक क्षमता कई गुना बढ़ जाएगी। उल्लेखनीय है कि रक्षा खरीद बोर्ड ने पिछले महीने ही करीब सवा तीन लाख करोड़ रुपये की लागत से फ्रांस से 114 राफेल लड़ाकू विमान की खरीद को मंजूरी दी थी। अभी वायुसेना के पास 36 राफेल लड़ाकू विमान हैं। मंत्रालय ने बताया कि परिषद की बैठक में सेना के लिए टैंक रोधी सुरंगों (वैभव) और टी -72 टैंकों तथा इंफेन्ट्री के लिए युद्धक वाहनों की खरीद को भी मंजूरी दी गई है। राफेल विमान की खरीद से संबंधित प्रस्ताव को अब केन्द्रीय मंत्रिमंडल की सुरक्षा मामलों की समिति में भी मंजूरी दी जाएगी। सूत्रों के अनुसार इस सौदे में वायुसेना को 18 विमान पूरी तरह तैयार मिलेंगे, जबकि शेष 96 विमान भारत में ही बनाए जाएंगे और इनमें से कुछ विमान दो सीटों वाले भी होंगे जिनका इस्तेमाल पायलटों को प्रशिक्षण में किया जाएगा। फ्रांस की डसॉल्ट एविएशन द्वारा बनाया जाने वाला राफेल एक अत्याधुनिक बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान है, जो हवा से हवा और हवा से जमीनी हमलों के साथ-साथ निगरानी मिशन चलाने तथा परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम है। इस विमान को अत्याधुनिक मिसाइलों मेटियोर तथा स्कैल्प क्रूज से लैस रहता है।

तटरक्षक बल को 2312 करोड़ रुपये की लागत से मिलेंगे आठ डोर्नियर 228 विमान

नई दिल्ली। रक्षा मंत्रालय ने भारतीय तटरक्षक बल के लिए आठ डोर्नियर 228 विमानों की खरीद के उद्देश्य से सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के साथ 2,312 करोड़ रुपये के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। रक्षा मंत्रालय ने गुरुवार को बताया कि यह अनुबंध 'बाय (इंडियन)' श्रेणी के अंतर्गत किया है और इसमें संचालन भूमिका संबंधी उपकरण की खरीद भी शामिल है। रक्षा सचिव राजेश कुमार सिह की उपस्थिति में इस अनुबंध पर यहां एचएएल के ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट डिवीजन, कानपुर के साथ हस्ताक्षर किए गए। इस अनुबंध से एलएएल का उत्पादन तंत्र सुदृढ़ होगा तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों और सहायक उद्योगों के व्यापक नेटवर्क को समर्थन मिलेगा। इससे रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे और रखरखाव, मरम्मत तथा ओवरहॉल तंत्र बनाने में भी मदद मिलेगी। यह अनुबंध आत्मनिर्भर भारत और मेक-इन-इंडिया के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करता है तथा भारत की समुद्री सुरक्षा संरचना को भी मजबूत बनाता है।

'घूसखोर पंडित' के फिल्ममेकर को सुप्रीम कोर्ट की फटकार

शीर्ष अदालत ने कहाः समाज के एक हिस्से को बदनाम नहीं कर सकते

शाह टाइम्स ब्यूरो

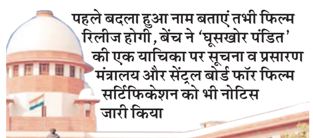

पहले बदला हुआ नाम बताएं तभी फिल्म रिलीज होगी, बेंच ने 'घूसखोर पंडित' की एक याचिका पर सूचना व प्रसारण मंत्रालय और सेंट्रल बोर्ड फॉर फिल्म सर्टिफिकेशन को भी नोटिस जारी किया

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को फिल्म घूसखोर पंडित के फिल्ममेकर नीरज पांडे को फटकार लगाई। कोर्ट ने कहा कि ऐसे टाइटल का इस्तेमाल करके समाज के एक हिस्से को बदनाम नहीं कर सकते हैं।

मनोज बाजपेई स्टारर फिल्म 'घूसखोर पंडित' की रिलीज पर रोक लगाने वाली एक याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने फिल्म के नाम पर कड़ी आपत्ति जाहिर की। यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने वाली थी। जस्टिस बीवी नागरत्ना और उज्जल भुयान की बेंच ने फिल्म 'घूसखोर पंडित' की एक याचिका पर सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सेंट्रल बोर्ड फॉर फिल्म सर्टिफिकेशन को भी नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने कहा कि आप ऐसे टाइटल का इस्तेमाल करके समाज के एक हिस्से को बदनाम क्यों कर रहे हैं? यह नैतिकता और पब्लिक ऑर्डर के खिलाफ है। जब तक आप हमें बदला हुआ नाम नहीं बताते हैं। हम आपको फिल्म रिलीज नहीं करने देंगे। कोर्ट ने फिल्म मेकर्स को एक एफिडेविट फाइल करने का निर्देश दिया कि घूसखोर पंडित समाज के किसी भी वर्ग को नीचा नहीं दिखाती है। मामले की अगली सुनवाई 19 फरवरी को होगी। 'घूसखोर पंडित' के खिलाफ दायर की गई याचिका में आरोप लगाया गया है कि यह जाति और धर्म पर आधरित स्टीरियोटाइप को बढ़ावा देती है। सांप्रदायिक सद्भाव और संवैधानिक मूल्यों के लिए खतरा पैदा करती है। यह याचिका भारतीय ब्राह्मण समाज के राष्ट्रीय संगठन सचिव अतुल मिश्रा द्वारा फाइल की गई। इस पीआईएल पर सुनवाई सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई की। इस याचिका में फिल्म 'घूसखोर पंडित' की रिलीज पर रोक लगाने की मांग की गई थी। इस फिल्म को लेकर देश के कई राज्यों में विरोध प्रदर्शन भी हुए। कई फिल्म संस्थाओं ने भी इनके नाम को लेकर आपत्ति जताई। आखिर में मेकर्स ने नाम बदलने की बात कही। फिल्म 'घूसखोर पंडित' में मनोज बाजपेई के अलावा नुसरत भरुचा, साकिब सलीम, अक्षय ओबेराय और दिव्या दत्ता जैसे कलाकार नजर आएंगे।

राहुल गांधी के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव नहीं आएगा

निशिकांत दुबे ने राहुल की सदस्यता खत्म करने का दिया नोटिस

- **कहाः वे गुमराह कर रहे**
- **संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू ने एक्स पर वीडियो पोस्ट किया, चार फरवरी को लोकसभा स्पीकर के चैंबर में हंगामे का जिक्र**

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने गुरुवार को राहुल गांधी के खिलाफ लोकसभा में सब्सटेंसिव मोशन पेश किया है। राहुल गांधी पर देश को गुमराह करने का आरोप लगाया है। दुबे ने राहुल की संसद सदस्यता खत्म करने और चुनाव लड़ने पर लाइफटाइम बैन लगाने की मांग की है।

मीडिया सूत्रों के मुताबिक, सरकार राहुल के खिलाफ सदन में उनकी स्पीच के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस नहीं लाएगी। इस पर प्रियंका गांधी ने कहा कि मोदीजी ने छाती 56 इंच की नपवाई थी। उनके खिलाफ भी प्रस्ताव आना चाहिए। हालांकि, बीजेपी उनके (राहुल) भाषण से आपत्तिजनक हिस्से हटाने को लेकर अब भी अड़ी हुई है, क्योंकि उन्होंने अब तक अपने आरोपों को लेकर सबूत पेश नहीं किए हैं। बीजेपी के चीफ व्हिप संजय जायसवाल ने राहुल के बजट चर्चा के दौरान कहे गए कुछ अंशों को रिकॉर्ड से हटाने का औपचारिक नोटिस दिया है।

मजदूर-किसान की लड़ाई में मजबूती से खड़ा रहूंगा : राहुल गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि सरकार की नीतियों के कारण देश के मजदूर और किसान अपने हक की लड़ाई के लिए सड़कों पर हैं और वह इस संघर्ष में मजबूती से उनके साथ खड़े रहेंगे। श्री गांधी ने गुरुवार को सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि देश का मेहनतकश वर्ग अपने साथ हो रहे अन्याय से दुखी है और यही वजह है कि आज देशभर में लाखों मजदूर और किसान अपने हक़ की आवाज़ बुलंद करने सड़कों पर हैं। उन्होंने कहा कि मजदूरों को डर है कि चार श्रम संहिताएं उनके अधिकारों को कमजोर कर देंगी। इसी तरह किसानों को आशंका है कि व्यापार समझौता उनकी आजीविका पर चोट करेगा। और मनरेगा को कमजोर या खत्म करने से गांवों का आखिरी सहारा भी छिन सकता है।

यूपी पंचायत चुनाव से पहले बनेगा पिछड़ा वर्ग आयोग

शाह टाइम्स ब्यूरो

- **सरकार ने हाईकोर्ट में दिया हलफनामा**

लखनऊ। उप्र सरकार ने हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच को सूचित किया है कि प्रदेश में आगामी पंचायत चुनाव से पहले एक समर्पित पिछड़ा वर्ग आयोग बनाया जाएगा।

जस्टिस राजन राय और जस्टिस अवधेश चौधरी की पीठ इस मामले की सुनवाई कर रही थी। दरअसल, हाईकोर्ट में एक याचिका दाखिल कर मौजूदा पिछड़ा वर्ग आयोग के अधिकारों को चुनौती दी गई थी। सरकार ने अब स्पष्ट किया है कि इसी समर्पित आयोग की रिपोर्ट के आधार पर सीटों का आरक्षण तय होगा। यह कदम सुप्रीम कोर्ट के उन निर्देशों के पालन में उठाया गया है, जिनमें स्थानीय निकाय चुनावों से पहले समर्पित आयोग का होना अनिवार्य बताया गया है।

मुजफ्फरनगरः मुठभेड़ में 50 हजार का इनामी ढेर

शाह टाइम्स ब्यूरो

- **दो पुलिसकर्मी भी घायल, मारे गए बदमाश पर 40 जघन्य केस थे दर्ज**

मुजफ्फरनगर। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में बुढ़ाना कोतवाली क्षेत्र के विज्ञाना रोड पर बुधवार देर रात पुलिस ने एक सशस्त्र मुठभेड़ में 50 हजार रुपये के इनामी बदमाश अमजद को मार गिराया। मुठभेड़ के दौरान दो पुलिसकर्मी भी घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मारे गए बदमाश पर लूट, हत्या, डकैती समेत करीब 40 जघन्य मुकदमे दर्ज थे और वह अंतरराज्यीय गिरोह का सक्रिय सदस्य बताया जा रहा था। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय वर्मा ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि ग्रामीण इलाके के जंगल के समीप कुछ बदमाश हैं, जो लूट सहित कई मामलों में वांछित चल रहे हैं। सूचना के आधार पर थाना बुढ़ाना, थाना तितावी एवं थाना शाहपुर पुलिस की संयुक्त टीम ने सूचना के आधार पर पुलिस ने नाकेबंदी कर सघन चेकिंग शुरू की। इस दौरान पुलिस ने बाइक सवार संदिग्ध बदमाशों को रोकने का प्रयास किया, लेकिन खुद को घिरा देख, उन्होंने पुलिस टीम पर ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। मुठभेड़ के दौरान आत्मरक्षार्थ फायरिंग में बदमाशों की गोलियां एसपी देहात आदित्य बंसल की गाड़ी पर लगीं। वहीं कई गोलियां पुलिसकर्मियों की बुलेटप्रूफ जैकेट पर भी लगीं। इस दौरान दरोगा संदीप और सिपाही अशफाक घायल हो गए, जिन्हें तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया।

भारतीय नौसेना ने पहली बार सीटीएफ की कमान संभाली

- **सीटीएफ 154 विशेष रूप से सीएमएफ के सदस्य देशों के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पर केंद्रित**

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना ने बहुराष्ट्रीय संयुक्त समुद्री बल (सीएमएफ) के अंतर्गत बहुराष्ट्रीय संयुक्त टास्क फोर्स (सीटीएफ) 154 की कमान संभाल ली है। नौसेना ने गुरुवार को बताया कि बहरीन के मनामा स्थित सीएमएफ के मुख्यालय में एक समारोह में भारतीय नौसेना ने बुधवार को टास्क फोर्स की कमान संभाली। समारोह की अध्यक्षता अमेरिकी नौसेना के वाइस एडमिरल कर्ट ए. रेनशॉ ने की।

इस अवसर पर भारतीय नौसेना के डिप्टी चीफ ऑफ नेवल स्टाफ वाइस एडमिरल तरुण सोबती तथा अन्य सदस्य देशों के वरिष्ठ सैन्य अधिकारी उपस्थित थे। भारतीय नौसेना के कमोडोर मिलिंद एम. मोकाशी, शौर्य चक्र, ने इतालवी नौसेना के निवर्तमान कमांडर से सीटीएफ 154 की कमान औपचारिक रूप से संभाली। सीटीएफ 154 विशेष रूप से सीएमएफ के सदस्य देशों के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पर केंद्रित है। यह क्षेत्र में भारत की पेशेवर विशेषज्ञता, संचालन अनुभव और 47 सदस्य देशों के बीच एक पसंदीदा सुरक्षा साझेदार के रूप में उसकी भूमिका पर बढ़ते विश्वास को दर्शाता है। सीटीएफ 154 की स्थापना मई 2023 में की गई थी और इसका उद्देश्य पश्चिम एशिया और आगे के क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से समुद्री सुरक्षा को सुदृढ़ करना है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पांच मुख्य स्तंभों समुद्री क्षेत्र जागरूकता, समुद्री कानून , समुद्री अवरोधन अभियान, समुद्री बचाव और सहायता, तथा नेतृत्व विकास पर आधारित है। यह टास्क फोर्स नियमित समुद्री सुरक्षा उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम, कम्पास रोज और नॉर्दर्न/सदर्न रेडीनेस जैसे अभ्यास, तथा साझेदार देशों की परिचालन क्षमताओं को सुदृढ़ करने के लिए संपर्क कार्यक्रम आयोजित करती है, जिससे अवैध तस्करी, समुद्री डकैती और अनियमित प्रवासन जैसे साझा खतरों का मुकाबला किया जा सके। सीटीएफ 154 का संचालन सीएमएफ की अन्य टास्क फोर्स- सीटीएफ 150 (समुद्री सुरक्षा), सीटीएफ 151 (समुद्री डकैती निरोध), सीटीएफ 152 (अरब खाड़ी में समुद्री सुरक्षा) और सीटीएफ 153 (लाल सागर में समुद्री सुरक्षा)-के साथ किया जाता है।

वंदे मातरम पर सरकार का आदेश आजादी पर हमलाः मदनी

- **जमीयत उलेमा-ए-हिंद के प्रमुख ने कहाः ये मनमाना और एकतरफा**
- **वंदे मातरम के सभी छंद गाने के विरोध में संगठन**
- **पंजाब में भी फैसले का विरोध, दल खालसा ने सिख पहचान के खिलाफ बताया, हिंदुत्व विचारधारा को सिख समुदाय पर थोपने का प्रयास**

नई दिल्ली। मुस्लिम संगठन जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने वंदे मातरम के सभी छंद गाने का विरोध किया है। संगठन ने कहा कि सरकार का ये आदेश हमारी धार्मिक आजादी पर हमला है। संगठन ने सरकार के आदेश को एकतरफा और मनमाना बताया। जमीयत के प्रेसिडेंट मौलाना अरशद मदनी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि मुसलमान किसी को भी वंदे मातरम गाने या बजाने से नहीं रोकते, लेकिन गाने के कुछ छंद मातृभूमि को एक देवता के रूप में दिखाते हैं।

ये हमारी मान्यताओं के खिलाफ हैं। केंद्र सरकार ने बुधवार को एक आदेश जारी कर राष्ट्रगीत वंदे मातरम को राष्ट्रगान जन गण मन की तरह ही सम्मान देना अनिवार्य कर दिया है। आदेश के मुताबिक राष्ट्रगीत के सभी 6 अंतरे गाए जाएंगे, जिनकी कुल अवधि 3 मिनट 10 सेकंड है। अब तक मूल गीत के पहले दो अंतरे ही गाए जाते थे। मदनी ने कहा कि एक मुसलमान सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करता है, इसलिए उसे यह गाना गाने के लिए मजबूर करना संविधान के आर्टिकल 25 और सुप्रीम कोर्ट के कई फैसलों का साफ उल्लंघन है। इस गाने को जरूरी बनाना और इसे नागरिकों पर थोपने की कोशिश देशभक्ति का इजहार नहीं है, बल्कि यह चुनावी राजनीति, एक सांप्रदायिक एजेंडा और बुनियादी मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने की कोशिश है। देश के लिए प्यार का असली पैमाना नारों में नहीं, बल्कि किरदार और कुर्बानी में है। इसकी शानदार मिसालें मुसलमानों और जमीयत उलेमा-ए-हिंद के ऐतिहासिक संघर्ष में खास तौर पर देखी जा सकती हैं। ऐसे फैसले देश की शांति, एकता और डेमोक्रेटिक मूल्यों को कमजोर करते हैं और संविधान की भावना को कमजोर करते हैं। वंदे मातरम को जरूरी बनाना संविधान, धार्मिक आजादी और डेमोक्रेटिक उसूलों पर साफ हमला है। वंदे मातरम अनिवार्य -शेष पृष्ठ दो पर

संक्षिप्त समाचार

महिला डाक्टर से अभद्र व्यवहार पर एडिशनल प्रोफेसर निलंबित

लखनऊ। लखनऊ के किग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) में एक बार फिर महिला रेजिडेंट डाक्टर से कथित अभद्रता का मामला सामने आया है। बाल रोग विभाग के एक एडिशनल प्रोफेसर पर जूनियर रेजिडेंट डाक्टर ने अनुचित व्यवहार और मोबाइल पर आपत्तिजनक संदेश भेजने के आरोप लगाए हैं। शिकायत मिलते ही विश्वविद्यालय प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी चिकित्सक को निलंबित कर दिया है। इस बाबत पीड़िता ने परिजनों के साथ संस्थान प्रशासन को लिखित शिकायत दी थी। इसके बाद 11 फरवरी को कुलपति डा. सोनिया नित्यानंद के निर्देश पर सात सदस्ईय आंतरिक शिकायत समिति (विशाखा कमेटी) का गठन किया गया। समिति ने पीड़िता और आरोपी दोनों के बयान दर्ज किए। प्रारंभिक जांच रिपोर्ट में आरोप प्रथम दृष्टया सही पाए जाने पर आरोपी एडिशनल प्रोफेसर को निलंबित कर डीन मेडिसिन कार्यालय से संबद्ध कर दिया गया है।

महर्षि दयानंद सरस्वती राष्ट्र-जागरण के अग्रदूत: योगी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वैदिक चेतना के महान उद्घोषक, आध्यात्मिक चितक और आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती की जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री ने कहा कि असीम ज्ञान और उच्च गुणों से संपन्न स्वामी दयानंद सरस्वती का संपूर्ण जीवन समाज-उत्थान, राष्ट्र-जागरण और मानव-कल्याण के पावन कार्यों को समर्पित रहा। उन्होंने भारतीय समाज को कुरीतियों से मुक्त करने, वेदों की ओर लौटने और आत्मगौरव की भावना जगाने का आह्वान किया।

चारु गुप्ता को मिला अंतर्राष्ट्रीय सम्मान कुमारस्वामी पुस्तक पुरस्कार

नई दिल्ली, वार्ता

■ सम्मान के साथ एक हजार डॉलर भी मिलेंगे

दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की वरिष्ठ प्रोफेसर प्रोफेसर चारु गुप्ता को प्रतिष्ठित 'आनंद केंटिश कुमारस्वामी पुस्तक पुरस्कार' (दक्षिण एशिया) से सम्मानित किया गया है। इस सम्मान के साथ उन्हें एक हजार डॉलर (करीब 91 हजार रुपए) भी मिलेंगे।

प्रोफेसर गुप्ता को यह पुरस्कार उनकी नई पुस्तक 'हिंदी हिदू हिस्ट्रीज: कॉस्ट, आयुर्वेद, ट्रेवल एंड कम्युनिज्म इन अर्ली ट्वेटिन्थ सेंचुरी इंडिया' के लिए 'एसोसिएशन फॉर एशियन स्टडीज (एएएस) ने दिया है। आनंद केंटिश कुमारस्वामी पुरस्कार दक्षिण एशिया पर विशिष्ट और मौलिक विद्वतापूर्ण कार्यों के लिए दिया जाता है। कला इतिहासकार और सांस्कृतिक चितक आनंद के कुमारस्वामी के नाम पर स्थापित यह पुरस्कार उन पुस्तकों को दिया जाता है, जो दक्षिण एशिया के इतिहास, संस्कृति और समाज के अध्ययन में महत्वपूर्ण और स्थाई योगदान देता हैं। इसे दक्षिण एशियाई अध्ययन के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित मान्यता है। यह पुस्तक 20वीं सदी की शुरुआत में उत्तर भारत की उत्तर भारत में आत्मकथाओं और 'प्रिट' संस्कृति के जरिए हिदू जीवन के विभिन्न पहलुओं की पड़ताल करती है। इसमें जाति, आयुर्वेद, यात्रा वृत्तांत और साम्यवाद का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। यह दिखाती है कि उस परिवर्तनकारी दौर में जाति, लिग, राष्ट्र और हिंदू पहचान को लेकर विभिन्न लोकभाषाई दृष्टियां किस तरह से उभर रही थीं। चारु की अन्य चर्चित पुस्तकों में सेक्सुअलिटी, ऑब्सिनिटी, कम्युनिटी एंड द जेंडर ऑफ कॉस्ट तथा 'जाति और लिग: दलित, सवर्ण और हिदी प्रिट संस्कृति हैं। एएएस इस वर्ष की पुरस्कार प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा करते हुए कहा कि सभी सम्मानित व्यक्तियों को बधाई।

विधान परिषद में गूंजा शहरों में अतिक्रमण और जाम का मुद्दा

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ लोक महत्व का अविलंबनीय विषय बताते हुए विपक्ष ने सरकार से कार्रवाई की मांग उठाई

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधान परिषद में एमएलसी विजय बहादुर पाठक ने नियम 110 के अंतर्गत शहरों में बढ़ते अतिक्रमण और यातायात जाम की समस्या का मुद्दा उठाया। उन्होंने इसे लोक महत्व का अविलंबनीय विषय बताते हुए सरकार से प्रभावी कार्रवाई की मांग की।

सभापति ने विषय को गंभीर मानते हुए आवश्यक कार्यवाही के निर्देशों के साथ सरकार को भेज दिया। सदन में कहा गया कि सरकार की नीतियों के कारण प्रदेश में तेजी से शहरी विकास हो रहा है और स्वच्छता रैंकिग में भी कई जनपदों ने स्थान बनाया है। हालांकि बढ़ते शहरीकरण के साथ अतिक्रमण की समस्या भी विकराल होती जा रही है, जिससे शहरों में जाम की स्थिति आम हो गई है। इससे आम नागरिकों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। सदस्य ने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा शहरों को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए मॉडल वेंडिग जोन बनाने के निर्देश दिए गए हैं और कुछ स्थानों पर काम भी हुआ है, लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी है। इसके लिए स्थानीय निकायों की लापरवाही को जिम्मेदार ठहराया गया। गाजियाबाद, मुरादाबाद, वाराणसी, गोरखपुर, कानपुर, बरेली, अलीगढ़ और मेरठ सहित अधिकांश नगर निगमों के प्रमुख चौराहों पर अतिक्रमण की समस्या बनी हुई है। राजधानी लखनऊ में भी विभूति खंड क्षेत्र को छोड़कर अन्य इलाकों में स्थिति चिंताजनक बताई गई। प्रदेश में नगर निगम अधिनियम के तहत गठित टाउन वेंडिग कमेटी (टीवीसी) की नियमित बैठकें नहीं होने पर भी सवाल उठाए गए। बताया गया कि लखनऊ नगर निगम में लगभग दस महीनों से टीवीसी की बैठक नहीं हुई है, जबकि नियमों के अनुसार हर माह बैठक होना अनिवार्य है। इस समिति में पार्षदों, रेहड़ी-पटरी दुकानदारों, बड़े प्रतिष्ठानों, पुलिस, ट्रैफिक पुलिस, लोक निर्माण विभाग, विकास प्राधिकरण, विद्युत विभाग, आवास विकास और डूडा के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। सदन में मांग की गई कि टाउन वेंडिग कमेटियों को सक्रिय कर नियमित बैठकें सुनिश्चित की जाएं, ताकि शहरों को अतिक्रमण से मुक्त कर यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाया जा सके और नागरिकों को राहत मिल सके।

उप्र विधानसभा में अतुल प्रधान ने नियम 300 के तहत मुद्दा उठाया

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दुरुपयोग पर जताई चिंता

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ सपा विधायक ने कहा-एआई एक खतरनाक तकनीक साबित हो सकती है, जिसका दुरुपयोग संभव
■ सपा सदस्य सचिन यादव ने विधानसभा में उठाया ट्रांसजेंडर समुदाय का मुद्दा, मंत्री ने दी सफाई

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा के बजट सत्र के चौथे दिन गुरुवार को सदन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को लेकर महत्वपूर्ण चर्चा हुई। शून्य प्रहर के दौरान समाजवादी पार्टी के सदस्य अतुल प्रधान ने नियम 300 के तहत यह मुद्दा उठाया और सरकार से संज्ञान लेने की मांग की।

अतुल प्रधान ने कहा कि एआई एक खतरनाक तकनीक साबित हो सकती है, जिसका दुरुपयोग संभव है। उन्होंने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि एक एजेंसी के कुछ लोग उनके पास आए थे और दावा किया था कि वे उनके बिना मौजूद हुए ही उनकी आवाज और चेहरे का हूबहू इस्तेमाल कर जनता तक उनका भाषण पहुंचा सकते हैं। उन्होंने कहा कि यदि उनकी आवाज और चेहरा सकारात्मक संदर्भ में प्रसारित किए जा सकते हैं, तो उनका गलत इस्तेमाल भी संभव है। इस संबंध में उन्होंने अपने जिले के एसएसपी से शिकायत की, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने इस मुद्दे को गंभीर बताते हुए कहा कि एआई का प्रभाव विशेष रूप से राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों पर अधिक पड़ सकता है। उन्होंने संसदीय कार्य मंत्री से इस पर ध्यान देने का आग्रह किया और शिकायतों पर कठोर कार्रवाई की आवश्यकता जताई। इस पर संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि केंद्र सरकार ने एआई को लेकर कानून बनाया है। इस विषय पर विधि विशेषज्ञों से चर्चा करने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। इससे पहले प्रदेश सरकार के आईटी मंत्री सुनील शर्मा ने भी सरकार का पक्ष सदन में रखा। सदन में हुई इस चर्चा ने एआई जैसी उभरती तकनीक के दुरुपयोग और उससे जुड़े कानूनी पहलुओं पर गंभीर विमर्श की आवश्यकता को रेखांकित किया। वहीं राज्य विस में गुरुवार को समाजवादी पार्टी के विधायक सचिन यादव द्वारा ट्रांसजेंडर पर उठाए गए प्रश्न के जवाब में समाज कल्याण मंत्री असीम अरुण ने कहा कि यह सदन का एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक क्षण है, जब सबसे पिछड़े और हाशिए पर रहने वाले समुदाय की समस्याओं पर गंभीर चर्चा हो रही है।

सपा विधायक रागिनी के सवालों पर सदन में गरमाया माहौल, मंत्री के जवाब पर हंगामा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा में गुरुवार को उस समय माहौल गरमा गया जब समाजवादी पार्टी की विधायक रागिनी सोनकर ने मंत्री नंद गोपाल गुप्ता 'नंदी' से निवेश और डिफेंस कॉरिडोर को लेकर तीखे सवाल पूछे। रागिनी सोनकर ने पहला सवाल उठाते हुए कहा कि प्रदेश में लाखों करोड़ रुपए के एमओयू साइन किए गए, लेकिन धरातल पर सिर्फ 9 प्रतिशत ही परियोजनाएं क्यों दिख रही हैं? दूसरा सवाल डिफेंस कॉरिडोर को लेकर था। उन्होंने पूछा कि चित्रकूट, झांसी, अलीगढ़ और आगरा जैसे जिलों में अब तक प्रगति शून्य क्यों है। तीसरे सवाल में उन्होंने भाजपा के फंड को लेकर टिप्पणी करते हुए कहा कि वर्ष 2014 में पार्टी के खाते में 800 करोड़ रुपए थे, जो अब 16 हजार करोड़ रुपए कैसे हो गए, जबकि अर्थव्यवस्था कमजोर बताई जा रही है। रागिनी के सवालों के जवाब में मंत्री नंद गोपाल गुप्ता खड़े हुए और उनके सवालों को पढ़ने लगे। इस पर विधानसभा अध्यक्ष ने उन्हें टोका। इसके बाद मंत्री विपक्ष पर निशाना साधते हुए सपा सरकार के कार्यकाल का जिक्र करने लगे।

विदेशी दबाव में आकर समझौते देशहित के खिलाफ: खड़गे

नई दिल्ली, वार्ता

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने केंद्र सरकार के खिलाफ आक्रामक रुख अपनाते हुए कहा है कि विदेशी दबाव में आकर किए गए समझौते देशहित के खिलाफ हैं और सरकार की नीतियां करोड़ों मेहनतकश किसानों, मजदूरों और श्रमिकों के भविष्य को खतरे में डाल रही हैं।

खड़गे ने नए श्रम कानूनों और मनरेगा को कमजोर करने के आरोपों को लेकर मोदी सरकार की आलोचना करते हुए गुरुवार को कहा कि देशभर में ट्रेड यूनियन, किसान और मजदूर सरकार की नीतियों के खिलाफ सड़कों पर उतरकर विरोध कर रहे हैं। सरकार की नीतियां करोड़ों मेहनतकश किसानों, मजदूरों और श्रमिकों के भविष्य को खतरे में डाल रही हैं। उन्होंने कहा कि विदेशी दबाव में आकर किए गए समझौते देशहित के खिलाफ हैं और इससे आम नागरिकों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। छोटे व्यापारी, कामगार और आम जनमानस इस कथित जन-विरोधी डील का सबसे ज्यादा विरोध कर रहे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष ने यह भी कहा कि पार्टी इस मुद्दे पर सड़क से लेकर संसद तक संघर्ष जारी रखेगी। उन्होंने सरकार से किसानों और मजदूरों के हितों की रक्षा करने की मांग भी की।

काम कोर्स
उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज़ पावर, शीघ्रपतन, नपुंसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

सेंसेक्स 83674.92
निफ्टी 25807.20

सोना 157550
प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार

चांदी रु. 257567
प्रति किलो

आईटी सेक्टर में जबरदस्त गिरावट, सेंसेक्स 559 अंक लुढ़का

मुंबई, वार्ता

सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) कंपनियों में जारी बिकवाली के दबाव में गुरुवार को घरेलू शेयर बाजारों में गिरावट देखी गई जिससे बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 558.72 अंक (0.66 प्रतिशत) टूटकर 83,674.92 अंक पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी-50 सूचकांक भी 146.65 अंक नीचे 25,807.20 अंक पर रहा।

सेंसेक्स में शामिल चारों आईटी कंपनियों टेक महिंद्रा, इंफोसिस, टीसीएस और एचसीएल टेक्नोलॉजीज के शेयरों में पांच से छह प्रतिशत के आसपास गिरावट रही। चौतरफा गिरावट के बीच निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 0.45 प्रतिशत और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.64 प्रतिशत नीचे रहा। निफ्टी आईटी सूचकांक 5.51 प्रतिशत लुढ़क गया। तेल एवं गैस, रसायन, रियलटी, मीडिया, एफएमसीजी, बैंकिग, फार्मा और ऑटो में भी गिरावट रही। टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद समूह में तेजी रही। एनएसई में शामिल 3,256 कंपनियों के शेयरों में से 2,007 के शेयर गिरावट में रहे जबकि 1.151 में तेजी रही। अन्य 98 कंपनियों के शेयर अंततः अपरिवर्तित रहे। सेंसेक्स की 30 कंपनियों में से 17 के शेयर लाल निशान में बंद हुए। टेक महिंद्रा का शेयर 5.99 प्रतिशत टूट गया। इंफोसिस में 5.79 प्रतिशत, टीसीएस में 5.41, एचसीएल टेक्नोलॉजीज में 4.84, महिंद्रा एंड महिंद्रा में 2.23, हिंदुस्तान यूनीलिवर में 2.13 और रिलायंस इंडस्ट्रीज में 1.27 प्रतिशत की गिरावट रही। इटरनल, कोटक महिंद्रा बैंक, एचडीएफसी बैंक, अडानी पोर्ट्स, मारुति सुजुकी, एक्सिस बैंक और इंडिगो के शेयर भी लाल निशान में रहे। बजाज फाइनेंस का शेयर 3.17 प्रतिशत चढ़ा। आईसीआईसीआई बैंक का शेयर 1.73 फीसदी, ट्रेंट का 1.52 और बीईएल का 1.43 प्रतिशत की बढ़त में बंद हुआ।

सर्राफा बाजार में दिखी गिरावट, चांदी 2000 तक टूटी, सोना 600 रुपये सस्ता

नई दिल्ली। सोना-चांदी की कीमतों में गुरुवार को गिरावट देखने को मिली। चांदी 2040 रुपये सस्ती होकर 2.61 लाख रुपये प्रति किलो पर आ गई। वहीं सोना 630 रुपये गिरकर 1.58 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। शुरुआती कारोबार में बुलियन की दरों के अनुसार सोना 660 रुपये सस्ता होकर 1.58 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। वहीं चांदी 1200 रुपये गिरकर 2.62 लाख प्रति किलो पर आ गई। एमसीएक्स पर गुरुवार को चांदी की कीमतें चार प्रतिशत की तेजी के साथ 2.62 लाख रुपये प्रति किलो पर पहुंच गई। वहीं सोना की कीमतों में 1,957 रुपये का उछाल देखने को मिला। सोना 1.25 प्रतिशत चढ़कर 1.58 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। पिछले दिन बुधवार को चांदी की कीमतों में जोरदार तेजी दर्ज की गई और यह 4,000 रुपये उछलकर 2.68 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर पहुंच गई थी। वहीं, सोने के भाव में भी मजबूती रही और यह 1.61 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के पार निकल गया। स्पाट गोल्ड की कीमत मामूली गिरावट के साथ 5,080 डालर प्रति औंस पर आ गई, जबकि स्पाट सिल्वर 2 प्रतिशत लुढ़ककर 82.2 डालर प्रति औंस पर पहुंच गया। अमेरिकी श्रम बाजार के मजबूत आंकड़ों के बाद गुरुवार को एशियाई कारोबार के दौरान सोना और चांदी की कीमतों में गिरावट दर्ज की गई।

चावल, गेहूं, दालें नरम, चीनी मजबूत, खाद्य तेलों में घट-बढ़

नई दिल्ली, वार्ता

घरेलू थोक जिंस बाजारों में गुरुवार को चावल के औसत भाव घट गए। चावल के साथ गेहूं और दालों में भी गिरावट रही। चीनी के दाम बढ़ गए, जबकि खाद्य तेलों की कीमतों में उतार-चढ़ाव रहा। औसत दर्जे के चावल की औसत कीमत 14 रुपये घटकर 3,836 रुपये प्रति क्विंटल पर रही। गेहूं की कीमत 18 रुपये फिसलकर 2,847 रुपये प्रति क्विंटल पर आ गई। आटा भी छह रुपये महंगा हुआ।

दाल-दलहनों में नरमी रही। उड़द दाल औसतन 20 रुपये प्रति क्विंटल सस्ती हुई। चना दाल की कीमत 15 रुपये और मूंग दाल की दो रुपये प्रति क्विंटल घट गई। तुअर दाल और मसूर दाल में टिकाव रहा। विदेशों में मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का अप्रैल वायदा 24 रिंगिट टूटकर 4,037 रिंगिट प्रति टन रह गया। अमेरिकी सोया तेल का मार्च वायदा 0.63 प्रतिशत की मजबूती के साथ 57.41 सेंट प्रति पौंड बोला गया। स्थानीय बाजारों में मूंगफली तेल की औसत कीमत 33 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गई। सरसों तेल 99 रुपये और सूरजमुखी तेल 77 रुपये सस्ता हुआ। पाम ऑयल की कीमत 60 रुपये और वनस्पति की 51 रुपये घट गई। सोया तेल में 34 रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट रही। मीठे के बाजार में आज गुड़ के औसत भाव 17 रुपये प्रति क्विंटल उतर गए। वहीं, चीनी तीन रुपये महंगी हुई।

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काजीजादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

Cipzer
— HEALTH WITH CARE —
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
भूख की कमी, बदहज़मी जॉन्डिस, फेटी लीवर, एल्कॉहलिक लिवर डिज़ीज़ आदि से लड़ने की ताकत देता है ताकि आप रहें फिट एण्ड एक्टिव
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

रामपुर में वकील की हत्या के विरोध में साथी वकीलों ने किया कार्य बहिष्कार

लखनऊ। रामपुर में बुधवार को एक अधिवक्ता की गोली मारकर हत्या करने के विरोध में उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में गुरुवार को वकीलों ने कार्य बहिष्कार किया। देवरिया में हत्या के विरोध में दिवानी और कलेक्ट्रेट कचहरी के दर्जनों अधिवक्ता कार्य बहिष्कार कर परिसर में शासन-प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किए। डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष मनोज मिश्रा और कलेक्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रीतम मिश्रा बताया कि रामपुर एक अधिवक्ता फारूख अहमद खान की निर्मम हत्या के विरोध में यह प्रदर्शन किया गया है।

बार एसोसिएशन के दोनों अध्यक्षों ने मांग किया है कि वकील के हत्यारों तत्काल गिरफ्तार कर मामले को एफटीसी कोर्ट में लगाकर तत्काल फांसी दिया जाय। रायबरेली की विभिन्न बार एसोसिएशन ने अधिवक्ता की गोली मारकर की गई हत्या का विरोध करते हुए प्रस्ताव पारित कर न्यायिक कार्यो से विरक्त रहने की घोषणा करते हुए घटना की कड़े शब्दों में निदा की और अधिवक्ताओं की सुरक्षा के लिए एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट को सरकार द्वारा लागू कराने की भी मांग की। गौरतलब है कि रामपुर में बुधवार दोपहर अधिवक्ता फारूक अहमद खां (50) की एक लिपिक ने दिनदहाड़े अपनी लाइसेंसी रिवाल्वर गोली मारकर हत्या कर दी थी।

प्रथम पृष्ठ के शेष...

वंदे मातरम... किए जाने पर ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने कहा कि सरकार का यह फैसला गैर कानूनी है। धार्मिक आजादी, सेक्युलर मूल्यों के खिलाफ है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने मांग कि है कि सरकार इस नोटिफिकेशन को वापस ले। वापस नहीं लिया, तो पर्सनल लॉ बोर्ड इस फैसले को कोर्ट में चुनौती देगा। सिख संगठन दल खालसा ने वंदे मातरम अनिवार्य किए जाने के फैसले पर कड़ा ऐतराज जताया है। उन्होंने इसे सिख पहचान व धार्मिक भावनाओं के खिलाफ बताया है। दल खालसा के नेता कंवरपाल सिंह बिट्टू ने बयान जारी करते हुए कहा कि यह फैसला भारतीयता के नाम पर हिंदुत्व विचारधारा को सिख समुदाय पर थोपने का प्रयास है। सिख होने के नाते हम इसे स्वीकार नहीं करेंगे। यह निर्णय सिख समुदाय की भावनाओं और उनकी धार्मिक पहचान के विपरीत है।

गुरुकुल छात्रा ने 5,555 भिन्न ॐ लिखकर बनाया विश्व रिकॉर्ड

वाराणसी। धर्म और अध्यात्म की नगरी काशी के तुलसीपुर महमूरगंज स्थित पाणिनि कन्या महाविद्यालय की कक्षा 10वीं की छात्रा कुमारी स्वर्णा निगम ने कला और आध्यात्मिक क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। कुमारी स्वर्णा ने 5,555 अलग-अलग प्रकार के 'ॐ' (ओंकार) की विशिष्ट पेंटिंग्स बनाकर एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। उनकी इस अद्वितीय कला-साधना को 'यूरेशिया वर्ल्ड रिकॉर्ड' में आधिकारिक रूप से दर्ज किया गया है। यह उपलब्धि न केवल महाविद्यालय, बल्कि पूरी काशी और देश के लिए गौरव का विषय है। गुरुवार को पाणिनि कन्या महाविद्यालय परिसर में भव्य प्रदर्शनी एवं विमोचन समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास के मुख्य कार्यपालक अधिकारी विश्व भूषण मिश्र उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में वाराणसी संसदीय कार्यालय के समन्वयक शिव शरण पाठक, विश्व वैदिक न्यास के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सिंह, वरिष्ठ पर्यावरणविद् अनिल कुमार सिंह सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

नए श्रमिक कानून कामगार विरोधी हैं: विपक्ष

नई दिल्ली, वार्ता

■ कहा: 2020 में तीन श्रम संहिताएं जल्दबाजी में पारित की करने के बाद श्रमिकों के हितों की तिलांजलि दी गई थी

लोकसभा में गुरुवार को विपक्षी सदस्यों ने औद्योगिक संबंध संहिता (संशोधन) विधेयक, 2026 को श्रमिकों के हितों के विरुद्ध करार देते हुए कहा कि इस कानून के लागू होने से कामगारों के अधिकारों में और ह्रास होगा।

विधेयक को विचार करने तथा पारित किए जाने के लिए सदन में प्रस्तुत किए जाने के बाद इस पर चर्चा की शुरुआत करते हुए कांग्रेस के के. सुरेश ने कहा कि देश भर के श्रमिक अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जब गुरुवार को देशव्यापी हड़ताल कर रहे हैं, तब यह संशोधन विधेयक लाया गया है। उन्होंने कहा कि 2020 में पारित की गई तीन श्रम संहिताएं जल्दबाजी में पारित की गई थीं, जिनमें श्रमिकों के हितों की तिलांजलि दी गई थी। अब इस विधेयक के जरिए श्रमिकों के अधिकारों को और कम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 300 तक श्रमिकों-कर्मचारियों वाली कंपनियां, फैक्ट्री और कारखाने सरकार की अनुमति के बगैर बंद किए जा सकेंगे।

सुरेश ने कहा कि 90 प्रतिशत कार्यबल असंगठित क्षेत्र में काम करता है, उसकी पेंशन, रोजगार, स्वास्थ्य सुरक्षा का ध्यान कौन रखेगा। महिलाओं की भागीदारी कार्यबल में कम हो रही है। आज कारपोरेट सेक्टर को काफी बढ़ावा दिया जा रहा है। कारपोरेट की मांगें मान ली जाती हैं। श्रमिकों की मांगें ठुकरा दी जा रही हैं। मोदी सरकार श्रमिकों की असुरक्षा को संस्थागत रूप दे रही है। उन्होंने कहा कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार श्रमिकों के हितों में काम करती थी। तत्कालीन सरकार महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून (मनरेगा) लाई थी। संप्रग सरकार सामाजिक न्याय के लिए काम करती थी। आज सार्वजनिक उपक्रम कमजोर हो रहे हैं, उनका निजीकरण किया जा रहा है।

अनुबंध पर अधिक कर्मचारी लाए जा रहे हैं। यह विधेयक रोजगार सुरक्षा को क्षति पहुंचाता है। भारतीय जनता पार्टी के दर्शन सिंह चौधरी ने कहा कि इस विधेयक में पहले के श्रमिकों के जुड़े कानूनों को समेकित करके नई श्रम संहिताएंलाई गई हैं। इस विधेयक को प्रगतिशील सुधार के रूप में जाना जाना चाहिए। सरकार की मंशा श्रमिक-मालिक के बीच तालमेल के जरिए उद्योगों में तरक्की लाना है। सरकार गैरकानूनी तालाबंदी पर रोक लगाना चाहती है। सरकार के इन कदमों से अर्थव्यवस्था में सुधार लाना है। इस सरकार की ओर से लाई गई श्रमिक संहिताएंपूरे देश में लागू होंगी। इनके लागू होने से औद्योगिक विवाद सुलझाना जयादा सरल हो जाएगा। समाजवादी पार्टी के सांसद अफजल अंसारी ने कहा कि 2020 में जब श्रम संहिताएंलागू की गई थीं, तो बड़े-बड़े दावे किए गए थे और अब उनमें संशोधन करना पड़ रहा है। सरकार जब एक मजबूत कानून नहीं बना सकती तो यह श्रमिकों के हितों की बात करेगी, ऐसा सोचना निरर्थक है। उन्होंने कहा कि अब श्रमिकों की छंटनी को आसान कर दिया गया है। ऐसी स्थिति में सरकार के प्रति श्रमिकों में घोर निराशा है। उद्योगों को ढील दी जा रही है। तीन सौ कर्मचारियों वाली कंपनियों- कारखानों में जब चाहे तब कामगारों को नौकरी से निकाला जा सकता है। सरकार को मजदूरों के हितों के बारे में सोचना चाहिए।

ग्रीष्मकालीन सीजन को देखते हुए तैयारी तेज करें ऊर्जा विभाग: सीएम

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में पिटकुल की समीक्षा बैठक, परियोजनाओं की प्रगति पर विस्तृत मंथन

■ विद्युत व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने पर मुख्यमंत्री का सख्त रुख, वितरण लॉस व विद्युत चोरी पर जीरो टॉलरेंस

■ ऊर्जा परियोजनाओं को मार्च तक पूर्ण औपचारिकता व अप्रैल में शुभारंभ के निर्देश

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आगामी ग्रीष्मकालीन सीजन को देखते हुए यूजेवीएनएल, पिटकुल एवं यूपीसीएल को अभी से समस्त तैयारियां सुनिश्चित करने, सभी औपचारिकताओं को मार्च तक पूर्ण कर अप्रैल तक परियोजनाओं के शुभारंभ के लिए प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए।

मुख्यमंत्री धामी की अध्यक्षता में सचिवालय सभागार में पावर ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन ऑफ उत्तराखंड लिमिटेड (पिटकुल) की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में गत वर्षों में पूर्ण की गई महत्वपूर्ण परियोजनाओं की उपलब्धियों, एडीबी पोषित एवं नॉन-एडीबी पोषित गतिमान परियोजनाओं, मुख्यमंत्री द्वारा शिलान्यास की गई परियोजनाओं, मुख्यमंत्री घोषणा से संबंधित कार्यों तथा आरईसी/पीएफसी पोषित योजनाओं की स्थिति की विस्तृत समीक्षा की गई।

इसके साथ ही वर्ष 2025-26 में अतिरिक्त अंश पूंजी (राज्य सेक्टर एवं एसएएससीआई), प्रस्तावित परियोजनाओं के लिए वर्षवार अंश पूंजी की आवश्यकता, पिटकुल के रिसोर्स एडीक्वेसी प्लान/मास्टर प्लान, आपदा मद में क्षतिपूर्ति के लिए धनराशि एवं मानव शक्ति की आवश्यकता जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर गहन चर्चा की गई। मुख्यमंत्री ने विद्युत वितरण लॉस को न्यूनतम करने, विद्युत चोरी पर सख्ती से रोक लगाने तथा वितरण लॉस में लापरवाही बरतने वालों पर कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए। सीएसआर मद में प्राप्त धनरा. शि के लिए पृथक खाता खोलकर उसका अधिकतम एवं बहु-रचनात्मक उपयोग सुनिश्चित करने को कहा गया। विभिन्न जनपदों में एडीबी पोषित उपकेंद्रों से संबंधित प्रकरणों का त्वरित निस्तारण कर कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए।बैठक में मुख्य सचिव आनंद बर्धन, प्रमुख सचिव आर के सुधांशु व आर मीनाक्षी सुंदरम, सचिव पंकज पांडेय, सी रवि शंकर, डॉ. बी.वी.आर.सी. पुरुषोत्तम, विनय शंकर पाण्डेय, प्रबंध निद. ेशक उत्तराखंड जल विद्युत निगम डॉ. संदीप सिंघल, प्रबंध निदेशक यूपीसीएल अनिल कुमार सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

एडीबी पोषित द्वितीय चरण के अंतर्गत बहादराबाद (हरिद्वार), कोटद्वार (पौड़ी), भिकियासैंण (अल्मोड़ा), कपकोट (बागेश्वर) एवं नंदप्रयाग (चमोली) में भूमि आवंटन एवं स्थानांतरण की प्रक्रिया एक सप्ताह में पूर्ण करने के लिए संबंधित जिला अधिकारियों को निर्देशित किया गया। मुख्यमंत्री घोषणाओं के अंतर्गत शिलान्यास की गई सभी परियोजनाओं को तत्काल प्रभाव से पूर्ण करने के लिए निरंतर निगरानी एवं प्रभावी प्रगति सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया।

एडीबी एवं नॉन-एडीबी पोषित परियोजनाओं में तीव्र प्रगति: वर्तमान में एशियाई विकास बैंक पोषित 220 एवं 120 केवी उप संस्थानों की परियोजनाएं मंगलौर, सेलाकुई, आराघर, खटीमा, धौलाखेड़ा, लोहाघाट एवं सरवरखेड़ा में गतिमान हैं।

इसके अतिरिक्त नॉन-एडीबी पोषित 400, 220 एवं 132 केवी उप संस्थानों की परियोजनाएं पीपलकोटी, घनसाली, बनबसा, रानीहाट, ऋषिकेश, अल्ट्राटेक एवं सिमली में प्रगति पर हैं।

पिटकुल एमडी ध्यानी ने दी चार वर्ष की प्रमुख उपलधियों की जानकारी

पिटकुल के प्रबंध निदेशक पीसी. ध्यानी ने विगत चार वर्षों की प्रमुख उपलब्धियों की जानकारी देते हुए बताया कि आरईसी द्वारा पिटकुल की क्रेडिट रेटिंग को ।+ से ।++ किए जाने से परियोजना क्रियान्वयन के लिए प्राप्त ऋणों पर 0.5 प्रतिशत अतिरिक्त छूट मिलेगी, जिसका सीधा लाभ प्रदेश के विद्युत उपभोक्ताओं को कम टैरिफ के रूप में प्राप्त होगा। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पावर लाइन पत्रिका द्वारा पिटकुल को "पावर लाइन ट्रांस टेक इंडिया अवार्ड-2025" से सम्मानित किया गया है, जो ऊर्जा क्षेत्र के पारेषण क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं वित्तीय वर्ष 2024-25 में न्यूनतम लाइन लॉस के लिए प्रदान किया गया। कुशल प्रबंधन एवं सतत लाभ वृद्धि के परिणामस्वरूप पिटकुल द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 में अब तक का सर्वाधिक 1243 करोड़ का लाभांश उत्तराखंड सरकार को दिया गया है। विगत चार वर्षों में कुल 22 परियोजनाएं पूर्ण की गई हैं, जिनमें से 12 परियोजनाएं क्षमता वृद्धि से संबंधित हैं।

स्विफ्ट स्कूल में छात्रों को मिलेगा सीखने का बेहतर अवसर: डॉ. रावत

■ राजकीय प्राथमिक विद्यालय, नौगाँव में शुरू हुआ स्विफ्ट स्कूल का संचालन

शाह टाइम्स संवाददाता

पौड़ी/ श्रीनगर। पौड़ी गढ़वाल जनपद के खिर्सू विकासखंड स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय, नौगाँव में 12 फरवरी 2026 को स्विफ्ट स्कूल मॉडल का औपचारिक शुभारंभ किया गया। इस पहल के अंतर्गत विद्यालय को एक समग्र डिजिटल अधिगम संरचना से जोड़ा गया है, जिसमें स्विफ्ट पाल लैब की स्थापना की गई है तथा घर पर सीखने के लिए स्विफ्ट चैट ऐप के माध्यम से शैक्षणिक सहयोग की व्यवस्था की गई है।

यह पहल उत्तराखण्ड सरकार के सहयोग से कन्वे जीनियस फाउंडेशन की साझेदारी में साकार हो रही है। राज्य में सीखने के परिणामों को सुदृढ़ करने और विद्यालय स्तर पर शिक्षण-पद्धति को सशक्त बनाने के उद्देश्य से स्विफ्ट स्कूल मॉडल को अपनाया गया है। स्विफ्ट पाल लैब विद्यालय परिसर में स्थापित एक संरचित डिजिटल अधिगम प्रयोगशाला है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को उनके सीखने के स्तर के अनुरूप व्यक्तिगत शैक्षणिक सहयोग प्रदान किया जाएगा। इससे कक्षा शिक्षण को अतिरिक्त मजबूती मिलेगी तथा विद्यार्थियों की अवधारणात्मक स्पष्टता और नियमित अभ्यास को प्रोत्साहन मिलेगा। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि स्विफ्ट स्कूल मॉडल के लागू होने से विद्यालय में शिक्षण की गुणवत्ता को नई दिशा मिलेगी। उन्होंने बताया कि यह पहल शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता से आगे बढ़ाई जाएगी तथा विद्यार्थियों की प्रगति का नियमित आकलन सुनिश्चित किया जाएगा।इस अवसर पर जिला अधिकारी स्वाति भदौरिया तथा जिला शिक्षा अधिकारी (प्राथमिक शिक्षा) अंशुल बिष्ट ने इस अवसर पर विद्यालय द्वारा स्विफ्ट स्कूल मॉडल को अपनाने को सराहनीय कदम बताया

वात्सल्य योजना के तहत 3 करोड़ 5 लाख रुपए खातों में ट्रांसफर

■ महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने डीबीटी किया 2 महीने का पैसा

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। प्रदेश की महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने गुरुवार को मुख्यमंत्री वात्सल्य योजना के तहत लाभार्थियों को 3 करोड़ 5 लाख रुपए से ज्यादा की धनराशि जारी की।

कैंप कार्यालय पर धनराशि लाभार्थियों की खातों में डीबीटी करने के बाद कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने बताया कि इस योजना में प्रदेश सरकार 2020 से ही कोरोना महामारी के समय अभिभावकों को खो देने वाले बेसहारा बच्चों को प्रति माह 3000 की सहायता राशि देती है। इस योजना के तहत नवंबर 25 तक का धन पहले ही जारी कर दिया गया था।कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने बताया कि दिसंबर में 5114 लाभार्थियों को कुल 1 करोड़ 53 लाख 42 हजार रुपए गुरुवार को जारी किए गए हैं। जबकि जनवरी महीने के लिए कुल 5078 लाभार्थियों के 1 करोड़ 52 लाख 34 हजार रुपए की धनराशि जारी की गई है। इस योजना के तहत लाभार्थी के 21 वर्ष के हो जाने या बालिका लाभार्थियों के विवाह या लाभार्थी के सेवायोजित हो जाने के बाद वह योजना से बाहर हो जाते हैं। इस अवसर पर सीपीओ अंजना गुप्ता और डिप्टी सीपीओ राजीव नयन आदि उपस्थित रहे।

ऑपरेशन क्लीन: मुठभेड़ के बाद दो शूटर गिरफ्तार

■ दोनों के पैरों में लगी गोली, तिब्बती मार्केट हत्याकांड के आरोपियों को पुलिस ने दबोचा

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। राजधानी देहरादून के पॉश इलाके तिब्बती मार्केट के सामने हुए सनसनीखेज हत्याकांड के मामले में देहरादून पुलिस ने बड़ी कामयाबी हासिल की है। मुख्यमंत्री के कड़े रुख और एसएसपी अजय सिंह के सख्त निर्देशों के बाद पुलिस ने अर्जुन शर्मा के हत्यारे को दो अलग-अलग मुठभेड़ों में मुख्य शूटर और उसके सहयोगी को गिरफ्तार कर लिया है। जवाबी फायरिंग में दोनों बदमाशों के पैरों में गोली लगी है, जिन्हें उपचार के लिए कोरोनेशन अस्पताल में भर्ती कराया गया है।तिब्बती मार्केट मे एक दिन पूर्व अर्जुन शर्मा हत्याकांड को अंजाम देने वाले दोनों बदमाशों को मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार कर लिया। पुलिस मुठभेड़ में राजू अपने भाई पंकज के साथ दबोचा गया तो उसने पूरी कहानी उगल दी। राजू विनोद उनियाल का ड्राइवर बताया जा रहा है।

अर्जुन की हत्या के लिए उन्हें डील के रूप में 12 से 15 लाख रुपये मिलने थे। दोनों से गहन पूछताछ जारी है।पकड़े गए बदमाशों के कब्जे से पुलिस ने दो देशी तमंचे पे एक स्कूटी बरामद की। एसएसपी अजय सिंह ने बताया कि अपराधियों के लिए देहरादून में कोई जगह नहीं है। कानून व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा।

मुठभेड़ में पंकज के साथ दबोचा गया राजू है विनोद का ड्राइवर: हत्याकांड के बाद फरार शूटरों यमकेश्वर पौड़ी निवासी दो भाइयों राजू और पंकज राणा के पैरों में गोली लगने और उनकी गिरफ्तारी के बाद न सिर्फ पुलिस ने राहत की सांस ली, बल्कि शूटरों ने हत्याकांड के पीछे मुख्य साजिशकर्ता कारोबारी विनोद उनियाल को बताया है। विनोद को मृतक अर्जुन की मां का करीबी बताया गया है।

मृतक अर्जुन की पत्नी अभिलाषा ने बुधवार को अपनी सास बीना शर्मा, विनोद उनियाल, उसकी पत्नी संगीता उनियाल और एसके मेमोरियल हॉस्पिटल के मालिक डॉ. अजय खन्ना के विरुद्ध हत्या करवाने के संदेह पर एफआईआर दर्ज कराई। पुलिस का कहना है कि संपत्ति विवाद, आपसी संबंधों में तनाव और कथित साजिश, इन सभी पहलुओं को जोड़कर जांच आगे बढ़ाई जा रही है। सीसीटीवी फुटेज, कॉल डिटेल रिकॉर्ड और वित्तीय लेन-देन की भी पड़ताल की जा रही है। गुरुवार को देर शाम एसएसपी अजय सिंह ने अर्जुन शर्मा हत्याकांड का खुलासा किया।

दो अलग-अलग मुठभेड़ और अंजाम एक

एसएसपी देहरादून के निर्देश पर पूरे जनपद में नाकेबंदी और सघन चे. कंग अभियान चलाया जा रहा था। इसी दौरान तड़के सुबह पुलिस और बदमाशों के बीच दो स्थानों पर सीधी भिड़ंत हुई। रायपुर क्षेत्र (लाडपुर के जंगल)घ्मे चेकिंग के दौरान एक बदमाश ने पुलिस पर फायरिंग कर भागने की कोशिश की। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में बदमाश के पैर में गोली लगी और उसे मौके पर ही दबोच लिया गया। वही लालतप्पर चौकी मे स्कूटी सवार एक अन्य बदमाश को जब पुलिस ने रोकने का प्रयास किया, तो वह खंडर फैक्ट्री में छिपकर फायरिंग करने लगा। पुलिस की जवाबी मुठभेड़ में इस बदमाश के दाहिने पैर में भी गोली लगी है।

कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग को मिला नया नेतृत्व

■ दून के हाजी सुलेमान अंसारी बने प्रदेश अध्यक्ष

शाह टाइम्स प्रमुख संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी में लंबे समय से खाली चल रहे अल्पसंख्यक विभाग के प्रदेश अध्यक्ष पद पर आखिरकार नियुक्ति हो गई है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ओर से जारी आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार कांग्रेस अध्यक्ष की स्वीकृति के बाद हाजी सुलेमान अंसारी को उत्तराखंड कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति तत्काल प्रभाव से लागू मानी जाएगी।

यह घोषणा एआईसीसी के महासचिव के.सी. वेणुगोपाल की और से जारी प्रेस नोट में की गई, जिसमें तेलंगाना और उत्तराखंड दोनों राज्यों के अल्पसंख्यक विभागों के अध्यक्षों की नियुक्ति की जानकारी दी गई है। उत्तराखंड कांग्रेस में अल्पसंख्यक विभाग का प्रदेश अध्यक्ष पद काफी समय से रिक्त चल रहा था। संगठनात्मक दृष्टि से यह विभाग महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यह पार्टी और अल्पसंख्यक समुदायों के बीच संवाद का सेतु होता है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि आगामी चुनावी परिदृश्य और सामाजिक समीकरणों को देखते हुए कांग्रेस ने इस पद पर सक्रिय और जमीनी अनुभव रखने वाले चेहरे को आगे बढ़ाया है।

हाजी सुलेमान अंसारी की नियुक्ति को इसी रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है, जिसके तहत पार्टी संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने और अल्पसंख्यक समुदाय में विश्वास को पुनर्स्थापित करने की कोशिश कर रही है।

जमीनी राजनीति से प्रदेश स्तर तक का सफर

हाजी सुलेमान अंसारी का राजनीतिक सफर बेहद साधारण पृष्ठभूमि से शुरू हुआ। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत देहरादून की ग्राम सभा मेंहूंवाला माफी से प्रधान के रूप में की थी। स्थानीय स्तर पर सक्रिय जनप्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने संगठनात्मक कौशल और जनसंपर्क क्षमता का परिचय दिया। कांग्रेस पार्टी में वे विभिन्न दायित्वों का निर्वहन कर चुके हैं। संगठन के भीतर उनकी सक्रियता, जमीनी पकड़ और समुदायों के बीच संवाद स्थापित करने की क्षमता को देखते हुए पार्टी नेतृत्व ने उन पर विश्वास जताया है। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि ग्राम स्तर से लेकर प्रदेश स्तर तक का अनुभव उन्हें संगठनात्मक संरचना को समझने और कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलने में मदद करेगा।

राजनीतिक महत्व और आगामी रणनीति

उत्तराखंड की राजनीति में अल्पसंख्यक मतदाताओं की भूमिका कई सीटों पर निर्णायक मानी जाती है। ऐसे में कांग्रेस द्वारा अल्पसंख्यक विभाग को सक्रिय करना रणनीतिक दृष्टि से अहम कदम माना जा रहा है। सूत्रों के अनुसार, पार्टी आने वाले समय में अल्पसंख्यक विभाग के माध्यम से जिला और ब्लॉक स्तर पर पुनर्गठन अभियान चला सकती है। हाजी सुलेमान अंसारी की जिम्मेदारी केवल संगठन विस्तार तक सीमित नहीं होगी, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर पार्टी की स्पष्ट भूमिका को जनता तक पहुंचाना भी उनकी प्राथमिकता में शामिल रहेगा।

पुलिस ने मोबाइल स्नेचर लाड व लक्की को दबोचा

देहरादून। राजधानी की कैंट पुलिस ने टपकेश्वर-शेरबाग रोड पर हुई मोबाइल स्नेचिंग की वारदात का खुलासा करते हुए दो शातिर अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी लाड सिंह और लक्की सिंह ने नशे की जरूरतों को पूरा करने के लिए इस वारदात को अंजाम दिया था। पुलिस ने उनके कब्जे से लूटा गया मोबाइल और घटना में इस्तेमाल की गई मोटरसाइकिल भी बरामद कर ली है। बीते 7 फरवरी को गढ़ी कैंट निवासी प्रदीप पाल की पत्नी जब टपकेश्वर रोड से अपने घर की ओर जा रही थीं, तभी बाइक सवार बदमाशों ने झपट्टा मारकर उनका मोबाइल छीन लिया और फरार हो गए। सूचना के आधार पर पुलिस ने पोस्ट ऑफिस तिराहे के पास चे. कंग के दौरान लाड सिंह पुत्र रोशन सिंह निवासी कांवली रोड व लक्की सिंह पुत्र स्व. शमशेर सिंह, निवासी कांवली रोड को घेरकर दबोच लिया। दोनों आरोपी लक्ष्मण चौक क्षेत्र के निवासी हैं।

यूटीयू देहरादून के छः परिसर संस्थानों के लिए वित्तीय सहायता को लेकर मंथन

■ मुख्य सचिव ने की विश्वविद्यालय के परिसरों के लिए राज्य एवं केंद्र पोषित योजनाओं से वित्तीय सहायता प्रदान किए जाने को बैठक

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्य सचिव आनंद वर्द्धन की अध्यक्षता में गुरुवार को सचिवालय में उत्तराखंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय देहरादून के छः परिसर संस्थानों के लिए राज्य एवं केंद्र पोषित योजनाओं से वित्तीय सहायता प्रदान किए जाने संबंधी बैठक आयोजित हुई।

मुख्य सचिव ने विश्वविद्यालय को राज्य में तकनीकी शिक्षा की बेहतरी के लिए प्रयास करने के साथ संस्थानों में आवश्यक अवस्थाना सुविधाओं के विकास तथा फैकल्टी की समुचित व्यवस्था किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पर्वतीय क्षेत्रों में विश्व. विद्यालय के परिसरों में छात्रों को आवश्यक संसाधन एवं सुविधाएं उपलब्ध होने से इनमें संचालित विषयों में छात्रों की संख्या बढ़ेगी तथा जिन उद्देश्यों के लिए इन परिसरों की स्थापना की गई है उसका उद्देश्य भी पूरा हो सकेगा।

मुख्य सचिव ने विश्वविद्यालय से प्रौद्योगिकी संस्थान गोपेश्वर, पिथौरागढ, टनकपुर, बौन (उत्तरक. ाशी) डब्लू. आईटी. देहरादून में हॉस्टल निर्माण के साथ अन्य आवश्यक आवासीय भवनों के निर्माण के प्रस्ताव तैयार करने को भी कहा, ताकि छात्रों के साथ प्रमुख फैकल्टी को आवासीय सुविधाएं भी उपलब्ध हो सके। मुख्य सचिव ने विश्वविद्यालय को अपने आय के संसाधनों में वृद्धि के साथ अवस्थापना सुविधाओं के विकास पर होने वाले व्यय का प्रस्ताव भी प्रस्तुत करने को कहा, ताकि उस पर शासन स्तर पर विचार कर नीतिगत निर्णय लिया जा सके। उन्होंने कहा कि इन संस्थानों में बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने के लिए आवश्यक है कि इनमें हॉस्टल की सुविधा हो फैकल्टी की व्यवस्था हो तथा आवश्यक उकरण एवं अन्य संसाधन उपलब्ध हो। विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. तृप्ता ठाकुर ने विस्तृत प्रस्तुतिकरण के माध्यम से विश्वविद्यालय के कार्य-कलापों की जानकारी दी। बैठक में सचिव डॉ. रंजीत सिन्हा, वी. षणमुगम, रजिस्ट्रार राजेश उपाध्याय, निदेशक डब्ल्यू. आईटी. मनोज पाण्डा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

ड्रीमर्स एजु हब के कार्तिक पांडेय ने रचा इतिहास

■ एसएससी टेक में ऑल इंडिया रैंक-३ हासिल कर बढ़ाया उत्तराखंड का मान

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। देवभूमि के युवाओं का भारतीय सेना के प्रति जज्बा एक बार फिर स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है।

राजधानी स्थित प्रतिष्ठित सैन्य प्रशिक्षण संस्थान श्ड्रीमर्स एजु हबश के छात्र कार्तिक पांडेय ने एसएससी टेक्निकल एंट्री में अखिल भारतीय स्तर पर तीसरी रैंक प्राप्त कर न केवल संस्थान, बल्कि पूरे उत्तराखंड को गौरवान्वित किया है।कार्तिक पांडेय ड्रीमर्स एजु हब के 10 अक्टूबर 2024 बैच के छात्र रहे हैं। उन्होंने अपनी सेवा चयन बोर्ड (एसएसबी) की बारीकियों को इसी संस्थान से सीखा। उनकी कड़ी मेहनत का ही परिणाम है कि उन्हें 34 एसएसबी इलाहाबाद द्वारा सेना में अधिकारी पद के लिए अनुशंसित किया गया।मूल रूप से नैनीताल जिले के रामनगर निवासी कार्तिक का बचपन से ही सपना भारतीय सेना की वर्दी पहनकर देश की सेवा करना था।

संस्थान के प्रशिक्षकों के अनुसार, कार्तिक न केवल शैक्षणिक रूप से मेधावी रहे, बल्कि शारीरिक दक्षता और नेतृत्व क्षमता में भी उन्होंने सदैव उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। अनुशासन और निरंतर अभ्यास उनकी सफलता के मूल मंत्र रहे।कार्तिक की इस अभूतपूर्व उपलब्धि पर ड्रीमर्स एजु हब के संस्थापक हरिओम चौधरी एवं सह-संस्थापिका अंकिता तनेजा ने उन्हें बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।अपनी ऐतिहासिक सफलता पर कार्तिक पांडेय ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसका श्रेय अपने माता-पिता के अटूट सहयोग और गुरुओं के सटीक मार्गदर्शन को दिया।

चार नए लेबर कोड के विरोध में मजदूर यूनियनों ने निकाली रैली

देहरादून। केंद्रीय ट्रेड यूनियनों के आह्वान पर गुरुवार को सीटू, एटक और इंटक से जुड़ी युनियनों के साथ ही बस्ती बचाओ आंदोलन के लोगों ने अपनी मांगों को लेकर देहरादून में रैली निकालकर प्रदर्शन किया. इस दौरान जिला मुख्यालय में पर प्रदर्शन कर राष्ट्रपति को एक ज्ञापन भी जिला प्रशासन के माध्यम से प्रेषित किया गया है.

यह रैली राजपुर रोड घंटाघर एश्ले हॉल से होते हुए जैसे ही सचिवालय की ओर बढ़ी, तभी पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को बैरिकेडिंग लगाकर रोक दिया. पुलिस के रोके जाने से नाराज प्रदर्शनकारी सड़क पर ही धरने पर बैठ गए, और मोदी सरकार की नीतियों के खिलाफ जमकर हल्ला बोलते हुए रैली निकाली।

जन-जन की सरकार: जोशी ने सुनीं जन समस्याएं

■ 41 शिकायतों में से अधिकांश का मौके पर निस्तारण

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने गुरुवार को रायपुर ब्लॉक के सरोना स्थित राइका भगद्वारीखाल में "जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार" तथा "प्रशासन चला गांव की ओर" कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित बहुउद्देशीय शिविर में बतौर मुख्य अतिथि प्रतिभाग किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का निरीक्षण किया तथा शिविर में पहुंचे ग्रामीणों से संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं।

शिविर में कृषि विभाग के लाभार्थियों को कृषि यंत्र एवं चेक वितरित किए गए। वहीं बाल विकास विभाग के माध्यम से महिलाओं एवं किशोरियों को महालक्ष्मी किट एवं किशोरी किट प्रदान की गई। शिविर के दौरान कुल 41 शिकायतें दर्ज की गईं, जिनमें से अधिकांश का समाधान मौके पर ही कर दिया गया। शेष विकासपरक एवं योजनाओं से संबंधित शिकायतों के निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध प्रस्ताव तैयार कर समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि मुख्यमंत्री का संकल्प है कि राज्य के प्रत्येक नागरिक तक सरकार की योजनाओं का लाभ पारदर्शी, सरल एवं समयबद्ध तरीके से पहुंचे और कोई भी व्यक्ति बुनियादी सुविधाओं से वंचित न रहे। उन्होंने इस पहल के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम पूरे प्रदेश में संचा. लित किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत अब तक सात लाख से अधिक नागरिकों को प्रत्यक्ष लाभ मिल चुका है। मंत्री गणेश जोशी ने कृषि विभाग के अधिकारियों को पीएम किसान सम्मान निधि योजना के लाभार्थियों की ई-केवाईसी के लिए सुवाखोली और सहस्त्रधारा में विशेष कैंप आयोजित करने के निर्देश दिए। साथ ही स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को रिप परियोजना के तहत सीएलएफ से जोड़ने के लिए भी विशेष शिविर लगाने को कहा।

इस अवसर पर एडीएम के.के मिश्रा, एसडीएम हरी गिरी, परियोजना निदेशक विक्रम सिंह, जिला विकास अधिकारी सुनील कुमार, ग्राम प्रधान आस्था नेगी, पूनम देवी, क्षेत्र पंचायत सदस्य घनश्याम नेगी, प्रेम कोहली, अरविंद राणा सहित क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

श्रम संहिताएं मजदूर अधिकारों पर हमला

राष्ट्रीय हड़ताल के समर्थन में हल्द्वानी के बुधपार्क में संयुक्त प्रदर्शन

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। राष्ट्रीय हड़ताल के आह्वान पर हल्द्वानी के बुधपार्क में विभिन्न ट्रेड यूनियनों और सामाजिक संगठनों ने संयुक्त प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में आशा वर्कर्स, भोजनमाताओं, मजदूरों, किसानों सहित सैकड़ों लोगों ने भागीदारी की और केंद्र व राज्य सरकार की नीतियों के खिलाफ जोरदार आवाज उठाई। वक्ताओं ने मोदी सरकार द्वारा लाए गए चार श्रम संहिताओं, बैंक-बीमा व सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण, बिजली संशोधन विधेयक, बीज विधेयक, मनरेगा में बदलाव, शिक्षा के निजीकरण तथा पुरानी पेंशन योजना बहाली जैसे मुद्दों को लेकर कड़ा विरोध जताया। आशा और भोजनमाता जैसी महिला कर्मियों को सम्मानजनक वेतन व स्थायी नौकरी देने की मांग भी प्रमुखता से

उठाई गई। ऐक्टू प्रदेश महामंत्री केके बोरा ने श्रम संहिताओं को मजदूर अधिकारों पर बड़ा हमला बताया। बैंक यूनियन के जिला सचिव योगेश पंत और बीमा कर्मचारी संघ के पंकज त्रिपाठी ने निजीकरण और 'हायर एंड फायर' नीति का विरोध किया। आशा हेल्थ वर्कर्स यूनियन की प्रदेश अध्यक्ष कमला कुंजवाल ने आशा कार्यकर्ताओं की बदहाल स्थिति पर चिंता जताई, जबकि प्रगतिशील भोजनमाता संगठन की महासचिव रजनी जोशी ने अल्प मानदेय को लेकर सरकार को घेरा। कार्यक्रम की अध्यक्षता जोगेंद्र लाल ने और संचालन डा. कैलाश पांडेय ने किया। राष्ट्रीय हड़ताल में ऐक्टू, उत्तराखंड आशा हेल्थ वर्कर्स यूनियन, प्रगतिशील भोजनमाता संगठन, बैंक यूनियन, बीमा कर्मचारी संघ, किसान महासभा, भाकपा माले, सनसेरा श्रमिक संगठन, मानव अधिकार रक्षा अभियान, पछास, क्रालोस, आइसा, भीम आर्मी, निर्माण मजदूर यूनियन आदि संगठनों ने हिस्सेदारी की, जिसमें मुख्य रूप से केके बोरा, कमला कुंजवाल, रिंकी जोशी, रजनी जोशी, पुष्पा कुड़ाई, चंपा, बबीता, देवकी भट्ट, राधा नयाल, सरोज रावत, योगेश पंत, पंकज त्रिपाठी, अशोक कश्यप, हिमांशु चौधरी, नरेश जोशी, नफीस अहमद खान, नवीन आर्य, सुलेमान मलिक, चंदन, वेद प्रकाश, इस्लाम हुसैन, बची सिंह बिष्ट, धन सिंह गड़िया, दीपक कांडपाल, रीना आर्य, सायमा सिद्दीकी, भगवती, रीता इस्लाम, मनोज पांडे, दीपा बिष्ट, सुमन बिष्ट, किरन पडलिया, सुंदर लाल बौद्ध, मुमताज, तुलसी आर्य, सुधा, पार्वती, सुनीता, गीता, रश्मि जोशी, कमलेश बोरा, मिथिलेश, धीरज कुमार समेत सैकड़ों लोग शामिल रहे।

कपकोट तहसील में शिविर जन समस्याओं का समाधान

शाह टाइम्स संवाददाता

बागेश्वर। जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार कार्यक्रम के तहत गुरुवार को कपकोट तहसील सभागार में बहुद्देशीय शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य विकास अधिकारी आरसी तिवारी की अध्यक्षता में हुए इस शिविर में 235 लोगों ने केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त किया।

इस दौरान 15 शिकायतें दर्ज की गईं, जिनमें से अधिकांश का समाधान मौके पर ही कर दिया गया। 9 आवेदकों को प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना का लाभ मिला। शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल लगाए गए और योजनाओं की जानकारी दी गई।

मुख्य विकास अधिकारी ने अधिकारियों को शेष प्रकरणों का शीघ्र समाधान करने के निर्देश दिए। उन्होंने आमजन से शिविरों में अधिक से अधिक भाग लेने की अपील की। इस मौके पर नगर पंचायत अध्यक्ष गीता ऐठानी, अधिशासी अधिकारी बलवंत सिंह रावत सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

एक नजर....

मारुति के शोरूम से लाखों रूपये की चोरी

काशीपुर। मारुति कार के शोरूम से अज्ञात चोर लाखों रुपये के स्पेयर पार्ट्स चोरी कर ले गए। तहरीर पर पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बाजपुर रोड स्थित आकांक्षा ऑटोमोबाइल शोरूम के तजिन्दर सिंह ने बताया कि 8 फरवरी की रात करीब साढ़े 11 बजे चोरों ने स्पेयर पार्ट्स रूम का ताला तोड़कर चोरी की जिनकी कीमत करीब चार लाख रुपये हैं। तजिन्दर सिंह ने सीसीटीवी कैमरों की फुटेज पुलिस को सौंपी है। आईटीआई थाना पुलिस ने तहरीर के आधार पर प्राथमिकी दर्ज की है और आरोपियों की तलाश में टीमे दबिश दे रही हैं। उल्लेखनीय है कि बीती ऊरवरी को भी आईटीआई थाना क्षेत्र में केंद्रीय विद्यालय के आवासीय परिसर में तीन अध्यापकों के घरों से लाखों की चोरी हुई थी। इन घटनाओं का पुलिस अब तक खुलासा नहीं कर पाई है।

दो दशक से नहीं हैं चर्म रोग विशेषज्ञ

काशीपुर। शासन की उदासीनता कहें या फिर स्वास्थ्य विभाग की, दो दशक से सरकारी अस्पताल में चर्म रोग विशेषज्ञ का पद है। सरकारें आई और गईं, लेकिन अस्पताल को चर्म रोग विशेषज्ञ नहीं मिल पाया। हालात ऐसे है कि गरीब लोगों को उपचार के लिए निजी डॉक्टरों से महंगा इलाज कराना पड़ रहा है। एलडी भट्ट राजकीय उप जिला चिकित्सालय में काशीपुर, जसपुर, बाजपुर, सुल्तानपुर पट्टी, अलीगंज, ठाकुरद्वारा, रेहड़ बिजनौर आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में मरीज इलाज कराने आते है। इनमें से प्रतिदिन करीब 25-30 मरीज मुंहासे, पित्ती या चकत्ते, दाग, कट या खरोंच के कारण हुए निशान, अंदर की ओर बढ़े हुए नाखून याफंगस आदि बीमारी के भी होते हैं। चर्म रोग विशेषज्ञ के न होने पर अन्य चिकित्सकों से दवाई लिखवा कर ले जाते हैं। बता दें कि करीब दो दशक पूर्व चिकित्सालय में चर्म रोग विशेषज्ञ के पद पर डॉ. एसके टम्टा सीएमएस रह चुके हैं। उनका स्थानांतरण होने के बाद से आज तक इस पद पर चिकित्सक की तैनाती नहीं हो सकी है। गरीब मरीजों को सबसे अधिक परेशानी झेलनी पड़ रही है।

कांवरियों को दी जाए पूर्ण सुरक्षा: कविता यादव

काशीपुर। भाजपा नेत्री पूर्व पार्षद कविता यादव ने प्रेस को जारी बयान में कहा कि गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी शिव भक्त कांवरिये हरिद्वार से पवित्र

गंगा जल लेकर अपने-अपने स्थान को निकल चुके हैं। उन्होंने प्रशासन से शिव भक्त कांवरियों के सुरक्षा की मांग की क्योंकि विगत वर्ष में सामाजिक तत्वों द्वारा माहौल खराब करने का प्रयास किया जा चुका है ऐसे असामाजिक तत्वों पर सीसी कैमरों द्वारा कड़ी नजर रखी जाए। कांवरियों वाले रूट पर पुलिस पेट्रोलिंग की व्यवस्था की जाए जिस मार्ग से शिव भक्ति कांवरिया जाते हैं उस रूट पर चौपहिया वाहन डंपर और ई-रिक्शा को पूर्णत: प्रतिबंधित किया जाए। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग से भी मांग की है कि एक मोबाइल स्वास्थ्य वाहन की व्यवस्था की जाए जिससे अगर किसी शिव भक्ति कांवरिया को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो तो उसकी तत्काल उपचार हो सके। उन्होंने नगर निगम से मांग की काशीपुर के समस्त मंदिरों पर सफाई व्यवस्था और चूने की व्यवस्था की जाए। महाशिवरात्रि तक नॉनवेज की दुकाने बंद करने का निर्णय के लिए महापौर का आभार जताया है।

मिनिस्ट्रीयल कर्मियों का कार्यबहिष्कार जारी

बागेश्वर। लोनिवि मिनिस्टीरियल कर्मचारियों का कार्य बहिष्कार चौथे दिन भी जारी रहा। कर्मचारियों ने परस्पर स्थानांतरण और पदोन्नति की मांग पूरी न होने पर सरकार और विभाग के खिलाफ नारेबाजी करते हुए धरना दिया। कर्मचारियों का कहना है कि उनकी लंबे समय से अनदेखी की जा रही है, और पदोन्नति का इंतजार बढ़ता जा रहा है। कर्मचारियों ने 13 फरवरी को विभागाध्यक्ष का घेराव करने की चेतावनी दी। धरने में राजेश त्रिपाठी, हरी राम बधाणी, कंचन कुमार, महिपाल सिंह, आनंद सिंह, नवीन दानू और ममता बिष्ट सहित कई कर्मचारी मौजूद थे।

क्षेत्र पंचायत सदस्यों ने जताई कड़ी आपत्ति

बागेश्वर। क्षेत्र पंचायत सदस्यों ने ग्राम प्रधानों को तर्ज पर कार्य न दिए जाने पर कड़ी आपत्ति जताई। गुरुवार को विकास भवन में विरोध प्रदर्शन करते हुए सदस्यों ने डीडीओ संगीता आर्य से मुलाकात की और इस मुद्दे पर वार्ता की। बीडीसी मेंबरों ने चेतावनी दी कि अगर उन्हें कार्य नहीं दिए गए तो वे आंदोलन करेंगे। सदस्यों का कहना था कि जीएसटी के बहाने उन्हें मैटीरियल सामग्री के कार्य नहीं सौंपे जा रहे हैं। इसके अलावा, उन्होंने राज्य वित्त और 15 वित्त के कार्यों में भागीदारी की मांग की। उनका कहना था कि क्षेत्रवासियों की उम्मीदों को पूरा करने के लिए उन्हें काम करने का मौका मिलना चाहिए। इस मौके पर जेष्ठ प्रमुख मनीष कुमार, फतेह सिंह करायत, नवीन चंद्र, भुवन जोशी, हरीश मेहता और माया देवी सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

महिला सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

बागेश्वर। ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान ने तीनों विकासखंडों से चयनित 33 महिलाओं के लिए 31 दिवसीय महिला सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू कर दिया है। कार्यक्रम का उद्घाटन आरसेटी निदेशक सुखविंदर ने किया। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को सिलाई के क्षेत्र में व्यावसायिक कौशल प्रदान कर उन्हें स्वरोजगार से जोड़ना है, ताकि प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद वे स्वयं का उद्यम स्थापित कर अपनी आय बढ़ा सकें। आरसेटी निदेशक ने संस्थान के नियमों, प्रशिक्षण की रूपरेखा और बैंकिंग प्रक्रियाओं की जानकारी दी।

विधिक मोबाइल वैन को दिखाई हरी झंडी

बागेश्वर। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, नैनीताल एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में दूरस्थ क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों को कानूनी जानकारी दिए जाने के लिए विधिक सेवा रथ (मोबाइल वैन) को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। जिला जज एवं अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पंकज तोमर के मार्गदर्शन में यह रथ 12 एवं 13 फरवरी तक कपकोट तथा कांडा तहसील के दूरस्थ गांवों का भ्रमण करेगा। विधिक सेवा रथ वीडियो स्क्रीन, पंपलेट और कानूनी ज्ञानमाला के माध्यम से आमजन को विभिन्न कानूनों, अधिकारों तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी देगा।

मारपीट मामले में पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा

अल्मोड़ा। नगर के दुगालखोला निवासी एक व्यक्ति ने पड़ोसियों पर भूमि पर कब्जा और मारपीट करने का आरोप लगाया है। पुलिस ने मंगलवार को आरोपी पड़ोसियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस से मिली जानकारी अनुसार दुगालखोला निवासी विजय प्रकाश थापा ने तहरीर दी है। कहना है कि पड़ोसी आए दिन उनके साथ विवाद करते हैं। जबरन उनकी भूमि पर कब्जा किया जा रहा है। बीते दिनों पड़ोसियों ने फिर से कब्जा करने का प्रयास किया। उन्होंने इसका विरोध किया तो पड़ोसी जगत सिंह गैड़ा, उनकी पत्नी ममता गैड़ा, बेटा कार्तिक गैड़ा और बहू मारपीट पर उतर आए। गाली गलौज के साथ जान से मारने की धमकी दी। आरोपी जगह गैड़ा ने उन पर लाठी से हमला भी किया। इससे उन्हें आरोपियों से खतरा बना हुआ है। पीड़ित ने कोवताली पुलिस को तहरीर देते हुए आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

विधायक चीमा ने ग्रामसभा गिरधई में की लोगों से मुलाकात

शाह टाइम्स संवाददाता

काशीपुर। विधायक त्रिलोक सिंह चीमा ने आज विधानसभा क्षेत्र के ग्राम गिरधई में ग्राम सभा के सभी निवासियों के साथ 'शुभेच्छा मुलाकात' की और

गाँव के श्री गुरुद्वारा साहिब के पवित्र प्रांगण में अपनों के बीच बैठकर न केवल उनकी कुशलक्षेम जानी, बल्कि क्षेत्र के विकास और जनसमस्याओं पर भी विस्तार से चर्चा की। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों से कहा कि आप सभी का यह स्नेह और अटूट विश्वास ही मुझे क्षेत्र की सेवा के लिए निरंतर ऊर्जा प्रदान करता है। उन्होंने इतने भव्य स्वागत और प्रेम के लिए समस्त ग्रामवासियों का आभार जताया। इस अवसर पर पूर्व विधायक हरभजन सिंह चीमा, बीडीसी सदस्य प्रतिनिधि विकर सिंह, सुखवंत सिंह, कुलवंत सिंह, जिला मंत्री रजत सिद्धू, प्रगट सिंह सहित बड़ी संख्या में ग्राम सभा के लोग उपस्थित रहे।

संगठनों ने सरकार के खिलाफ धरना दिया

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा। श्रमिक विरोधी चारों नए लेबर कोड वापस लेने समेत तमाम मांगों के निराकरण को लेकर ट्रेड यूनियन सीटू से जुड़ी आशा कार्यकर्ताओं ने मोर्चा खोल दिया है। गुरुवार को आशा कार्यकर्ताओं, भोजन माताओं और जनवादी महिला समिति ने धरना देकर नगर में विरोध जुलूस निकाला। इस दौरान सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। केंद्रीय ट्रेड यूनियन के आह्वान पर देशव्यापी हड़ताल के समर्थन में विभिन्न संगठनों ने धरना गांधी पार्क में धरना दिया। कहा कि आज देशभर का किसान सरकार की नई-नई पोलिशियों से परेशान है। ऐसे में सरकार अमेरिका को जीरो प्रतिशत टैरिफ को भारत में खुली छूट देने के कारण भारत के किसानों की स्थिति और भी

दयनीय हो जाएगी। वक्ताओं ने कहा कि सरकार को एपस्टीन फाइल में आए हुए नाम को सार्वजनिक करना चाहिए और तत्काल प्रभाव से उन सभी लोगों ने इस्तीफा देना चाहिए जिनका नाम एपस्टीन फाइल में आया है। वहीं, बीएसएनएल में कार्यरत कर्मचारियों ने कहा कि बीते 10 महीने से उन्हें वेतन भुगतान नहीं हुआ है। कर्मचारियों के सामने आर्थिक संकट पैदा हो गया है। परिवार का भरण पोषण करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इस दौरान श्रमिक विरोधी चारों नए लेबर कोड वापस लेने, आशाओं को नियमितीकरण करते हुए सम्मानजनक वेतन देने, आशा वर्कर्स को एक समान मानदेय देने, आशाओं को सेवानिवृत्त होने पर अनिवार्य पेंशन का प्रस्ताव केंद्र सरकार की कैबिनेट से पारित करने, रिटायरमेंट के समय दस लाख की एकमुश्त धनराशि देने, सभी सरकारी अस्पतालों को आशाओं के साथ सम्मानजनक व्यवहार करने का निर्देश देने, सरकारी अस्पतालों में विशेषज्ञ डाक्टरों के रिक्त पदों को भरने, हर अस्पताल में आशा घर का निर्माण करने आदि की मांग उठाई। यहां धरना देने और जुलूस निकालने वालों में आरपी जोशी, सुनीता पांडे, यूसुफ तिवारी, योगेश कुमार, विजयालक्ष्मी, भगवती आर्य, ममता भट्ट, नीमा जोशी, ममता तिवारी, पूजा बगड्वाल, नीमा जोशी, आशा लटवाल, हेमा नगरकोटी, दीवान सिंह, देवकी, हेमा अधिकारी समेत विभिन्न संगठनों से जुड़े लोग मौजूद रहे।

कुमाऊ फुटबॉल प्रीमियर लीग का आग़ाज़

मेयर अजय वर्मा ने किया उद्घाटन, चंपावत ने बागेश्वर को दी शिकस्त

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा। सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा में कुमाऊ फुटबॉल प्रीमियर लीग का आगाज हो गया है। गुरुवार को प्रतियोगिता के तहत बागेश्वर और चंपावत के बीच उद्घाटन मुकाबला खेला गया। जिसमें चंपावत की टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए जीत दर्ज की। हेमवती नंदन बहुगुणा स्टेडियम में बिठौरिया क्लब हल्द्वानी और फुटबॉल एसोसिएशन अल्मोड़ा की ओर से आयोजित प्रतियोगिता का शुभारंभ अतिथि नगर निगम मेयर अजय वर्मा, पूर्व विस उपाध्यक्ष रघुनाथ सिंह चौहान, पूर्व दर्जा राज्य मंत्री गोविंद सिंह पिलख्वाल ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया। अतिथियों ने कहा कि खेलकूद प्रतियोगिताएं युवाओं की प्रतिभा को निखारने के साथ-साथ अनुशासन, टीम भावना और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का संदेश देती हैं। उद्घाटन मुकाबला बागेश्वर और चंपावत की टीमों के मध्य खेला गया। जिसमें चंपावत की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बागेश्वर की टीम को 2-1 के अंतर से पराजित कर कुमाऊं फुटबॉल प्रीमियर लीग का उद्घाटन मुकाबला अपने नाम किया। वहीं, फुटबॉल एसोसिएशन की ओर से कुमाऊ प्रीमियर लीग प्रतियोगिता के दौरान वरिष्ठ व युवा खिलाड़ियों को भी सम्मानित किया गया। क्लब की ओर से वरिष्ठ फुटबॉल खिलाड़ी नंदन सिंह कनवाल, प्रेस सिंह सांगा, मोहन सिंह चौहान, श्याम सिंह, भगवत सिंह, सुदर्शन लाल साह, सुरेश पांडे को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। वहीं, अलग-अलग खेलों में पदक विजेता संकल्प कनवाल, हिमांनी आर्या, प्रभा नेगी, मोहित, अखिलेश सिंह को भी सम्मानित किया गया। इस मौके पर यहां फुटबॉल एसोसिएशन अध्यक्ष हरीश कनवाल, सचिव विनीत बिष्ट, पूर्व विधायक कैलाश शर्मा, कोष मनीष कनवाल, भूमित कनवाल, मोहित मेहता, मंयक कनवाल, दिनेश आर्या, मनोज सनवाल, करन कनवाल, नवीन बिष्ट, भावेश बिष्ट, आनंद सिंह कनवाल समेत कई खेल प्रेमी मौजूद रहे।

लाभार्थियों को तत्काल मिला लाभ

शाह टाइम्स संवाददाता

कालाढूंगी। नगर पालिका परिषद कालाढूंगी में जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार बहुउद्देशीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 27 विभागों ने अपनी योजनाओं के लाभ के लिए स्टॉल लगाए। सचिव, नियोजन, श्रम एवं समाज कल्याण विभाग डा. श्रीधर अद्दांकी के शासकीय भ्रमण के दौरान आयोजित इस शिविर में 59 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से अधिकांश का समाधान मौके पर ही किया गया। राजस्व विभाग, सिंचाई, विद्युत और लोक निर्माण विभाग से संबंधित शिकायतें विशेष रूप से आईं। शिविर में विभागीय अधिकारियों ने योजनाओं की जानकारी दी और पात्र लाभार्थियों को तत्काल लाभ दिया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष राज्य स्तरीय राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य एवं अनुश्रवण परिषद उत्तराखण्ड सुरेश चन्द्र भट्ट, विधायक प्रतिनिधि विकास भगत, नगर पालिका अध्यक्ष रेखा कत्यूरा, सभासद हरीश मेहरा, चन्द्रा टम्टा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

छात्रों, ग्रामीणों को बताए वनाग्नि के दुष्परिणाम

अल्मोड़ा। हंस फाउंडेशन ने गुरुवार को राइंका सुनौली और चनौदा में वनाग्नि रोकथाम को लेकर जन-जागरूकता रैली निकाली। रैली में छात्रों और ग्रामीणों को वनों को आग से बचाने और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने का संदेश दिया गया। हंस फाउंडेशन की ब्लॉक समन्वयक अनीता कनवाल ने परियोजना के बारे में जानकारी दी और वनों के महत्व को बताया। विद्यालयों के प्रधानाचार्यो ने वनाग्नि के नकरात्मक प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए छात्रों से सक्रिय भागीदारी की अपील की। फाउंडेशन के फायर फाइटरों ने सामूहिक प्रयासों से जंगलों को आग से बचाने के महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम में वन दरोगा पंकज सिंह, प्रधानाचार्य विजय भाकुनी समेत कई अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

विवि में 13वीं समूह चर्चा का समापन

शाह टाइम्स संवाददाता

पंतनगर। गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन फ्रूट्स (एआईसीआरपी) की 13वीं समूह चर्चा सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

कार्यक्रम में विभिन्न अनुसंधान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के राष्ट्रीय सचिव डा. प्रकाश पाटिल ने आयोजन टीम को सराहा और पुरस्कारों की घोषणा की। नवसारी कृषि विश्वविद्यालय को प्रथम और महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। बेस्ट एक्सपेरिमेंटल ईंचार्ज अवार्ड डा. पूनम श्रीवास्तव को मिला। कार्यक्रम में डा. सुभाष चंद्र और डा. एसके वर्मा ने फल उत्पादन बढ़ाने के लिए समन्वित अनुसंधान की आवश्यकता पर जोर दिया, जबकि डा. पीसी त्रिपाठी और डा. वीबी पाटिल ने क्षेत्र-विशिष्ट समस्याओं और नई फसलों पर अनुसंधान की महत्वपूर्णता पर चर्चा की। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन से हुआ, जिसमें सभी योगदानकर्ताओं की सराहना की गई।

जीवन रक्षक ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर्स जारी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। राजकीय मेडिकल कालेज के स्किल सेंटर में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) नई दिल्ली द्वारा संचालित राष्ट्रीय आपातकालीन जीवन रक्षक ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर्स कार्यक्रम का दूसरा दिन गुरुवार को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत इमरजेंसी मेडिसिन विभाग, जेपीएनएटीसी, एम्स नई दिल्ली के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा राजकीय मेडिकल कालेज के चिकित्सकों को चिकित्सा आपात स्थितियों में बेसिक लाइफ सपोर्ट (बीएलएस) तथा ट्रामा प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण का संचालन जेपीएनएटीसी, एम्स नई दिल्ली के डा. बीएल मनीष कुमार, नर्सिंग ऑफिसर संगीता अफारिया, नर्सिंग ऑफिसर गीता सिन्हा तथा क्लीनिकल ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑफिसर एवं सीनियर कोऑर्डिनेटर जगदीश चंद्र द्वारा किया जा रहा है। इस अवसर पर चिकित्सा अधीक्षक डा. अरुण जोशी, डा. राजीव सिंह, डा. रितु रखोलिया, डा. परमजीत सिंह, डा. दीपा देउपा (नोडल ऑफिसर, स्किल सेंटर), डा. जहांआरा, डा. राहुल सक्सेना, डा. राजीव श्रीवास्तव तथा नर्सिंग कॉलेज हल्द्वानी की सहायक प्रोफेसर अनिता अधिकारी आदि मौजूद थे।

मंत्री जी! कब अस्तित्व के आएगा त्रिस्तरीय कैडर?

शाह टाइम्स संवाददाता

द्वाराहाट। प्रदेश के जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ की त्रिस्तरीय कैडर पीआरटी /टीजीटी/पीजीटी की महत्वपूर्ण मांग को लगातार शिक्षा विभाग, शासन व सरकार द्वारा लटकाया जा रहा है। विगत 7-8 महीने पूर्व निदेशालय स्तर पर त्रिस्तरीय कैडर का ड्राफ्ट भी बन चुका है। जिसमे कुछ सुझाव के बिंदु विभाग और शासन को जूनियर शिक्षक संगठन द्वारा 6 माह पूर्व दिए गए हैं, जिस पर प्रगति वर्तमान तक शून्य है। त्रिस्तरीय कैडर सहित संगठन के मांग पत्र पर सचिव विद्यालयी शिक्षा रविनाथ रमन की अध्यक्षता में विभाग शासन व संगठन के साथ बैठक हो चुकी है, महानिदेशक विद्यालयी शिक्षा के साथ भी बैठक हो चुकी है। संगठन द्वारा शिक्षा मंत्री उत्तराखण्ड सरकार से कई बार मिलकर शिक्षक हित में फैसला लेने हेतु निवेदन किया जा चुका है। शिक्षा मंत्री डा. धनसिंह रावत द्वारा संगठन के पदाधिकारियों को त्रिस्तरीय कैडर लागू किये जाने हेतु हमेशा आस्वस्त भी किया जाता है, लेकिन होता कुछ नहीं है। अलबत्ता विभिन्न समाचार

पत्रों व सोशल मीडिया के माध्यम से लगातार त्रिस्तरीय कैडर किये जाने का बयान हर दो तीन महीने में एक बार जरूर प्रचारित होता है। लगातार ऐसे बयानों से संगठन व शिक्षको में फिर कुछ आस जगती है लेकिन नतीजा शून्य ही रहता है।

प्रदेशीय जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष विनोद थापा ने अवगत कराया है कि त्रिस्तरीय कैडर की खबरें देखकर और सुनकर शिक्षकों की आँखे व कान थक चुके हैं। जबकि हकीकत यह है कि त्रिस्तरीय कैडर का कथित ड्राफ्ट शासन में फाइलों में बंद पड़ा है उसमें न तो संगठन के प्रस्तावों को शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है और न ही निदेशालय स्तर पर उसमे कोई प्रगति है। जूनियर संगठन की 12 सूत्रीय मांगों और नीतिगत प्रकरणों पर भी संज्ञान नहीं लिया जा रहा है।

हालांकि प्रदेश के शिक्षा मंत्री द्वारा समीक्षा बैठक में पुन: एक बार संज्ञान लेकर विभागीय अधिकारियो को निर्देश दिए हैं कि त्रिस्तरीय कैडर का प्रस्ताव मंत्रिमंडल की बैठक में रखा जाए। जिसका प्रदेशीय जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ उत्तराखण्ड द्वारा स्वागत किया गया है। अब देखना यह है कि त्रिस्तरीय कैडर पर विभाग व शासन स्तर पर मंत्रिमंडल की बैठक में ईमानदारी से प्रयास होंगे या फिर खबरों का शिगूफा छोड़ा जाएगा। इसलिए उत्तराखण्ड के जूनियर हाईस्कूलों के शिक्षक पूछ रहे हैं मंत्री जी! केंद्र के समान पीआरटी/टीजीटी/पीजीटी (त्रिस्तरीय कैडर) अस्तित्व में आएगा कब?

वाइनशॉप का विरोध

शाह टाइम्स संवाददाता

बागेश्वर। कपकोट के शामा में मदिरा की दुकान का विरोध करते हुए ग्रामीण सड़कों में उतरे। उन्होंने मदिरा की दुकान में तालाबंदी करते हुए जोरदार प्रदर्शन किया। जिला पंचायत सदस्य विजया कोरंगा के नेतृत्व में शामा मुख्यालय स्थित शराब की दुकान को हटाने की मांग को लेकर क्षेत्र की महिलाएं शराब की दुकान में पहुंचे।

आक्रोशित महिलाओं ने दुकान में तालाबंदी कर प्रशासन से शीघ्र कार्रवाई की मांग की। क्षेत्र के रातिरकेटी, मलखा-डुंगरचा, कीमू और गोगिना तथा शामा गांव की महिलाएं गुरुवार को यहां स्थित मदिरा की दुकान में पहुंची। महिलाओं ने हाथों में तख्तियां लेकर शराब के विरोध में नारेबाजी की और मुख्यालय तक विशाल रैली निकाली। उन्होंने कहा कि शराब की दुकान से क्षेत्र का सामाजिक माहौल दिन प्रतिदिन खराब होते जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि सार्वजनिक कार्यक्रमों में शराब का सेवन, दुकानों में खुलेआम शराब की बिक्री और जुआ खेलने की घटनाएं बढ़ रही हैं, जिससे युवाओं पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। प्रदर्शन के दौरान महिलाओं ने चेतावनी दी कि यदि क्षेत्र में शराब की बिक्री और इससे जुड़े अवैध गतिविधियों पर रोक नहीं लगी तो वे और बड़ा आंदोलन करने को बाध्य होंगी। साथ ही सामाजिक स्तर पर सार्वजनिक कार्यक्रमों में शराब सेवन, दुकानों में शराब बिक्री और जुआ खेलने पर 25 हजार रुपये तक का जुर्माना लगाए जाने की भी बात कही गई। इस अवसर पर क्षेत्र पंचायत सदस्य पुष्पा देवी, ग्राम प्रधान गोगिना संजय कुमार, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि कीमू उत्तम सिंह दानू सहित चार गांवों के महिला मंगल दलों की सदस्याएं और बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाएं मौजूद रहीं।

मछली उत्पादन बढ़ाने पर दिया ज़ोर

किसान दिवस विकासखण्ड रामगढ़ में कार्यक्रम आयोजित

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। विकासखंड रामगढ़ के सभागार में गुरुवार को किसान दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रदेश किसान मोर्चा अध्यक्ष महेंद्र सिंह नेगी ने की। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी गोपाल गिरी ने किसानों को किसान दिवस का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में शीतलज मत्स्य अनुसंधान केंद्र, भीमताल के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. सुरेश चंद्र ने क्षेत्र में मछली उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया और इसके लिए आवश्यक तकनीकी जानकारी साझा की।

कृषि विभाग की योजनाओं के बारे में मुख्य कृषि अधिकारी ऋतु टम्टा ने किसानों को जानकारी दी, जबकि उद्यान विभाग के हरीश कोहली ने

बागबानी से संबंधित जानकारियां प्रदान की। पशु पालन विभाग के डा. तरुण वैला ने किसानों को पशुपालन योजनाओं के बारे में बताया। इस मौके पर रामगढ़ ब्लॉक के प्रगतिशील कृषकों को प्रशस्ति पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम का संचालन न्याय पंचायत प्रभारी नैकाना, निवेदिता पंत द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश मंत्री किसान मोर्चा हरीश सुनाल, विधायक प्रतिनिधि कमलेश बिष्ट, खंड विकास अधिकारी शुभम अग्रवाल, कृषि विभाग से कृषि एवं भूमि संरक्षण अधिकारी डा. गीतांजली बंगारी, विकासखंड प्रभारी अफरोज अहमद, न्याय पंचायत प्रभारी विधि मेहरा, मीनाक्षी रावत, बीटीएम तृप्ति पांडे और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

डबल मर्डर: दोस्त ही निकले कातिल

शराब पार्टी के दौरान हुआ था, पत्थर से कुचल कर उतार दिया मौत के घाट

- चार हत्यारोपी गिरफ्तार
- चार हत्यारोपी गिरफ्तार
- एसएसपी ने 12 घंटे में उठाया मर्डर मिस्ट्री से पर्दा

मृतकों की फाइल फोटो

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। बीते बुधवार रात मंडी परिसर स्थित गल्ला मंडी क्षेत्र में एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई, जब एक लिव-इन जोड़े की बेरहमी से हत्या कर दी गई। दोनों के सिर और चेहरे पर भारी पत्थर से वार करके उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। घटना की जानकारी मिलते ही इलाके में सनसनी फैल गई, और एसएसपी समेत सभी पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंच गए। 12 घंटे के भीतर ही पुलिस ने इस मामले का खुलासा करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जिनके पास से घटना में प्रयुक्त पत्थर भी बरामद किया है। डबल मर्डर दोस्तों के बीच हो रही शराब पार्टी के बीच हुए एक छोटे से विवाद की वजह बनी। परिजनों की तहरीर के आधार पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर चोरों दोस्त आरोपियों को न्यायालय में पेश करने की तैयारी चल रही है। जानकारी के अनुसार मूलरूप से अल्मोड़ा जिले के लोअर माल रोड, तल्ला खोल्टा निवासी 31 वर्षीय शुभम कुमार टम्टा पुत्र केएल टम्टा, मुखानी क्षेत्र स्थित एक नशा मुक्ति केंद्र में कर्मचारी के रूप में कार्यरत था। बताया जा रहा कि शुभम पिछले कुछ समय से ओखलकांडा ब्लॉक के तल्ली पोखरी निवासी 19 वर्षीय लक्ष्मी पोखरिया पुत्री हेम चंद्र पोखरिया के साथ मुखानी चौराहे के पास किराये के कमरे में लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहा था। जबकि लक्ष्मी एमबीवीजी कॉलेज में बीएससी द्वितीय वर्ष की छात्रा थी और एक मेडिकल स्टोर में काम करती थी। पुलिस जांच में सामने आया है कि बुधवार रात शुभम और लक्ष्मी पार्टी करने के लिए अपने कमरे से निकले थे। दोनों ने अपने चार दोस्तों को भी पार्टी के लिए बुलाया। सभी ने देर रात खाना पैक कराया और नवीन मंडी परिसर स्थित गल्ला मंडी पहुंचे। यहां एक गोदाम की छत पर बैठकर सभी लोग शराब के नशे में पार्टी कर रहे थे। बताया जा रहा कि पार्टी के दौरान नशे की हालत में शुभम व दीपू शर्मा उर्फ ध्रुव के बीच परिवार को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी हुई। इस पर विवाद हो गया। पहले कहासुनी हुई, फिर विवाद इतना बढ़ गया कि माहौल पूरी तरह तनावपूर्ण हो गया। तभी गौरव नेगी उर्फ अक्कू ठाकुर ने शुभम को थप्पड़ मार दिया। अक्कू के थप्पड़ मारने के बाद शुभम अक्कू पर शराब फैंक दी। देखते ही देखते विवाद और बढ़ गया। गुस्से में शुभम अपनी दोस्त लक्ष्मी को लेकर गोदाम की छत से नीचे उतरने लगा, लेकिन पीछे से उसके चारों दोस्त भी नीचे आ गए और गाली-गलौज करने लगे।

इसी दौरान चारो ने पहले शुभम पर हमला बोल दिया। उसके मुंह और सिर पर भारी पत्थर से ताबड़तोड़ वार किए गए। इसी बीच लक्ष्मी ने बीच-बचाव करने और विरोध करने की कोशिश की तो उस पर भी उसी पत्थर से जानलेवा हमला कर दिया गया। आरोपियों ने दोनों के चेहरे पर कई बार वार कर उन्हें बेरहमी से कुचल डाला। दोनों की मौके पर ही दोनों की मौत हो गई। वारदात को अंजाम देने के बाद चारों युवक वहां से फरार हो गए। पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी। पुलिस फुटेज और मोबाईल सर्विलांस के आधार पर चारो आरोपियों तक पहुंची और गौरापड़ाव बाइपास के पास से पुलिस ने गौरव नेगी उर्फ अक्कू ठाकुर पुत्र स्व. उमेश सिंह निवासी वसुंधरा कॉलोनी बरेली रोड धानमिल हल्द्वानी, सौरभ भट्ट उर्फ भटिया पुत्र विनोद चन्द्र भट्ट निवासी तीनपानी खन्ना फार्म डी क्लास बरेली रोड हल्द्वानी, दीपू शर्मा उर्फ ध्रुव पुत्र स्व. नन्हे लाल शर्मा निवासी वसुंधरा कॉलोनी बरेली रोड धानमिल हल्द्वानी, दीपेश लटवाल उर्फ राज पुत्र बहादुर सिंह लटवाल निवासी उत्तरांचल विहार बड़ी मुखानी पीलीकोठी को गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गए आरोपियों के पास से पुलिस ने मृतकों के मोबाईल फोन, गौरव तथा दीपू शर्मा के खून से सने हुए कपड़े व घटना में प्रयुक्त पत्थर को भी बरामद किए हैं। बताया जा रहा कि पकड़ा गया आरोपी गौरव नेगी व उर्फ अक्कू ठाकुर पर गैंगस्टर व हत्या सहित 11 मुकदमें दर्ज है जबकि दीपेश लटवाल पर तीन मुकदमें दर्ज है। दीपू शर्मा व सौरभ भट्ट का भी इतिहास खंगाला जा रहा है। मंडी क्षेत्र में हुए डबल मर्डर का एसएसपी डा. मंजुनाथ टीसी ने देर शाम खुलासा किया। पत्रकार वार्ता में एसपी क्राइम डा. जगदीश चन्द्रा, एसपी सिटी मनोज कत्याल, सीओ अमित कुमार शामिल रहे। एसएसपी डा. मंजुनाथ टीसी ने 12 घंटे के भीतर गुडवर्क करने वाली टीम को ढाई हजार ईनाम की घोषणा की है। टीम में कोतवाल विजय मेहता, एसएसआई रोहताश सिंह सागर, एसओ मुक्तेश्वर जगदीप नेगी, मंडी चौकी प्रभारी प्रेम राम विश्वकर्मा, हीरानगर चौकी प्रभारी कृपाल सिंह, चौकी प्रभारी मालधान धर्मेद्र कुमार, एसआई आरती, हे.कां. इशरार नबी, त्रिलोक बिष्ट, कुंदन कठायत, राहुल सिंह राणा, धीरेन्द्र सिंह अधिकारी, भानु प्रताप ओली, रोहित टम्टा, अशोक रावत, अनिल गिरी, अनिल टम्टा, बलवंत सिंह शामिल रहे।

बाघ के हमले में महिला की मौत

लामाचौड़ के जंगल में तीन किलोमीटर अंदर मिला शव

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। शहर से सटे लामाचौड़ के पीपल पोखरा क्षेत्र में गुरुवार सुबह बाघ ने एक महिला पर हमला कर उसे मौत के घाट उतार दिया। घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल है। ग्रामीणों ने वन विभाग से तत्काल कार्रवाई की मांग की है। जानकारी के अनुसार 65 वर्षीय गंगा देवी पत्नी प्रेम गोस्वामी गांव की अन्य महिलाओं के साथ रोजाना की तरह आज गुरूवार की सुबह जंगल में घास लेने गई थी।

सुबह के समय अचानक झाड़ियों में छिपे बाघ ने महिलाओं के समूह पर हमला कर दिया। इससे पहले कि महिलाएं कुछ समझ पाती, बाघ ने गंगा देवी को दबोच लिया। साथ गई दो महिलाएं शोर मचाते हुए किसी तरह जंगल से भाग निकली और गांव पहुंचकर घटना की जानकारी दी। जब तक ग्रामीण मौके पर पहुंचे तब तक बाघ महिला को लेकर काफी दूर तक चला गया। ग्रामीणों ने महिला की काफी खोजबीन की लेकिन महिला का कोई पता नहीं चला। घटना की सूचना मिलते ही मुखानी पुलिस व वन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंच गई और जंगल में कॉम्बिंग शुरू कर दी। तीन घंटे की कड़ी मेहनत के बाद महिला का शव घटनास्थल से तीन किलोमीटर दूर जंगल में बरामद किया गया। महिला का शव क्षत-विक्षत अवस्था में मिला। क्षेत्र में लगातार बाघ की घटना से ग्रामीणों में काफी आक्रोश है उन्होंने शीघ्र ही बाघ से निजात दिलाने की मांग की। ग्रामीणों ने कहा कि इस क्षेत्र में लगातार बाघ की घटनाएं हो रही लेकिन वन विभाग इसमें कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है। घटना से मृतका के परिवार में कोहराम मचा है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र में लंबे समय से बाघ की गतिविधियां देखी जा रही थी लेकिन प्रभावी कदम नहीं उठाए गए। इस हादसे ने एक बार फिर मानव-वन्यजीव संघर्ष की समस्या को सामने ला दिया है। जंगल से सटे गांवों में रहने वाले लोगों, विशेषकर महिलाओं की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

फतेहपुर क्षेत्र में सुबह एक महिला पर बाघ के हमले की सूचना मिलते ही पूरी टीम ने मौके पर पहुंचकर जंगल में कॉम्बिंग शुरू कर दी और घटनास्थल से तीन किलोमीटर दूर महिला के शव को बरामद कर लिया। इसके साथ ही क्षेत्र में गश्त बढ़ाई गई है वन्य जीव को पकड़ने के लिए पिंजरे लगाए जा रहे हैं. लोगों से अपील की जा रही है कि वो जंगल की ओर ना जाएं।

प्रदीप कुमार असगोला
रेंजर, फतेहपुर रेंज

आज सुबह जंगल किनारे घास लेने गई एक महिला पर वन्यजीव ने हमला किया था. सूचना पर मुखानी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और वन विभाग के साथ कॉम्बिंग कर शव बरामद कर लिया गया है. अब मामले में अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

डा. मंजूनाथ टीसी, एसएसपी,

वायरल वीडियो पर पुलिस का एक्शन

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। सोशल मीडिया पर चार सवारी बैठाकर दोपहिया वाहन चलाने का एक वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस हरकत में आ गई। मामले का संज्ञान लेते हुए एसएसपी डा. मंजूनाथ टीसी ने कार्रवाई के निर्देश दिए। इसके बाद सीपीयू ने संबंधित वाहन चालक का ऑनलाइन चालान कर दिया। जानकारी के अनुसार फेसबुक पर वायरल वीडियो में एक व्यक्ति दोपहिया वाहन पर चार सवारियों को बैठाकर सड़क पर चलता दिखाई दे रहा था। चालक ने यातायात नियमों की अनदेखी करते हुए स्वयं और अपने परिवार की जान जोखिम में डाली थी। एसएसपी के निर्देश पर प्रभारी सीपीयू जगदीश कोहली ने वाहन की पहचान कर चालक के विरुद्ध ऑनलाइन चालान की कार्रवाई की। पुलिस ने लोगों से अपील की है कि चालान से बचने के लिए नहीं, बल्कि अपनी और परिवार की सुरक्षा के लिए यातायात नियमों का पालन करें।

स्काउट एवं गाइड के शिविर का समापन

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। भारत स्काउट एवं गाइड जनपद नैनीताल का सात दिवसीय बेसिक, एडवांस, कब व बुलबुल प्रशिक्षण शिविर का गुरुवार को सेंट पॉल्स स्कूल में समापन हो गया। शिविर में जिले के विभिन्न विद्यालयों से आए करीब 175 स्काउट एवं गाइड प्रतिभागियों ने भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान प्रतिभागियों को स्काउटिंग का इतिहास, बीपी-6, प्राथमिक उपचार, मैप रीडिंग, गांठें, फांसे एवं बंधन, टोली विधि, ध्वज शिष्टाचार, संकेत-चिह्न, हाइक तथा नैतिक मूल्यों से जुड़े विषयों का सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता और सेवा भावना का विकास करना रहा। समापन से एक दिन पूर्व राज्य पुरस्कार वितरण एवं प्रशस्ति पत्र समारोह आयोजित किया गया। इसमें सत्र 2022-23 एवं 2023-24 के लगभग 150 राज्य पुरस्कार प्राप्त छात्र-छात्राओं एवं उनके प्रशिक्षकों को प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। समापन समारोह में राज्य प्रशिक्षक आयुक्त रेवती बिष्ट, जिला संस्था अध्यक्ष नरेंद्र साह, जिला सचिव आरएस जीना, जिला संगठन आयुक्त चंद्र लाल व सीमा सेन, जिला प्रशिक्षण आयुक्त एमएस सैनी, पुष्पा दरम्वाल, जिला स्काउट मास्टर कमलेश सती समेत अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

मंगल कलश यात्रा कल

बिंदुखत्ता। श्री हंस प्रेम आश्रम संजय नगर बिंदुखत्ता में कल यानि 14 फरवरी को भव्य मंगल कलश यात्रा का आयोजन किया जाएगा। इस संबंध में जानकारी देते हुए महात्मा सत्यबोधानंद ने बताया कि 15 फरवरी को प्रस्तावित विराट सद्भावना सम्मेलन से एक दिन पूर्व 14 फरवरी को सुबह 9 बजे बिंदेश्वर महादेव मंदिर से मंगल कलश यात्रा का शुभारंभ होगा। उन्होंने बताया कि यह यात्रा धार्मिक आस्था, सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक चेतना का संदेश लेकर क्षेत्र में भ्रमण करेगी। कलश यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु, विशेष रूप से मातृशक्ति, पारंपरिक परिधानों में सुसज्जित होकर मंगल कलश धारण करेंगी, जिससे वातावरण भक्तिमय और उत्सवमय हो उठेगा। उन्होंने बताया कि 14 फरवरी की शाम 4 बजे से रात्रि 8 बजे तक श्री हंस प्रेम आश्रम परिसर में भव्य सत्संग समारोह एवं संत सम्मेलन का आयोजन होगा।

सिथिया में छात्रों ने दिखाया नेतृत्व और कूटनीतिक कौशल

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। सिंथिया स्कूल में दो दिवसीय मॉडल यूनाइटेड नेशंस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कक्षा 6 से 11 तक के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। छात्रों ने 55 देशों तथा भारत की 25 विभिन्न राजनीतिक पार्टियों का प्रतिनिधित्व करते हुए अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय मुद्दों पर तार्किक एवं प्रभावशाली ढंग से अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद, सुरक्षा परिषद, महासभा और अखिल भारतीय राजनीतिक पार्टी सम्मेलन की समितियां गठित की गई। विद्यार्थियों ने शोध आधारित तर्कों के साथ बहस में भाग लेते हुए नेतृत्व क्षमता, संवाद कौशल और निर्णय प्रक्रिया की समझ का परिचय दिया। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में भाविक जोशी को सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि चुना गया, जबकि आयुष भट्ट, राधा कृष्ण जोशी सहित अन्य विद्यार्थियों को विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित किया गया। अन्य समितियों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। समापन अवसर पर प्रधानाचार्य डा. प्रविंद्र रौतेला ने कहा कि ऐसे आयोजन छात्रों में आत्मविश्वास और वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करते है। कार्यक्रम का संचालन हेमा तिवारी एवं वंडर ब्रेन टीम ने किया। इस मौके पर सुरेश चंद्र मिश्रा, एकेडमिक कोऑर्डिनेटर बीबी जोशी, महेश जोशी, केसी पंत, प्रदीप मित्रा, ऋचा कर्नाटक, पुष्कर सिंह राजपूत, सुनीता तिवारी, रुचिता पांडे आदि मौजूद रहे।

पहले जनता के काम, फिर जाएं भ्रमण पर

विकासखण्ड कार्यालय का सीडीओ अरविन्द कुमार पाण्डे ने किया औचक निरीक्षण

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। मुख्य विकास अधिकारी अरविन्द कुमार पाण्डे ने शुक्रवार को विकास खण्ड हल्द्वानी का औचक निरीक्षण कर विकास खण्ड कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। मुख्य विकास अधिकारी के निरीक्षण के दौरान आरईएपी परियोजना कार्यालय में एक कार्मिक के अनुपस्थित पाए जाने उन्होंने कड़ी नाराजगी व्यक्त की और मौके पर बीडीओ को अनुपस्थित कार्मिक के वेतन रोकने के साथ ही स्पष्टीकरण तलब करने के निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी ने ब्लाक कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कहा कि आमजनता ब्लाक कार्यालय में स्वयं के कार्य हेतु 10 बजे से 2 बजे के मध्य आते हैं, इसलिए अधिकारी क्षेत्र भ्रमण पर 3 बजे के उपरान्त ही जाएं। उन्होंने कहा आमजनता के सभी कार्य ब्लाक से होते हैं, इसलिए जनमानस के कार्यों में कोई कोताही ना हो। उन्होंने कहा कि ब्लाक स्तर के अधिकारी व कर्मचारी क्षेत्र भ्रमण पर जाते हैं, जिस क्षेत्र में भ्रमण के लिए जा रहे हैं उस क्षेत्र का नाम, दिनांक व समय अवश्य भ्रमण पंजिका में अंकन किया जाए। वन स्टॉप सेंटर का निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी ने वन स्टॉप सेन्टर में कार्य करने वाले कर्मचारियों को निर्देश दिये कि आमजनमास के कार्य सुगमता पूर्वक हों और उनकी समस्याओं को त्वरित गति से समाधान किया जाए। निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी के यह भी संज्ञान में आया कि ग्राम पंचायत विकास अधिकारी यशवंत बोहरा विकास खण्ड कार्यालय से भीमताल के लिए कार्यमुक्त होने के उपरांत चार्ज देने से पूर्व मेडिकल अवकाश में चले गये है। जिसको गम्भीरता से लेते हुए मुख्य विकास अधिकारी ने डीपीआरओ को तीन दिनों के भीतर सम्बन्धित अधिकारी का मेडिकल बोर्ड परीक्षण कराने के उपरान्त भीमताल में योगदान आख्या देने के निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान बीडीओ तनवीर अहमद के साथ ही ब्लाक स्तरीय अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद थे।

सीवर लाइन खुदाई से मुख्य बाजार बेहाल, व्यापारियों ने सड़क निर्माण की उठाई मांग

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। मुख्य बाजार क्षेत्र में सीवर लाइन के लिए की गई खुदाई से आमजन और व्यापारियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। जगह-जगह गहरे गड्डे होने और सड़क क्षतिग्रस्त होने के कारण बाजार की आवाजाही बाधित हो गई है, जिससे व्यापार पूरी तरह प्रभावित हो रहा है। व्यापारियों का कहना है कि खुदाई के चलते उनका कारोबार लगभग चौपट हो चुका है। आगामी त्योहारी सीजन, शादी-विवाह और रमज़ान के मद्देनज़र यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो स्थिति और गंभीर हो सकती है। गड्डो के कारण लोग गिरकर चोटिल हो रहे हैं, जबकि रात्रि के समय समस्या और बढ़ जाती है। वहीं उड़ती धूल और मिट्टी से दुकानों का सामान खराब हो रहा है, जिससे व्यापारियों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। देवभूमि व्यापार मंडल ने जल निगम की कार्यदायी संस्था से मांग की है कि मुख्य बाजार की सड़क का निर्माण कार्य जल्द से जल्द पूरा किया जाए। उन्होंने कहा अगर जल्द ही कार्य पूरा नहीं हुआ तो व्यापारी आंदोलन को बाध्य होगे। विरोध करने वालों में देवभूमि व्यापार मंडल के महानगर अध्यक्ष गोविंद सिंह बगड़वाल, प्रदेश उपाध्यक्ष दलजीत सिंह दल्ली, महामंत्री राजीव जायसवाल, रजत महेश्वरी, अनुज देवल, प्रेम चौधरी, अशोक बेलवाल, मोईन बाबा, मोहित अग्रवाल, मनीष वर्मा, जसपाल मालदार, जगमीत सिंह मीती, रविंद्र बाली, त्रिलोक चंद गुप्ता, पवन बिष्ट, लक्ष्मी नारायण मौजूद रहे।

मीडिया सेंटर में पत्रकरों का हैल्थ चैकअप

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की पहल पर लगा स्वास्थ शिविर

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य कर रहे पत्रकारों की जीवन शैली और कार्य की अधिकता एवं अनियमित दिनचर्या को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा पत्रकारों के लिए विशेष चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कैंप आयोजित किए जाने के निर्देशों पर गुरुवार को हल्द्वानी मीडिया सेंटर में सूचना एवं लोक संपर्क विभाग द्वारा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग के सहयोग से एक दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन कराया गया। शिविर में जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल, मुख्य चिकित्सा अधिकारी नैनीताल एवं संयुक्त निदेशक सूचना नितिन उपाध्याय ने शामिल होकर उपलब्ध कराई गई स्वास्थ्य सेवाओं का जायजा लिया गया।

इस मौके पर जिलाधिकारी ललित मोहन रायल ने कहा कि स्वस्थ पत्रकारिता ही सशक्त लोकतंत्र की आधारशिला है, क्योंकि स्वतंत्र, निष्पक्ष और निर्भीक मीडिया शासन-प्रशासन को जवाबदेह बनाते हुए समाज को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार मीडिया प्रतिनिधियों के स्वास्थ्य एवं कल्याण के प्रति संवेदनशील है और उनकी स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करना प्राथमिकताओं में शामिल है। शिविर में एक्स-रे, ईसीजी, बीपी, शुगर, थायराइड एवं विभिन्न रक्त जांच सहित आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। शिविर में जनपद के हल्द्वानी, रामनगर, लालकुआं, कालाढूंगी सहित विभिन्न क्षेत्रों से प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया प्रतिनिधियों तथा उनके परिजनों ने लाभ उठाया। शिविर में डा. आरएस कुंवर, डा. सुधांशु सिंह, डा. पीएस खोलिया, डा. अनीता पवार, डा. विजय, डा. दीप्ति, फार्मेसिस्ट दीपा सुनारी के साथ ही मेडिकल टीम व जिला सूचना अधिकारी गिरिजा जोशी, सूचना अधिकारी अहमद नदीम सहित विभिन्न मीडिया प्रतिनिधि व अन्य लोग मौजूद रहे।

यूपी के ध्रुव व पंजाब की आशीष कौर ने जीता फाइनल मुकाबला

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। ऑप्टिमम टेनिस एकेडमी में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की टेनिस प्रतियोगिता का समापन रोमांचक मुकाबलों के साथ हुआ। अंतिम दिन खेले गए फाइनल मैचों में बालक और बालिका वर्ग के विजेताओं ने शानदार प्रदर्शन कर

खिताब अपने नाम किया। बालक वर्ग के फाइनल में उत्तर प्रदेश के ध्रुव सिंह ने महाराष्ट्र के प्रणव गायकवाड को 6-2, 6-1 से पराजित कर खिताब जीता। बालिका वर्ग के फाइनल में पंजाब की अशीष कौर ने उत्तर प्रदेश की अदिति सिंह को 6-3, 6-2 से हराकर जीत हासिल की। समापन अवसर पर शंकर दत्त सती, बीबी जोशी, टूर्नामेंट डायरेक्टर डीएस रावत ने खिलाड़ियों को ट्रॉफी, टी-शर्ट और प्रमाण पत्र प्रदान किए। प्रतियोगिता की सफलता पर डिस्ट्रिक्ट टेनिस एसोसिएशन नैनीताल व उत्तराखंड टेनिस एसोसिएशन देहरादून के पदाधिकारियों ने डीएस रावत व उनकी टीम को सफल आयोजन के लिए बधाई दी। टूर्नामेंट डायरेक्टर डीएस रावत ने खिलाड़ियों, अभिभावकों तथा जिला व प्रदेश टेनिस एसोसिएशन का सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

16 को राजभवन घेरेगी कांग्रेस

स्वराज आश्रम में कांग्रेस के दिग्गजों ने मनाई रणनीति, प्रीतम, यशपाल रहे मौजूद

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। प्रदेश सरकार की नीतियों के विरोध में कांग्रेस 16 फरवरी को देहरादून में राजभवन घेराव करेगी। इसकी तैयारियों को लेकर गुरुवार को कांग्रेस भवन स्वराज आश्रम में बैठक हुई। बैठक में कुमाऊं मंडल से अधिक से अधिक कार्यकर्ताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया।

साथ ही बैठक में आंदोलन की रणनीति, कार्यकर्ताओं की संख्या, परिवहन व्यवस्था, अनुशासन और स्थल प्रबंधन जैसे विषयों पर चर्चा हुई। कांग्रेस चुनाव प्रचार समिति के अध्यक्ष एवं विधायक प्रीतम सिंह ने कहा कि यह आंदोलन प्रदेश की जनता के हक और अधिकारों की रक्षा के लिए है। कांग्रेस पार्टी जनभावनाओं को लेकर पूरी ताकत के साथ राजभवन घेराव करेगी और प्रदेशभर से कार्यकर्ता बड़ी संख्या में देहरादून पहुंचेंगे। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि प्रदेश सरकार हर मोर्चे पर विफल रही है और जनता महंगाई, बेरोजगारी तथा विकास के ठहराव से त्रस्त है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी सदस्य एवं पूर्व प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी लोकतांत्रिक तरीके से जनता की आवाज को उठाने का कार्य कर रही है। शहर विधायक सुमित हृदयेश ने कहा कि हल्द्वानी विधानसभा क्षेत्र से बड़ी संख्या में साथियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को अलग-अलग जिम्मेदारियाँ सौंपी गई है तथा सभी ने एकजुट होकर आंदोलन को सफल बनाने का संकल्प लिया है। बैठक में महानगर अध्यक्ष एडवोकेट गोविंद सिंह बिष्ट, जिलाध्यक्ष राहुल छिमवाल, खटीमा विधायक भुवन कापड़ी, किच्छा विधायक तिलक राज बेहड़, नानकमत्ता विधायक गोपाल सिंह राणा, पूर्व सांसद महेंद्र सिंह पाल, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गोविंद सिंह कुंजवाल, पूर्व कैबिनेट मंत्री हरीश चंद्र दुर्गापाल, पूर्व विधायक प्रेमानंद महाजन, हेमेश खर्कवाल, ललित फर्स्वाण, खजान चंद्र गुड्डू, बालकिशन, सरदार नवतेज पाल सहित कई कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मंदिर के रास्ते में अश्लीलता पर हंगामा

मंदिर समिति के अध्यक्ष ने पुलिस को सौंपी तहरीर

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। गुरूवार की सुबह रानीबाग शीतला माता मंदिर में उस समय हंगामा हो गया जब एक विशेष समुदाय का युवक मंदिर के रास्तें में एक युवती के साथ अश्लील हरकत कर रहा था।

मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने युवक व युवती को पकड़कर काठगोदाम मल्ला पुलिस चौकी ले आए और आरोपी युवक के खिलाफ कार्रवाई की मांग करने लगे। देर शाम समिति के अध्यक्ष सचिन साह ने भी युवक के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर पुलिस को तहरीर सौंपी। बता दें कि रानीबाग स्थित माता शीतला मंदिर में रोजना ही भक्तों का तांता लगा रहता है। गुरूवार की सुबह मंदिर समिति के अध्यक्ष सचिन साह जब मंदिर परिसर क्षेत्र में घूम रहे थे तभी मंदिर के रास्ते में एक युवक युवती के साथ बैठकर अश्लील हरकत कर रहा था। यह नजारा देख मंदिर समिति के लोगों ने युवक को पकड़ लिया और उससे जानकारी जुटाई तो पता लगा कि युवक एक विशेष समुदाय से है। देखते ही देखते वहां पर लोगों की भीड़ एकत्र हो गई और लोगों ने युवक व युवती को पकड़कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया। युवक पर कार्रवाई की मांग को लेकर लोगों की भीड़ काठगोदाम पुलिस चौकी में एकत्र हो गई। वहीं मंदिर समिति के अध्यक्ष सचिन साह ने पुलिस को दी तहरीर में कहा कि मंदिर को जाने वाले रास्ते आए दिन इस तरह की हरकतें आम हो गई हैं जिस कारण से मंदिर की आस्था तो धूमिल हो ही रही है, भक्तों पर भी इसका गलत प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने पुलिस प्रशासन से इस तरह की हरकतें करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है।

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. राना** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजडू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं कृष्णा लोहा भण्डार, प्रथम तल काला ढुंगी रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड) से प्रकाशित।

सम्पादक:
एस.एन. राना

*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
☎05946-250286

मुख्यालय:
मोबाइल-9720007290
R.N.I. No. UTTHIN/2003/10264
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

विकास कार्यों में न बरतें लापरवाही: चकमा

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के सदस्य निरुपम चकमा ने की विकास कार्यो की समीक्षा

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के सदस्य निरुपम चकमा ने गुरुवार को जिला सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ जनपद में अनुसूचित जनजाति के हित में हो रहे विकास कार्यो की गहन समीक्षा बैठक की। उन्होंने कहा कि अनुसूचित जनजाति के परिवारों को शतप्रतिशत योजनाओं से आच्छादित करें ताकि जनजाति परिवारों को जीवन स्तर बेहतर हो सकें व मुख्य धारा से जुड़ सकें।

श्री चकमा ने जनजाति क्षेत्रों में पीएम जनमन, स्वनिधि, धरती आभा, पेंशन, शादि अनुदान, आंगनबाड़ी, स्वास्थ्य, जेजेएम, जनऔषधी, पीएम आवास, अटल आवास, शिक्षा, छात्रावास, छात्रवृत्ति, वन अधिकार अधिनियम आदि योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की। उन्होने कहा जनजाति के लोगों की भूमि की अवैध खरीद-फरोख्त के प्रकरण संज्ञान में आए है। इसके लिए जिला स्तरीय रिव्यू कमेटी द्वारा समीक्षा करते हुए इस पर रोक लगाने के लिए प्रभावी कार्यवाही की जाए। उन्होंने कहा कि अनुसूचित जाति के लोगों को सरकारी योजनाओं में ऋण देने के लिए बैंकों द्वारा आना-कानी की जा रही है। इसकी भी समीक्षा करने के निर्देश जिलाधिकारी को दिए। उन्होंने कहा कि अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में वित्तीय जागरूकता शिविर आयोजित करते हुए बैंकिंग सेवाओं को और सुदृढ़ किया जाए। श्री चकमा ने जनजाति क्षेत्रों में सभी विभागीय अधिकारी समन्वय बनाते हुए सरकार की सभी योजनाओं से आच्छादित करते हुए सम्पूर्णता मोड़ पर कार्य करें ताकि उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सकें। उन्होंने जनजातिय क्षेत्रों में किये जा रहे योजना कार्यो की धरातलीय रिपोर्ट निर्धारित प्रारूप पर आयोग को भेजने के निर्देश दिये।

जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया ने अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में कराये जा विकास कार्यो की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी आयोग के निर्देशों का गम्भीरता से लेते हुए कार्यो को धरातल पर उतारे तथा आयोग द्वारा निर्धारित प्रारूप पर सूचना त्वरित दें।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी दिवेश शाशनी, उप सचिव अनुसूचित जनजाति आयोग कुशल देव वर्मा, वरिष्ठ अन्वेषक आकाश त्रिपाठी, सार्थक बडोनी, जिला विकास अधिकारी सुशील मोहन डोभाल, मुख्य शिक्षा अधिकारी केएस रावत, जिला समाज कल्याण अधिकारी अमन अनिरूद्ध, एसीएमओ डा. हरेन्द्र मलिक, जिला पंचायतराज अधिकारी विद्या सिंह सोमनाल, जिला युवा कल्याण अधिकारी बीएस रावत, जिला सेवा योजन अधिकारी राजेश दुर्गापाल, अग्रणी बैंक अधिकारी शिखा नौटियाल, जिला प्रोवेशन अधिकारी व्योमा जैन, जिला अल्प संख्ययक कल्याण अधिकारी नन्दनी तोमर अधिशासी अभियंता सिंचाई बीएस डांगी, लघु सिंचाई सुशील कुमार, लोनिवि गजेन्द्र सिंह आदि मौजूद थे।

वित्तीय अनियमिताओं को लेकर दो अधिकारी निलंबित

शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। तीन साल पुराने बाजपुर चीनी मिल के बीज ढुलाई मामले में वित्तीय अनियमितता करने पर उत्तराखंड सहकारी चीनी मिल संघ लि. के एमडी ने प्रभारी मुख्य गन्ना विकास अधिकारी और ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक को निलंबित कर दिया है। दोनों अफसर वर्तमान में नादेही चीनी मिल में तैनात थे। अब एमडी ने दोनों को डोईवाला चीनी मिल से अटैच किया है। दो अफसरों पर कार्रवाही से मिल कर्मियों में हड़कंप मचा हुआ है।

बता दें कि नादेही चीनी मिल में तैनात प्रभारी मुख्य गन्ना विकास अधिकारी डा. राजीव अरोरा और ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक श्रीमिति दीपिका सैमवाल वर्ष 2022-23 में बाजपुर चीनी मिल में इन्ही पदों पर तैनात थे। बताते है कि दोनों की गन्ना बीज परिवहन के कार्यों में वित्तीय अनियमितताओं की शिकायत मिली थी। मामले में एमडी ने किच्छा चीनी मिल के अधिशासी निदेशक की अध्यक्षता में तीन सदस्य कमेटी का गठन कर जांच कराई। बीते दिसंबर माह में समिति ने अपनी रिपोर्ट सहकारी चीनी मिल संघ को सौंपी। समिति ने अपनी रिपोर्ट में गन्ना परिवहन के कार्य में दोनों अफसरों द्वारा वित्तीय अनियमतता करना दिखाया गया। साथ ही फर्जीवाड़ा दिखाकर बिना बिलों के फर्जी भुगतान करते हुए चीनी मिल को वित्तीय हानि पहुंचाने का दोषी माना। इसके चलते चीनी मिल बाजपुर को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा। उत्तराखंड सहकारी चीनी मिल संघ लि.एमडी पीसी दुम्का ने दोनों अफसरों को तत्काल प्रभाव से निलंबित करते हुए उनके विरुद्ध विभागीय अनुशासनात्मक कार्रवाई की संतुति की। तथा दोनों अफसरों को चीनी मिल डोईवाला से संबंद्ध कर दिया। नादेही चीनी मिल के जीएम सीएस इमलाल ने बताया कि दोनों अफसरों को एमडी ने निलंबित कर डोईवाला चीनी मिल से अटैच करने के आदेश दिए है।

आम हड़ताल में भोजनमाताओं ने की भागेदारी

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। केंद्रीय ट्रेड यूनियन फेडरेशनों द्वारा 4 लेबर कोड के विरुद्ध आहूत देशव्यापी आम हड़ताल में प्रगतिशील भोजनमाता संगठन के नेतृत्व में रामनगर क्षेत्र की भोजनमाताओं ने कार्य बहिष्कार कर भागीदारी की। इस दौरान अपनी सभा कर और शहर में जुलूस निकालकर उन्होंने इन 4 लेबर कोड्स को तत्काल रद्द करने की मांग की।

देवभूमि व्यापार मंडल कार्यालय में आयोजित भोजनमाताओं की सभा को सम्बोधित करते हुये प्रगतिशील भोजनमाता संगठन की अध्यक्ष शारदा देवी ने कहा कि ये 4 लेबर कोड मजदूरों की गुलामी के दस्तावेज हैं। इनमें मजदूरों के ट्रेड यूनियन अधिकारों और हड़ताल के संवैधानिक अधिकार पर भारी हमले बोले गये हैं। उन्होंने कहा कि आज उत्तराखंड सरकार मात्र 3000 रु महीना पर भोजनमाताओं से बेगारी करा रही है, और उन्हें ये मानदेय भी साल में 11 महीने ही मिलता है। उन्होंने कहा कि यदि सरकार ने भोजनमाताओं का मानदेय नहीं बढ़ाया तो प्रदेश की भोजन माताएं अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाने को मजबूर होंगी। सभा को सम्बोधित करते हुए इंकलाबी मजदूर केंद्र के महासचिव रोहित रुहेला ने कहा कि ये लेबर कोड देशी-विदेशी पूंजीपतियों की मांग पर लाये गये हैं। इनमें फिक्स टर्म एम्प्लॉयमेंट के नाम पर मजदूरों को जब चाहे काम पर रखो और जब चाहे निकाल दो अर्थात 'हायर एंड फायर' का अधिकार पूंजीपतियों को सौंप दिया गया है। उत्तराखंड परिवर्तन पार्टी के महासचिव प्रभात ध्यानी ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की धामी सरकार आज खुलकर मजदूरों-किसानों और छात्रों-नौजवानों के खिलाफ खड़ी हो चुकी है। इनके राज में महिलाएं एकदम असुरक्षित हैं। प्रगतिशील महिला एकता केंद्र की पूर्व अध्यक्ष शीला शर्मा ने कहा कि इन लेबर कोड्स में महिला मजदूरों से रात की पाली में भी काम कराने का अधिकार पूंजीपतियों को सौंप दिया गया है, ताकि वे सस्ते मजदूर के रूप में उनका इस्तेमाल कर अधिक से अधिक मुनाफा कमा सकें। इस दौरान गीता सत्यवली, ममता देवी, विमला देवी, कमला रावत, नंदी देवी, हंसी देवी, आनंदी देवी, शांति देवी, बाला देवी, पदमा देवी, दीपा देवी आदि मौजूद रहे।

पूर्व विधायक ठुकराल व ग्राम प्रधान गगनदीप ने किया निर्माण कार्य का शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। जनसंपर्क और विकास कार्यों की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल ने ग्राम बुक्सौरा सुक्खा पाड़ा में विकास कार्यों का आगाज किया।

ठुकराल ने ग्राम प्रधान गगनदीप सिंह के साथ मिलकर काशी बनर्जी के घर से मंदिर तक और मुन्नी देवी के घर तक निर्मित होने वाली 150 मीटर सीसी रोड एवं नाली निर्माण कार्य का विधिवत फीता काटकर शुभारंभ किया। इस विकास कार्य की शुरुआत होने से स्थानीय ग्रामीणों को जलभराव और आवागमन की समस्या से बड़ी राहत मिलेगी। इस अवसर पर उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल ने कहा कि क्षेत्र का सर्वांगीण विकास उनकी मुख्य प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि गांव की आंतरिक सड़कों और नालियों का सुदृढ़ीकरण बुनियादी जरूरत है और वे जनता की समस्याओं के समाधान के लिए सदैव प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने ग्राम प्रधान और स्थानीय लोगों को आश्वस्त किया कि भविष्य में भी क्षेत्र की विकास योजनाओं को तेजी से धरातल पर उतारा जाएगा। कार्यक्रम के दौरान करन रंधावा, राजेन्द्र मौर्य, पप्पू मौर्य, रूदल प्रसाद, अंजनी कुमार, होरी हाल्दार, सुदश्रन मौर्य, दरबारा सिंह, अजय नारायण सिंह, रेशम सिंह, निशित विश्वास, हैप्पी सिंह, वरूण सरकार, जग्गा रंधावा, जसपाल सिंह, देव चंद्र, शिंदर सिंह, सुक्खा सिंह, हरमन सिंह, पान सिंह, जय राम, याद राम, सुमरन, हरि सरकार, मुन्नी देवी, सुशीला राय, काशी बनर्जी, किरन सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कांवड़ यात्रा को लेकर प्रशासन सतर्क, रॉन्ग साइड भंडारे हटवाए

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। कांवड़ यात्रा के दौरान हरिद्वार से गंगाजल लेकर लौट रहे शिव भक्तों की सुरक्षा को लेकर स्थानीय प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। श्रद्धालुओं की सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बाजपुर कोतवाल नरेश चौहान ने नेशनल हाईवे स्थित ग्राम महेशपुरा पहुंचकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने सड़क सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान रॉन्ग साइड में लगाए गए भंडारों के पंडालों को तत्काल प्रभाव से हटवाकर दूसरी सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित कराया गया, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना की आशंका न रहे। गुरुवार को कोतवाल नरेश चौहान ने संबंधित आयोजकों को निर्देश दिए कि भंडारे एवं पंडाल केवल निर्धारित स्थानों पर ही लगाए जाएं और यातायात व्यवस्था में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न करें। उन्होंने स्पष्ट कहा कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा प्रशासन की प्राथमिकता है और इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। पुलिस प्रशासन द्वारा कांवड़ यात्रा मार्ग पर लगातार निगरानी रखी जा रही है, जिससे शिव भक्त सुरक्षित एवं सुचारु रूप से अपनी यात्रा पूरी कर सकें। इस दौरान ग्राम प्रधान पति लीलाधर सैनी, समाजसेवी जितेंद्र पासी सहित अन्य लोग भी उपस्थित रहे।

कार्निवल और मुख्यमंत्री के आगमन की तैयारियों का महापौर ने लिया जायजा

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर । महापौर विकास शर्मा का एक साल का कार्यकाल पूरा होने के उपलक्ष्य में गांधी पार्क में आयोजित होने वाले यूएस नगर कार्निवल सरस मेला और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर महापौर विकास शर्मा ने नगर आयुक्त शिप्रा जोशी पाण्डेय, नगर निगम की टीम और पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ कार्यक्रम स्थल का गहन निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान महापौर ने अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को दस दिवसीय इस आयोजन को भव्य और दिव्य बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने तैयारियों में जुटे अमरनाथ जी सेवा मंडल के पदाधिकारियों के साथ भी विस्तृत चर्चा की।

निरीक्षण के दौरान महापौर विकास शर्मा ने बताया कि 14 फरवरी को उनके कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर गांधी पार्क में दस दिवसीय यूएस नगर कार्निवल सरस मेला शुरू होने जा रहा है। इस महोत्सव का भव्य शुभारंभ मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा किया जाएगा। इस दौरान मुख्यमंत्री रुद्रपुर के विकास के लिए करोड़ों रुपये की योजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास भी करेंगे।

कार्यक्रम की रूपरेखा साझा करते हुए महापौर ने बताया कि मुख्यमंत्री सबसे पहले इंदिरा चौक पर नवनिर्मित त्रिशूल का लोकार्पण करेंगे और उसके पश्चात वह एक विशाल शिव बारात के साथ गांधी पार्क पहुंचेंगे, जहां वह विशाल

जनसमूह को संबोधित करेंगे।

महोत्सव के पहले दिन शाम को गांधी पार्क में श्री अमरनाथ जी सेवा मंडल की ओर से आयोजित होने वाले विशाल श्री शिव जागरण का शुभारंभ भी मुख्यमंत्री द्वारा ज्योति प्रज्वलित कर किया जाएगा। 14 फरवरी से 23 फरवरी तक चलने वाले इस कार्निवल में प्रतिदिन शाम को विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति होगी, जिसमें कई नामचीन कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे। निरीक्षण के दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष सुनील ठुकराल, श्री अमरनाथ जी सेवा मंडल के अध्यक्ष अजय चड्ढा, राजन राठौर, अमित अरोरा बॉबी, करुण गुप्ता, विवेकदीप सिंह सहित नगर निगम के तमाम अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

खाद्य पदार्थो में मिलावट की रोकथाम को खाद्य विभाग ने चलाया अभियान

खाद्य सुरक्षा प्रवर्तन टीम ने कई स्थानों पर चेकिंग कर लिए नमूने

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। आगामी होली त्यौहार के दृष्टिगत आम जनमानस को सुरक्षित एवं गुणवत्तायुक्त खाद्य एवं पेय पदार्थों की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने हेतु व खाद्य पदार्थो में मिलावट की प्रभावी रोकथाम हेतु खाद्य सुरक्षा आयुक्त, उत्तराखण्ड सचिन कुर्वे के निर्देशों के अनुपालन में खाद्य सुरक्षा उपायुक्त, कुमांऊ मण्डल, डा. राजेन्द्र सिंह कठायत के नेतृत्व में जनपद ऊधम सिंह नगर की खाद्य सुरक्षा प्रवर्तन टीम के साथ जनपद अन्तर्गत विशेष चैकिंग अभियान चलाया गया।

अभियान के तहत प्रवर्तन टीम द्वारा पुलभट्टा किच्छा में सिरौलीकंला खुर्द स्थित मिल्क चिलिंग सेंटर/प्लांट का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। संदेह के आधार पर उक्त प्रतिष्ठान प्लांट से 02 दूध के नमूने जांच हेतु एकत्रित कर राज्य खाद्य एवं औषधि प्रयोगशाला, रुद्रपुर, ऊधम सिंह नगर को परिक्षण हेतु भेजे गये, तथा निरीक्षण के समय मिल्क चिलिंग यूनिट में साफ-सफाई की उचित व्यवस्था न होने व गन्दगी पाये जाने तथा खाद्य सुरक्षा मानकों के प्रावधानों के अनुसार मिल्क चिलिंग सेंटर का संचालन न किये जाने पर उक्त को नोटिस निर्गत करते हुए उनके विरूद्ध माननीय सक्षम न्यायालय में वाद दायर करने की कार्यवाही नियमानुसार प्रचलित कर दी जायेगी। इसके पश्चात् ऑयल व फ्लोर मिल शक्तिफार्म का निरीक्षण कर वहां से भी संदेह के आधार पर 01 नमूना सरसों के तेल व 01 नमूना आटे का जांच हेतु लिया गया, जिसे परीक्षण हेतु राजकीय विश्लेषणशाला को भेज दिया गया है। इस निमार्ण इकाई से भी प्रतिष्ठान में साफ-सफाई व स्वछता रखने एवं मानकों के अनुरूप खाद्य तेल व आटे का निर्माण, पैकिंग व विक्रय करने के निर्देश मौके पर ही दिये गये। इसके अतिरिक्त शक्तिफार्म, सितारगंज में शीतल पेय की वितरक फर्म श्री श्याम एजेंसीज का निरीक्षण कर वहां से भी कोल्डड्रिंक के 02 नमूने जांच हेतु लेकर प्रयोगशाला को परीक्षण हेतु भेज दिये गये हैं। उक्त फर्म के निरीक्षण के समय श्री श्याम एजेंसीज के पास एफएसएसएआई का फूड लाईसेंस नहीं पाया गया तथा इस सम्बन्ध में शीतल पेय आपूर्तिकर्ता फर्म ओम एजेन्सीज कुंडा, काशीपुर को भी प्रावधानों का अनुपालन न करने के कारण नोटिस जारी कर सम्बन्धित दोनों फर्मों के विरूद्व खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के अन्तर्गत सक्षम न्यायालय में वाद दायर करने की विधिक कार्यवाही की जायेगी। सभी प्रतिष्ठानों स्वामी/विक्रेताओं को संदिग्ध खाद्य पदार्थों का विक्रय नहीं करने के निर्देश दिये गये तथा समस्त खाद्य कारोबारकर्ताओं को निर्देशित किया गया है कि किसी भी खाद्य कारोबारकर्ता द्वारा यदि एफएसएसए एक्ट 2006 के मानकों के अनुरूप खाद्य पदार्थो का विक्रय, निर्माण, संग्रहण, वितरण इत्यादि सही नहीं पाये जाने वाले पर एवं बिना पंजीकरण/लाईसेंस के खाद्य कारोबार किया जाता है तो उसके विरूद्व कठोर विधिक कार्यवाही की जायेगी, साथ ही सभी खाद्य कारोबारियों को निर्देशित किया गया कि खाद्य पदार्थों के क्रय बिलों पर एफएसएसएआई लाईसेंस संख्या अंकित होना अनिवार्य है।

बाह्य प्रदेशों से केवल पंजीकृत/लाईसेंसधारी खाद्य कारोबारकर्ता से ही खाद्य पदार्थों को क्रय करने के निर्देश दिये, एवं खाद्य पदार्थों के क्रय विक्रय करने का दैनिक रिकोर्ड रखने के लिए कहा गया। साथ ही आम जनमानस से अपील की गई कि खाद्य एवं पेय पदार्थों को खरीदते समय निर्माण तिथि/उपभोग की तिथि व खाद्य कारोबारकर्ता का खाद्य लाईसेंस एवं पंजीकरण अवश्य देख लें तथा निम्न गुणवत्ता, अस्वछकर एवं अस्वस्थ्यकर खाद्य सामग्री विक्रय किये जाने पर टोल फ्री नम्बर 18001804246 पर शिकायत कर सकते हैं। अभियान दल में खाद्य सुरक्षा उपायुक्त, कुमांऊ मण्डल, डा. राजेन्द्र सिंह कठायत, ललित मोहन पाण्डे सहायक आयुक्त, ऊधम सिंह नगर, अपर्णा साह, वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी, काशीपुर एवं आशा आर्या खाद्य सुरक्षा अधिकारी रुद्रपुर आदि सम्मिलित रहे।

यूकेडी मजबूती से लड़ेगी विधानसभा का चुनाव: त्रिपाठी

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। उत्तराखंड क्रांति दल के पूर्व केंद्रीय अध्यक्ष पुष्पेश त्रिपाठी ने कहा कि उत्तराखंड क्रांति दल आगामी विधानसभा चुनाव मजबूती से लड़ेगा और सभी विधानसभा सीटों पर प्रत्याशी उतारे जाएंगे, यदि राज्य के अन्य जनपक्षीय संगठन साथ में आते हैं तो दल चर्चा को तैयार है। इस वक्त दल के प्रति लोगों का रुझान बहुत अच्छा है।

रामनगर में पत्रकारों से बातचीत करते पूर्व विधायक व उत्तराखंड क्रांति दल के वरिष्ठ नेता पुष्पेश त्रिपाठी ने कहा कि राज्य गठन के 25 साल बाद भी उत्तराखंड कि दशा एवम दिशा नहीं बदल पाई है, सोच के उलट काम हुए हैं,क्षेत्रीय दल उत्तराखंड क्रांति दल को राज्य के लोगों का साथ अभी तक नहीं मिल पाया है। इससे राज्य की स्थिति भयानक दिशा की ओर जा रही है। पूरा राज्य माफियाओं की चपेट में आ गया है, राष्ट्रीय दलों ने राज्य में जमीनों के दलाल पैदा कर दिए गए हैं, जमीन की लूट खसोट जारी है। उन्होंने कहा कि दल के कमजोर होने से जनता का बहुत बड़ा नुकसान हुआ है, बेरोजगारी बढ़ती जा रही है, स्वास्थ्य सेवाओं का स्तर गिरता जा रहा है,शिक्षा की हालत बहुत खराब है। पहाड़ों के अस्पताल चिकित्सक एवं स्टाफ के अभाव में बंदी की ओर है। रोजगार के अभाव में बेरोजगार परेशान है, दूसरे राज्यों को पलायन कर रहे हैं, राज्य बनने के बाद पहाड़ों में पलायन बड़ा है। खेती चौपट हो रही है जो की बहुत चिंता का विषय है। उन्होंने भाजपा एवं कांग्रेस की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि होर्डिंग एवं पोस्टर के जरिए लोगों को गुमराह करने का कार्य किया जा रहा है। धरातल पर भयानक स्थिति बनती जा रही है। उन्होंने केंद्र व प्रदेश सरकार पर तीखे प्रहार करते हुए कहा कि रोज-रोज नए-नए नियम बनाकर जनता को बेहाल कर दिया है, भाजपा का काम लोगों को केवल लाइन पर लगाने का रहा है। हिंदू ,मुस्लिम, अगड़ा, पिछड़ा कर लोगों को बांटा जा रहा है। उन्होंने खुशी व्यक्त की कि राज्य का नौजवान आज जाग रहा है और ज्वलंत मुद्दों पर अपनी बुलंद आवाज उठा रहा है और युवाओं का रुझान उत्तराखंड क्रांति दल की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने सभी से एक बार क्षेत्रीय दल को मजबूत करने की अपील भी की है। इस दौरान केंद्रीय उपाध्यक्ष इंद्र सिंह मनराल, भूपाल सिंह तड़ियाल, चंद्रशेखर, भोलादत्त आदि मौजूद रहे।

एक नजर

पुलिस ने जारी किया कावड़ यात्रा-रूठ डाइवर्जन

शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। कावड़ यात्रा के दौरान पुलिस ने शिव भक्तों के सुलभ यात्रा को लेकर रूट डायवर्जन प्लान घोषित किया है, जिसमें जसपुर-भूतपुरी मार्ग पर भारी वाहन पूर्णत बंद रहेंगे।

रोडवेज बस, कार, रिक्शा आदि सवारी वाहन के लिए रूट जेनेसिस तिराह-सूतमिल रोड-पृथ्वीराज चौक- बाजार चौकी- लकड़ी मंडी-पतरामपुर फ्लाई ओवर- हाइवे-टोल टैक्स। लकड़ी मंडी चौक से सुभाष चौक तक कावड़ वाहनों तथा अति आवश्यक वाहन को छोड़कर पूर्णत बंद रहेगा कालियावाला मोड़- बीएसवी- नारायणपुर- संधु ढाबा- गुरुद्वारा-शिवराजपुर पट्टी हाइवे कट तक कावड़ वाहनों तथा अति आवश्यक वाहन को छोड़कर सभी वाहनों के लिए पूर्णत बंद रहेगा। सुभाष चौक-कोतवाली रोड- ठाकुर मंदिर- गांधी पार्क रिक्शा/कार के लिए पूर्णत बंद रहेगा। ठाकुरद्वारा चुंगी - मव्वाडाबरा- नादेही बॉर्डर-भूतपूरी रोड अति आवश्यक वाहनों को छोड़कर सभी के लिए (रिक्शा/कार) पूर्णत बंद रहेगा। कोतवाल राजेन्द्र सिंह डांगी ने जनता से अपील है की कावड़ यात्रा को सकुशल संपन्न कराए जाने हेतु सहयोग प्रदान करें, ड्यूटी पर मौजूद कर्मचारीगण से अनावश्यक बहस ना करें।

रेड क्रॉस सोसाइटी के निशुल्क शिविर का भाजपा जिलाध्यक्ष ने किया शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी शाखा जसपुर के सभी पदाधिकारी सदस्यों, नगर के समाजसेवियों के सहयोग से महाशिवरात्रि पर्व पर पूर्व के लगभग 20 वर्षों की तरह इस बार भी निशुल्क तीन दिवसीय चिकित्सा शिविर का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर सभी ने भगवान भोले से प्रार्थना की कांवड़ यात्रा शांति पूर्वक बीते, देश ,विश्व में भाईचारा एवं शांति बनी रहे। इस अवसर पर पूर्व विधायक डॉक्टर शैलेंद्र मोहन सिंगल, भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज पाल, नगर पालिका अध्यक्ष नौशाद सम्राट, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चिकित्सा अधीक्षक धीरेंद्र गहलोत, अशोक खन्ना, हरिओम सिंह, तरुण गहलोत, अंकुर बंसल, राजकुमार राज, डा. वीएस गौतम, निशांत अरोड़ा, डॉक्टर शकील अहमद, उस्मान अहमद, कृपाल सिंह, डॉक्टर सिंघानिया, डॉक्टर शिवकिशोर, नरेश कुमार, यशपाल शर्मा, डा. बृजेश, मुकेश कुमार, डॉक्टर बाबू रंजन राय, अभिषेक कुमार आदि उपस्थित रहे।

त्रिमूर्ति महाशिवरात्रि महोत्सव धूमधाम से संपन्न

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। ब्रह्माकुमारीज के बाजपुर केंद्र में 90वीं त्रिमूर्ति महाशिवरात्रि महोत्सव का गुरुवार को आयोजन बड़े श्रद्धा, उत्साह और आध्यात्मिक वातावरण के बीच किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने सहभागिता कर महोत्सव को गरिमामय बनाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बाजपुर केंद्र की संचालिका बीके ज्योति दीदी ने महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिवरात्रि के वास्तविक महत्व को समझाते हुए बताया कि यह पर्व आत्म जागृति, बुराइयों के त्याग और ईश्वरीय मार्ग पर चलने का संदेश देता है। साथ ही संस्था द्वारा किए जा रहे आध्यात्मिक एवं सामाजिक कार्यों की जानकारी भी उपस्थित जनसमूह को दी गई। इस अवसर पर शिव ध्वजारोहण किया गया तथा सभी ने अपनी बुराइयों को त्यागने और उन्हें शिव पर अर्पित करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में केक कटिंग के साथ महोत्सव की खुशी साझा की गई तथा अंत में सभी को प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रम में वार्ड नंबर 1 की पार्षद सिमरन चान्ना एवं आदित्य चान्ना मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ ब्रह्माकुमारी परिवार के बीके गायत्री, पंकज, राकेश, किशन, अनीता, वेद, ममता, शिवम, रीना गणेश, सीमा, बृजेश सहित काफी संख्या में भाई-बहन उपस्थित रहे। महोत्सव के दौरान पूरे परिसर में भक्ति, शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा का वातावरण बना रहा।

चोरी के खुलासे की मांग को लेकर दिया ज्ञापन

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित मोर्चा के द्वारा नगर अध्यक्ष इन्दर पाल सिंह के नेतृत्व में कोतवाली पहुंचकर रामनगर हल्द्वानी मार्ग हल्द्वानी बस अड्डा क्षेत्र में चोरी के खुलासे की मांग को लेकर कोतवाल को संबोधित एक ज्ञापन कोतवाली के वरिष्ठ उप निरीक्षक महेंद्र प्रसाद को दिया।

दिए गए ज्ञापन में उन्होंने बताया कि बीते 07 फरवरी की रात को रामनगर हल्द्वानी मार्ग बस अड्डे पर कुछ अज्ञात लोगों के द्वारा लोक तोड़ कर बसों के बैटरे और दुकानों खोकों से सब्बल से ताले तोड़कर दुकानों में चोरी कर ली।दुकान स्वामियों द्वारा कोतवाली पुलिस को तहरीर भी दी गई थी।अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है।कोतवाल सुशील कुमार ने जल्द ही चोरों को पकड़ने का आश्वासन दिया है। उन्होंने क्षेत्र में कैमरे और लाइट लगवाने की भी बात कही है। इस दौरान राहुल,शुभम कुमार, अक्षय, दिवाकर, दीपक वाल्मीकि, विशाल वाल्मीकि, सार्थक, अंश, मोहित, आकाश उत्तम आदि मौजूद रहे।

मीडिया क्लब की नई टीम का गठन

शाह टाइम्स संवाददाता

उमर अली व शाहनूर अली बने वरिष्ठ उपाध्यक्ष

गदरपुर। मीडिया क्लब गदरपुर की पुरानी कार्यकारिणी में हुए बदलाव के बाद गुरुवार को एक महत्वपूर्ण बैठक नगर के एक प्रतिष्ठान में आयोजित की गई, जिसमें नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई। बैठक की अध्यक्षता क्लब अध्यक्ष मुकेश पाल ने की, जबकि संचालन महामंत्री किशन गुप्ता ने किया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष राकेश अरोरा सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

बैठक में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर उमर अली और शाहनूर अली को जिम्मेदारी सौंपी गई। उपाध्यक्ष के रूप में नितिन छावड़ा, रिजवान अख्तर और एलवी राय को नियुक्त किया गया।

संगठन सचिव का दायित्व विपुल प्रजापति को दिया गया, जबकि सचिव पद पर रिंकू शर्मा और सचिन गुप्ता को मनोनीत किया गया। उपसचिव के रूप में संजीव गाईन और ठाकुर रामपाल को जिम्मेदारी दी गई है। इसके अतिरिक्त मीडिया प्रभारी पद पर शिवम छाबड़ा को नियुक्त किया गया। संरक्षक मंडल में राजेंद्र पाल सिंह, विनोद भुसरी, आर.पी. सिंह, सरोज मंडल और काजल राय को शामिल किया गया है। वहीं विधिक सलाहकार के रूप में जुल्फिकार अली तथा कार्यकारिणी सदस्य के रूप में गौरव कुमार आर्य को जिम्मेदारी दी गई। इस दौरान अध्यक्ष मुकेश पाल ने कहा कि नई कार्यकारिणी मीडिया कर्मियों के हितों की रक्षा करने, पत्रकारिता के मूल्यों को मजबूत बनाने और नगर में सकारात्मक सामाजिक सरोकारों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध रहेगी। अंत में सभी सदस्यों ने मीडिया क्लब गदरपुर को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का संकल्प लिया और पत्रकारिता की गरिमा बनाए रखने का भरोसा जताया। इस दौरान अरूण नागपाल, राजेंद्र छाबड़ा आदि पत्रकार मौजूद रहे।

महेशपुरा ग्राम पंचायत में स्वच्छता अभियान की शुरुआत

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। बाजपुर ब्लॉक की ग्राम पंचायत महेशपुरा में स्वच्छता अभियान के अंतर्गत ग्राम प्रधान लीलाधर सैनी द्वारा संचालित ट्रैक्टर-ट्रॉली को गुरुवार को हरी झंडी दिखाकर अभियान का शुभारंभ किया गया।

इस पहल का उद्देश्य ग्राम स्तर पर स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा जनभागीदारी को सुदृढ़ करना है।

अभियान के तहत गांव में सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाने और कचरा निस्तारण की व्यवस्था को प्रभावी बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। ग्राम प्रधान ने कहा कि स्वच्छ ग्राम ही स्वस्थ ग्राम की पहचान है और इसमें प्रत्येक ग्रामीण की सहभागिता आवश्यक है।

इस मौके पर, ब्लॉक प्रमुख पति जोरावर सिंह भुल्लर,बीडीओ, शेखर जोशी, बीडीसी सौरभ राणा, सुरेश सैनी सहित अन्य कार्यकर्ता एवं ग्रामीण उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर स्वच्छता अभियान को सफल बनाने का संकल्प लिया।

परीक्षा उत्सव: छात्रों को मिला मार्गदर्शन और प्रेरणा

- आप पूछें, हम बताएं कार्यक्रम में 1000 से अधिक विद्यार्थियों ने पाई परीक्षा संबंधी सहायता

शाह टाइम्स संवाददाता

पिथौरागढ़। गंगोत्री गर्ब्याल राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, पिथौरागढ़ में आयोजित जिज्ञासा सत्र "आप पूछें, हम बताएं" परीक्षा उत्सव कार्यक्रम में जिलाधिकारी आशीष भटगांई मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाधिकारी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया, जिसके माध्यम से उन्होंने ज्ञान और उत्साह के प्रतीक के रूप में समारोह को औपचारिक रूप से आरंभ किया।

इस अवसर पर जिलाधिकारी ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं है। परीक्षा उत्सव का आयोजन न केवल पढ़ाई और तैयारी का अवसर है, बल्कि यह अपनी प्रतिभा, ज्ञान और कौशल को निखारने का भी समय है। उन्होंने विशेष रूप से छात्रों द्वारा किए गए समीक्षा अभ्यास की सराहना की और कहा कि इसे आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपने दैनिक अध्ययन और प्रयासों में लागू करना चाहिए। जिलाधिकारी ने कहा किसी भी कार्य को करते समय डर या संकोच को अपने मार्ग में आने न दें। हमेशा सकारात्मक सोच के साथ कदम बढ़ाएं। जो छात्र अपनी मेहनत और लगन से काम करेंगे, वही अपने जीवन में उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करेंगे। परीक्षा केवल ज्ञान की परीक्षा नहीं है, यह आत्मविश्वास और धैर्य की परीक्षा भी है। इस अवसर का पूरा लाभ उठाएं।

कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकगण और विद्यालय प्रशासन ने भी अपने विचार साझा किए और छात्राओं के उत्साहवर्धन के लिए आवश्यक सुझाव दिए। इस अवसर पर विभिन्न शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन भी किया गया, जिससे छात्राओं को अपने ज्ञान और कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर मिला। जिलाधिकारी ने अंत में सभी छात्राओं को उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं और प्रेरित किया कि वे जीवन में हमेशा ईमानदारी, मेहनत और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ें। कार्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में आत्मविश्वास, उत्साह और सीखने की जिज्ञासा को बढ़ावा मिला।

एक नजर

अरायजनवीसों ने की पेंशन की मांग मुख्यमंत्री को भेजा ज्ञापन

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। अरायजनवीस एंड स्टांप वेंडर संगठन ने पेंशन की मांग को लेकर उप जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को एक विज्ञापन प्रेषित किया।

ज्ञापन के मुताबिक समस्त प्रकार के प्रमाण पत्र दाखिल खारिज व अन्य दस्तावेज ऑनलाइन होने के कारण अरायजनवीसों का कार्य लगभग समाप्त हो गया है, जिससे उनकी माली हालत बहुत खराब है। अरायजनवीसों के पास केवल प्रार्थना पत्र व शपथ जैसे कार्य बचे हुए हैं जिससे उनका गुजारा मुश्किल से हो रहा है। दिनभर खाली बैठने के बाद शाम को खाली हाथ घर जाना पड़ता है। इसलिए उनकी दयनीय हालत को देखते हुए उन्होंने मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेज कर 15000 रुपए मासिक पेंशन देने की गुहार लगाई है। इस मौके पर शिव शंकर भाटिया, आरिफ अंसारी, दानिश, सुरेश जोशी, सुभाष राना, अजीम अंसारी, मंगल कुमार, शैलेंद्र सिंह राना, भूपेंद्र सिंह खोलिया, दिनेश भटनागर, आदेश कुमार, विकास, राम कुमार तथा मयंक भटनागर सहित अनेकों अरायजनवीस मौजूद रहे।

रामलीला पात्र परिषद के अध्यक्ष बने गौरी शंकर, सचिव इंद्रेश

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। सनातन श्री रामलीला पात्र परिषद की बैठक गुरुवार को सनातन धर्मशाला में आयोजित हुई। बैठक में संरक्षक मंडल द्वारा सर्वसम्मति से सभी कार्यकारी सदस्यों की सहमति पर सनातन श्री रामलीला पात्र परिषद का गठन किया गया। जिसमें आगामी कार्यक्रमों के लिए गौरीशंकर अग्रवाल को अध्यक्ष एवं इंद्रेश गुंबर को सचिव नियुक्त किया गया। इस मौके पर आगामी 4 मार्च को होली महोत्सव धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया। सनातन श्री रामलीला पात्र परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष राजेश गुप्ता, संरक्षक दान सिंह रावत, राजीव अग्रवाल, विजय गुप्ता, दीपक गुप्ता, दिनेश अग्रवाल, सौरव अग्रवाल, मनोज वाधवा, रमेश ढींगरा, विशाल अग्रवाल, भगवान दास गुप्ता, मनोज श्रीवास्तव तथा रविंद्र श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

धान खरीद की हो निष्पक्ष जांच: सतवन्त सिंह

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। ग्राम रम्पुरा शाकर निवासी सतवन्त सिंह बैंस ने जिलाधिकारी को संबोधित ज्ञापन गुरुवार को एसडीएम डॉ. अमृता शर्मा को सौंपकर धान खरीद की निष्पक्ष जांच कराए जाने की मांग की है।

उन्होंने आरोप लगाया है कि सरकारी धान खरीद में बड़े पैमाने पर धांधली हुई है। जितने भी किसान यूनियन के पदाधिकारी हैं, उन्होंने अपने पद का दुरूपयोग कर गन्ने की खतौनी (गन्ना रकबा) के कागज को धान का रकबा दिखाकर बाहर से धान खरीद कर पोर्टल पर चढ़वाया है। जिसके कारण आम किसान को इसका कोई लाभ नहीं हुआ और उसे औने-पौने दाम में अपनी धान की फसल को बेचना पड़ा। निष्पक्ष जांच होने पर राईस मिलर्स, सफेदपोश नेता एवं आरएफसी अधिकारी बेनकाब होगें। बैंस ने जिलाधिकारी ऊधम सिंह नगर से संबंधित क्षेत्रीय पटवारियों से गोदावरी करवाकर धान खरीद प्रकरण की निष्पक्ष जांच कराकर दोषियों के विरुद्ध कड़ी कानूनी कार्यवाही किये जाने की माँग की है। ताकि आने वाले सीजन में किसी भी किसान का शोषण व धांधली न हो।

ईसाई समाज ने उठाई सुरक्षा की मांग

- चर्चों पर हमले और झूठे मुकदमों पर जताई गहरी चिंता
- तहसीलदार के माध्यम से राज्यपाल को भेजा ज्ञापन

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। मसीह शांति सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश मैक्स के नेतृत्व में दर्जनों कार्यकर्ताओं ने तहसीलदार के माध्यम से राज्यपाल को एक ज्ञापन प्रेषित कर आए दिन चर्चों पर हो रहे हमलों व झूठे मुकदमों पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए संवैधानिक अधिकारों के सुरक्षा व अराजक तत्वों के खिलाफ कार्यवाही की मांग की।

ज्ञापन के माध्यम से उन्होंने बताया कि उनकी निजी जमीन पर बने चर्चों में प्रत्येक रविवार को समाज के लोगों द्वारा प्रार्थना की जाती है जहां पहुंच कर कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा सनातन धर्म की आड़ में अभद्रता की जाती है तथा चर्चों को तोड़ने का काम किया जाता है। उन्होंने आरोप लगाया है कि निजी भूमि पर बने चर्चों को सरकारी भूमि का हवाला देकर तोड़ दिया जाता है जबकि अन्य धार्मिक व पूजा स्थल जो सरकारी भूमि पर बने हैं उनके साथ कोई कार्रवाई नहीं की जाती है। साथ ही उन्होंने ज्ञापन में पिछले दिनों ईसाई समाज के साथ हुई कई घटनाओं का हवाला देते हुए कहा कि यह संवैधानिक अधिकारों का हनन है। उन्होंने कहा कि स्वार्थी व अराजक तत्वों के इस कृत्य को देखकर पुलिस प्रशासन मूकदर्शक बनी हुई है। जिसकी वजह से क्षेत्र में माहौल खराब होने की आशंका बनी है और भय का माहौल है। उन्होंने उक्त अराजक तत्वों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए धार्मिक स्थलों की सुरक्षा की गुहार लगाई है। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि तत्काल कार्रवाई नहीं हुई तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मामले को उठाएंगे। इस मौके पर सिधारी, पियूष, किशोर, बबलू, शिव जतन, दीपक राना, गौरी सिंह राना, अनिल राना, डोनिश दास, महेश, बसंत, रामविलास, सुरेश पौल तथा जगदीश गिल आदि मौजूद रहे।

हिमोथान परियोजना की जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक सम्पन्न

शाह टाइम्स संवाददाता

पिथौरागढ़। जिलाधिकारी आशीष भटगांई की अध्यक्षता में हिमोत्थान सोसाइटी द्वारा संचालित विभिन्न विकास परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा हेतु जिला स्तरीय समन्वय समिति की प्रथम बैठक आयोजित की गई। बैठक में हिमोत्थान परियोजना की अवधारणा, कार्यप्रणाली एवं जनपद में प्राप्त उपलब्धियों पर विस्तृत प्रस्तुतीकरण एवं विचार-विमर्श किया गया।

हिमोत्थान सोसाइटी उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश एवं लद्दाख के पर्वतीय क्षेत्रों में ग्रामीण समुदायों के समग्र एवं सतत विकास हेतु कार्यरत है। संस्था का उद्देश्य खुशहाल, आत्मनिर्भर एवं पर्यावरण के साथ संतुलित जीवन जीने वाली पहाड़ी समुदायों का निर्माण करना है। जनपद के पांच विकासखंड बेरीनाग, बिन, धारचूला, गंगोलीहाट एवं मुनस्यारी के 372 गांवों के 6079 परिवारों के साथ हिमोत्थान आजीविका, जल, कृषि, पशुधन एवं सामुदायिक सशक्तिकरण से संबंधित कार्यक्रम संचालित कर रहा है। बैठक में हिमोत्थान द्वारा संचालित परियोजनाओं की सराहना करते हुए विभागीय समन्वय एवं अभिसरण को और सुदृढ़ करने पर बल दिया गया। आजीविका संवर्धन, जल सुरक्षा, कृषि उत्पादकता एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों को भविष्य की रणनीति हेतु महत्वपूर्ण आधार बताया गया।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी डॉ. दीपक सैनी, परियोजना निदेशक आशीष पुनेठा, जिला विकास अधिकारी रमा गोस्वामी, मुख्य कृषि अधिकारी अमरेंद्र चौधरी, मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डॉ. योगेश शर्मा, मुख्य शिक्षा अधिकारी तरुण पंत सहित ग्रामोथान टीम एवं अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

महुआखेड़ागंज में हुई सियासी हलचल

भाजपा मण्डल अध्यक्ष हरजिन्दर सिंह ने पत्नी व समर्थकों संग थामा कांग्रेस का दामन

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही बाजपुर क्षेत्र की राजनीति में हलचल तेज हो गई है। महुआखेड़ागंज के भाजपा मण्डल अध्यक्ष हरजिन्दर सिंह ने अपनी धर्मपत्नी एवं बरखेड़ी ग्राम प्रधान कमलजीत कौर के साथ भाजपा को अलविदा कह कांग्रेस का दामन थाम लिया। उनके साथ दर्जनों समर्थकों ने भी पार्टी बदलते हुए कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की।

गुरुवार को रामराज रोड स्थित होटल सनसाईन में आयोजित कार्यक्रम में नेता प्रतिपक्ष एवं क्षेत्रीय विधायक यशपाल आर्य ने सभी को कांग्रेस की सदस्यता दिलाई। इस दौरान कार्यक्रम में भारी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे। जिससे राजनीतिक माहौल पूरी तरह गरमाया रहा।इस अवसर पर यशपाल आर्य ने कहा कि हरजिन्दर सिंह और उनकी टीम के कांग्रेस परिवार में शामिल होने से पूरे बाजपुर विधानसभा क्षेत्र में संगठन को मजबूती मिलेगी। उन्होंने भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि प्रदेश में जंगलराज कायम है और अपराध चरम पर पहुंच चुका है। आम जनता की समस्याओं को सुनने वाला कोई नहीं है। आर्य ने कहा कि तेज रफ्तार और ओवरलोड डंपर अब सिर्फ वाहन नहीं, बल्कि चलती-फिरती मौत बन चुके हैं। आए दिन सड़क हादसों में निर्दोष लोगों की जान जा रही है, लेकिन सरकार और प्रशासन मूकदर्शक बने हुए हैं। उन्होंने भाजपा सरकार की नीतियों को जनविरोधी बताते हुए कहा कि कांग्रेस आगामी 16 फरवरी को राजभवन घेराव करेगी। कार्यक्रम में किसान कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष सरदार हरमिन्दर सिंह ढिल्लन 'लाडी', नैनीताल के पूर्व विधायक संजीव आर्य, चेयरमैन गुरजीत सिंह 'गित्ते', सरदार जोरावर सिंह भुल्लर, वरुण कपूर, पवन शर्मा, डीके जोशी, सोहन सिंह, सुखदेव सिंह, रघुवीर सिंह, मंगल सिंह, उमेश कुमार, तरसेम सिंह, बलवीर सिंह 'कालू', अभिषेक तिवारी सहित अनेक कांग्रेस पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

आर्य की सक्रियता के बीच भाजपा को लगा बड़ा झटका

राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार 15 वर्षों तक भाजपा संगठन में सक्रिय रहे दंपति का कांग्रेस में शामिल होना सिर्फ दल-बदल नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर प्रभाव का संकेत है।

हरजिन्दर सिंह का महुआखेड़ागंज क्षेत्र में मजबूत जनाधार माना जाता है, जबकि ग्राम प्रधान कमलजीत कौर का ग्रामीण क्षेत्र में अलग प्रभाव है। ऐसे में 2027 चुनाव से पहले यह बदलाव भाजपा के लिए रणनीतिक चुनौती और कांग्रेस के लिए संगठनात्मक बढ़त के रूप में देखा जा रहा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यशपाल आर्य ने कहा कि कांग्रेस आम जनता की आवाज बनकर काम कर रही है और क्षेत्र में विकास व जनसरोकारों के मुद्दों को प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने दावा किया कि आगामी चुनाव में जनता परिवर्तन का मन बना चुकी है। वहीं सियासी गलियारों में इस घटनाक्रम को 2027 की चुनावी बिसात पर शुरुआती चाल के रूप में देखा जा रहा है। आने वाले समय में अन्य नेताओं के रुख पर भी सबकी नजरें टिकी हुई हैं।

स्थानांतरण पर थाना अध्यक्ष उमेश कुमार को दी विदाई

शाह टाइम्स संवाददाता

नानकमत्ता। नानकमत्ता थाना को कोतवाली बनने के बाद यहा कोतवाल की तैनाती की गयी है, अब तक थाने का चर्चा संभाल रहे थाना अध्यक्ष उमेश कुमार का बीते दिवस स्थानांतरण कर उन्हें जनपद उधमसिंहनगर में एसओजी का प्रभारी बनाया गया है।

गुरुवार को कोतवाल परिसर में आयोजित विदाई कार्यक्रम में उपस्थित नानकमत्ता कोतवाली की प्रभारी निरीक्षक मंजू पाण्डे एवं पुलिस कर्मचारियों व जन प्रतिनिधियों द्वारा स्थानांतरण होने पर थाना अध्यक्ष के पद पर रहे उमेश कुमार को ससम्मान विदाई दी गयी तथा उनके द्वारा थाना अध्यक्ष के पद पर रहकर किये गये कार्यो की सराहना की गई।

वहीं थाने में तैनात उप निरीक्षको द्वारा थाना अध्यक्ष के साथ किये गये कार्यो में अपना अपना अनुभव साझा किया गया। विदाई कार्यक्रम का संचालन वक्ता शिक्षक नेता केएन अटवाल द्वारा किया गया । यहां शिक्षक नेता केएन अटवाल, जिला पंचायत सदस्य भाष्कर संभल , ग्राम प्रधान आशिफ, गुरनाम सिंह, महिला दरोगा प्रियंका टम्टा, चौकी प्रभारी राजेन्द्र पन्त , उप निरीक्षक संजय कुमार, उप निरीक्षक सुनील कुमार, मुख्य आरक्षी नवनीत कुमार, सिपाही प्रकाश आर्या, महिला सिपाही कमला दुग्त्याल, विधा रानी आदि मौजूद रहे।

वॉइस ऑफ मीडिया के उत्तराखंड के प्रदेश अध्यक्ष बने बेणीराम उनियाल

शाह टाइम्स संवाददाता

चंपावत। वॉइस ऑफ मीडिया संगठन में संगठनात्मक विस्तार को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए बेणीराम उनियाल को प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। वॉइस आफ मीडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप काले व राष्ट्रीय महासचिव दिव्य भौंसले ने द्वारा जिम्मेदारी सौंपी गई।

नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष बेणीराम उनियाल ने संगठन के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे वॉइस ऑॅफ मीडिया के उद्देश्यों और जनहित से जुड़े मुद्दों को मजबूती से आगे बढ़ाने का कार्य करेंगे। उन्होंने संगठन को प्रदेश स्तर पर सशक्त बनाने, मीडिया कर्मियों को एक मंच पर जोड़ने तथा समाजहित में सकारात्मक पहल करने का संकल्प भी व्यक्त किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप काले ने कहा कि बेणीराम उनियाल के अनुभव, समर्पण और कार्यशैली से संगठन को प्रदेश में नई ऊर्जा मिलेगी। राष्ट्रीय महासचिव दिव्य भौंसले ने विश्वास जताया कि उनके नेतृत्व में वॉइस ऑॅफ मीडिया का विस्तार और अधिक प्रभावी ढंग से होगा। संगठन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भी बेणीराम उनियाल को नई जिम्मेदारी मिलने पर शुभकामनाएं दीं और उज्ज्वल कार्यकाल की कामना की।

भोजन माताओं की 26000 मासिक मानदेय सहित 11 सूत्रीय मांग

शाह टाइम्स संवाददाता

- जूलुस निकाल कर सरकार के खिलाफ नारेबाजी
- तहसीलदार के माध्यम से मुख्यमंत्री को भेजा ज्ञापन
- मांग पूरी न होने पर भूख हड़ताल की चेतावनी

खटीमा। राष्ट्रव्यापी आंदोलन के तहत गुरुवार को भोजन माता कामगार यूनियन खटीमा इकाई के बैनर तले संगठन की जिला अध्यक्ष रेखा राणा के नेतृत्व में भोजन माताओं ने अपनी 11 सूत्रीय मांगों को लेकर सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए सड़कों पर जुलूस निकाला। वहीं भोजन माताओं ने तहसील परिसर पहुंचकर सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए अपना आक्रोश व्यक्त किया तथा अपनी 11 सूत्रीय मांगों का एक ज्ञापन तहसीलदार के माध्यम से मुख्यमंत्री को प्रेषित किया।

आक्रोशित भोजन माताओं ने राज्य कर्मचारी घोषित किए जाने, 26000 रुपये प्रतिमाह न्यूनतम वेतन देने, भविष्य निधि एवं ईएसआईसी की सुविधा देने, भोजन माताओं को पद से हटाने वाले आदेश को तत्काल रद्द करने, निकाली गई भोजन माताओं को वापस कार्य पर रखे जाने, 46 वें श्रम सम्मेलन की सिफारिश को लागू कर सामाजिक सुरक्षा का लाभ एवं कर्मकार घोषित किए जाने, सेवानिवृत होने पर ग्रेच्युटी व पेंशन का लाभ देने, भोजन माताओं के लिए कल्याण कोष बनाने, मध्यान्ह भोजन योजना को निजी हाथों में न देने, भोजन माताओं को सालाना 5000 रुपये का बोनस देने, पोलिंग बूथ वाला पैसा उनके खाते में डाले जाने, साल में दो वर्दी देने तथा सचिव स्तर की कमेटी रिपोर्ट सार्वजनिक किए जाने की मांगों का एक ज्ञापन भेज कर जल्द से जल्द मांगों को पूरा करने की गुहार लगाई तथा मांगे पूरा न होने पर उन्होंने भूख हड़ताल की भी चेतावनी दी।

वहीं तहसीलदार वीरेंद्र सजवान ने बताया कि भजन माता की मांगे जायज प्रतीत हो रही है। इनके मांग पत्र को उचित माध्यम से मुख्यमंत्री को प्रेषित कर दिया जाएगा। इस मौके पर प्रवीन देवी, मिन्ती देवी, बीना, शांति, पानमती, प्रभावती, ज्ञान्ती, सुधा, शिखा राय, शक्ति फार्म ब्लॉक अध्यक्ष संध्या, मंजीता हलदार, पारुल, शिवानी, सहोदरी, साधना, माधवी राय, तथा दुर्गावती सहित अनेकों भोजन माताएं मौजूद रहीं।

चार श्रम संहिताओं के विरोध में चीनी मिल गेट पर गरजी मजदूर सभा

शाह टाइम्स संवाददाता

- राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा, आंदोलन की दी चेतावनी

बाजपुर। बाजपुर चीनी मिल के मुख्य द्वार पर गुरुवार को चीनी मिल मजदूर सभा के तत्वावधान में समस्त श्रमिक यूनियनों व संगठनों के संयुक्त आह्वान पर गुरुवार को एक जोरदार गेट मीटिंग आयोजित की गई। सभा में केंद्र सरकार द्वारा लागू चार श्रम संहिताओं (लेबर कोड) के खिलाफ तीव्र विरोध दर्ज कराया गया।

वक्ताओं ने श्रम संहिताओं को मजदूर विरोधी बताते हुए कहा कि ये कानून स्थायी रोजगार को समाप्त करने, ठेका प्रथा को बढ़ावा देने, ट्रेड यूनियन अधिकारों को कमजोर करने तथा श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा पर आघात करने वाले हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि इन प्रावधानों से श्रमिकों के अधिकार सीमित होंगे और औद्योगिक संबंधों में असंतुलन बढ़ेगा। सभा को श्याम कार्तिक, विजय शर्मा, डॉ. सौरभ परमार, किसान प्रतिनिधि जगतार सिंह बाजवा तथा श्रमिक प्रतिनिधि गेंद्र ने संबोधित किया। वक्ताओं ने चेतावनी दी कि यदि श्रम संहिताओं को वापस नहीं लिया गया तो मजदूर वर्ग व्यापक और निर्णायक आंदोलन के लिए बाध्य होगा। सभा के बाद एक प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन (एसडीएम) डॉक्टर अमृता शर्मा को सौंपा। जिसमें श्रमिकों की मांगों का उल्लेख किया गया। इस दौरान स्नेह विकास शर्मा,बसवानंद, शंकर सहित बड़ी संख्या में श्रमिक उपस्थित रहे। गगनभेदी नारों के बीच मजदूरों ने एकजुटता का प्रदर्शन करते हुए अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रखने का संकल्प दोहराया।

किसान ही सबसे बड़ा वैज्ञानिक: सीडीओ

शाह टाइम्स संवाददाता

- ब्लाक सभागार में आयोजित कृषक गोष्ठी में 27 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा

लोहाघाट। पर्वतीय क्षेत्रों में खेती केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि जीवन की आधारशिला है। "किसान मिट्टी में खेलते हुए ऐसा ज्ञान अर्जित करता है, जिसे विज्ञान भी स्वीकार करता है। यह बात कृषक गोष्ठी में मुख्य विकास अधिकारी डॉ जीएस खाती ने व्यक्त किए।

प्रगतिशील किसान नरेश करायत की अध्यक्षता एवं आकांक्षा सिंह के संचालक में हुई गोष्ठी में किसानों ने खेती के क्षेत्र में आ रही विभिन्न चुनौतियों को प्रमुखता से उठाया। सिंचाई सुविधाओं का अभाव, कृषि से जुड़े विभागों का किसानों से सीधा संवाद न होना, मंडियों में उचित मूल्य न मिलना, जंगली जानवरों का आतंक, समय पर उन्नत बीज व खाद न मिलना जैसी समस्याओं पर खुलकर चर्चा हुई। किसानों की ओर से सीडीओ को 27 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा गया। इसमें इंटीग्रेटेड फार्मिंग को बढ़ावा देने, बेल वाली सब्जियों के लिए लोहे की जालियां उपलब्ध कराने, कृषि भूमि की बिक्री पर रोक लगाने, एप्पल मिशन के अंतर्गत हेलनेट उपलब्ध कराने, पॉलीहाउस समय से लगाने, प्रत्येक किसान को मौन पालन से जोड़ने, जिले में मौन प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने तथा कृषि व उद्यान विभाग के कर्मचारियों को मौन पालन प्रशिक्षण देने की मांग शामिल रही। गोष्ठी में किसान राजेंद्र पुनेठा, मोहन पांडे, राम सिंह, कमलकांत, भैरव राय, निर्मल चंद्र, राकेश उपाध्याय, संजय फर्त्याल, कुंदन पाटनी, रमेश राम, रघुवर राम सहित कई किसानों ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर जिला उद्यान अधिकारी मोहित मल्ली, डॉ. वसुंधरा, संतोषी, आशुतोष सिंह, साक्षी पांडे, सनम चौहान, एसपी सिंह, हिमांशु प्रसाद, स्वाति कुशवाहा व अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उपनिबन्धक, किच्छा, उ.सि.न. मं पंजीकृत रजिस्ट्री बैनामा वही संख्या-1 जिल्द-381 के पृष्ठ-261 से 272 पर क्रमांक-5993 पर दिनांक-21.11.2006 (विक्रेता-प्रेमशंकर शाही पुत्र राम अवतार व क्रेता-मैसर्स शिवालिक एजुकेशनल एण्ड पैलेसमेंट सर्विसेस प्रा. लि. द्वारा लक्ष्मण वर्मा) दिनांक-11.02.2026 को मुझसे गुम हो गया है।

उसमान अली पुत्र श्री फिरासत अली निवासी- प्रीत विहार कालौनी, फाजलपुर महरौला, रुद्रपुर जिला उधम सिंह नगर

गुरुद्वारा साहिब बन्नाखेड़ा में बाबा अवतार सिंह दल के कीर्तन में उमड़ी संगत

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। बन्नाखेड़ा स्थित गुरुद्वारा साहिब में आयोजित बाबा अवतार सिंह दल के पावन कीर्तन कार्यक्रम में गुरुवार को बड़ी संख्या में संगत ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं ने गुरुबाणी का श्रवण कर आध्यात्मिक वातावरण का अनुभव किया। इस अवसर पर उपस्थित पूर्व दर्जा राज्य मंत्री राजेश कुमार जनप्रतिनिधि/समाजसेवियों ने भी कीर्तन में सहभागिता कर मत्था टेका तथा बाबा जी के सुपुत्र चरणजीत सिंह से आशीर्वाद प्राप्त किया। संगत के साथ सामूहिक अरदास करते हुए समाज में सुख-शांति, आपसी भाईचारे, सद्भाव और खुशहाली की कामना की गई। गुरुद्वारा परिसर में भक्ति एवं श्रद्धा का माहौल बना रहा। कार्यक्रम के समापन पर लंगर का आयोजन किया गया, जिसमें संगत ने प्रसाद ग्रहण किया। आयोजकों ने सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया।

दुर्गा शाह पुस्तकालय का हाई कोर्ट ने लिया संज्ञान

न्यायमित्र से निदेशक पर्यटन व कार्यदायी संस्था एडीबी को पक्षकार बनाने को कहा

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने नैनीताल के नैनी झील किनारे स्थित ऐतिहासिक दुर्गा शाह नगर पालिका पुस्तकालय का जीर्णोद्धार करने के दौरान कार्यदायी संस्था एडीबी के द्वारा घटिया सामग्री का प्रयोग कर सरकारी धन का दुरुपयोग करने को लेकर स्वत: संज्ञान लिए जाने वाली जनहित याचिका पर सुनवाई। मामले की सुनवाई के बाद मुख्य न्यायधीश मनोज कुमार गुप्ता व न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खंडपीठ ने न्यायमित्र से कहा है कि वह निदेशक पर्यटन व कार्यदायी संस्था एडीबी को पक्षकार बनाएं, साथ में कोर्ट ने उनसे जवाब प्रस्तुत करने को भी कहा। मामले की अगली सुनवाई के लिए कोर्ट ने 18 मार्च बुधवार की तिथि नियत की है। बता दें इस मामले को कोर्ट ने स्वत: संज्ञान लेकर सुनवाई की। जनहित याचिका में कहा गया कि यह पुस्तकालय का निर्माण वर्ष 1933-34 में मोहन लाल साह द्वारा 5 हजार रुपये नगर पालिका नैनीताल को दान में देकर लकड़ी व अन्य सामग्री से इसका निर्माण करवाया था। पुस्तकालय में दुर्लभ व कई अन्य विषयों के महत्वपूर्ण पुस्तकें रखी गयी। पहले कई समय तक यहां से लाउडस्पीकर के माध्यम से समाचार प्रसारित होते थे। वर्ष 2023-24 में इसका जीर्णोद्धार कार्यदायी संस्था एडीबी के द्वारा डेढ़ करोड़ की लागत से कराकर नगर पालिका को सौंप दिया। मात्र डेढ़ वर्ष के भीतर ही इसमें लगाई गयी लकड़ी व शीशे उखड़ने लगे। वर्तमान में उखड़ी लकड़ी व शीशों को रस्सी से बांधकर उनको रोका गया है ताकि कोई जान माल की हानि न हो। यह सब जीर्णोद्धार करते समय लगाई गयी घटिया सामग्री के कारण हुआ। जब इस संबंध में नगर पालिका ने राज्य सरकार को पत्र भेजा तो उस पर कोई विचार नहीं किया गया जो कि यह एक सरकारी धन का दुरुपयोग है। जनहित याचिका में कहा गया कि मामले की जांच कराई जाए।

राज्य व केंद्र सरकार, आईटीबीपी को मोहलत

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने देहरादून के ग्राम खैरी मानसिंह की भूमि को बिना ग्रामीणों की अनुमति से आईटीबीपी को दिए जाने के खिलाफ दायर जनहित याचिका पर सुनवाई की। मामले की सुनवाई के बाद मुख्य न्यायधीश मनोज कुमार गुप्ता व न्यायमूर्ती सुभाष उपाध्याय की खंडपीठ ने राज्य सरकार, केंद्र सरकार सहित आईटीबीपी से दो सप्ताह के भीतर जवाब पेश करने को कहा है, साथ ही कोर्ट ने याचिकाकर्ता से उसका प्रति उत्तर देने को कहा है। खंडपीठ ने मामले की अगली सुनवाई हेतु तीन सप्ताह बाद की तिथि नियत कि है। मामले के अनुसार देहरादून जिले का ग्राम खैरी मानसिंह मालदेवता निवासी नंद किशोर ने उच्च न्यायालय मे जनहित याचिका दायर कर कहा है कि राज्य सरकार ने बिना ग्रामीणों को सुने उनकी खेती योग्य भूमि को आईटीबीपी को दे दी। भूमि दिए जाने के बाद भी ग्रामीणों को कोई आपत्ति नहीं थी लेकिन अब आईटीबीपी के द्वारा उनके घरोंए खेतो को जाने वाले मार्गो को बंद कर दिया गया है। उनको नहीं जाने दिया जा रहा है। इस मामले को सुझाने के लिए ग्रामीणों ने जिलाधिकारी, आईटीबीपी तथा मुख्य सचिव व मुख्यमंत्री को भी प्रत्यावेदन दिए लेकिन उनके प्रत्यावेदन पर किसी ने सुनवाई नहीं की न ही ग्रामीणों के हक का संज्ञान लिया। अब मजबूर होकर ग्रामीण अपने हक के लिए धरना प्रदर्शन कर रहे हैं।

राजस्व अपील 6 माह मेंअनिवार्य रूप से तय हो

ज़मीन से जुड़े मामले में हाई कोर्ट के निर्देश

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने जमीन से जुड़े एक विवादित मामले में महत्वपूर्ण निर्देश जारी करते हुए कुमाऊं कमिश्नर को निर्देश दिया है कि लंबित राजस्व अपील को अगले 6 महीनों के भीतर अनिवार्य रूप से तय किया जाए। न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की पीठ ने श्चरण सिंह एवं अन्य बनाम विमला देवी एवं अन्य के मामले में सुनवाई करते हुए यह आदेश पारित किया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि न्याय के हित में मामले का त्वरित निस्तारण आवश्यक है। याचिकाकर्ताओं चरण सिंह आदि ने उच्च न्यायालय में रिट याचिका दायर कर बोर्ड ऑफ रेवेन्यू और कुमाऊं कमिश्नर द्वारा पूर्व में पारित आदेशों को चुनौती दी थी। यह विवाद गदरपुर के सहायक कलेक्टर/एसडीएम द्वारा 30 अगस्त 2025 को पारित एक डिक्री से शुरू हुआ था। याचिकाकर्ता चाहते थे कि जब तक कमिश्नर कोर्ट में उनकी मुख्य अपील लंबित है तब तक निचली अदालत के आदेश के क्रियान्वयन पर रोक लगा दी जाए ताकि उन्हें उनकी जमीन से बेदखल न किया जा सके। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं के वकील ने अपनी प्रार्थना को सीमित करते हुए केवल यह मांग की कि कुमाऊं मंडल के कमिश्नर को लंबित अपील संख्या 138/2024-25 को समयबद्ध तरीके से तय करने का निर्देश दिया जाए, वहीं प्रतिवादी पक्ष (कैविएटर) की ओर से अधिवक्ता ने इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई लेकिन यह शर्त रखी कि अपील पर निर्णय होने तक निष्पादन कार्यवाई जारी रहनी चाहिए। दोनों पक्षों की सहमति सुनने के बाद न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय ने रिट याचिका को अंतिम रूप से निस्तारित कर दिया। कोर्ट ने कुमाऊं कमिश्नर को आदेश की प्रति मिलने की तिथि से अधिकतम 6 माह के भीतर अपील पर अंतिम फैसला सुनाने का निर्देश दिया है। अदालत ने बीच का रास्ता निकालते हुए यह भी व्यवस्था दी कि इस अवधि के दौरान निष्पादन की कार्यवाही चलती रहेगीए लेकिन जब तक कमिश्नर अपील पर फैसला नहीं सुना देते? तब तक निष्पादन अदालत कोई भी अंतिम आदेश पारित नहीं करेगी। इस आदेश के साथ ही अदालत ने सभी संबंधित पक्षों और राजस्व अधिकारियों को कानूनी प्रक्रिया का पालन करने का निर्देश दिया है।

अंतर राज्य युवा आदान प्रदान के तहत हुए कई कार्यक्रम

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। मेरा युवा भारत नैनीताल (युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार) द्वारा हर्मिटेज यूजीसी-एमएमटीटीसी कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल में आयोजित अंतर राज्य युवा आदान प्रदान कार्यक्रम के चौथे दिन यानी बीरवार की गतिविधियाँ अत्यंत उत्साहपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक रहीं। बता दें मेरा युवा भारत की उप निदेशक डौल्वी तेवतिया के निर्देशन में चतुर्थ दिवस की शुरुआत प्रात: कालीन प्रभातफेरी से हुई जिसमें सभी प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। इसके बाद भाषा शिक्षण सत्र का आयोजन किया गया जिसमें प्रशिक्षक पुष्कर दानू के साथ मेरा युवा भारत नैनीताल के सक्रिय स्वयंसेवक संजय बिष्ट एवं अजय कोहली ने युवाओं का मार्गदर्शन किया। दोपहर सत्र में यूजीसी-एमएमटीटीसी कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल के प्राचार्य प्रो. रीतेश साह द्वारा देवभूमि उत्तराखंड की संस्कृति पर व्याख्यान दिया गया। इसके पश्चात आरोही संस्था के कार्यकारी निदेशक डा. पंकज तिवारी एवं समीरन त्रिपाठी द्वारा आरोही संस्था एवं इसके ग्रामीण विकास तथा महिला स्वयं सहायता समूहों के सशक्तिकरण से जुड़े कार्यों पर विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि किस प्रकार संस्था ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका, शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं। यह सत्र युवाओं के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। अंतिम सत्र में डीएसबी परिसर नैनीताल के एनसीसी कैडेट्स के साथ एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया जबकि सायंकालीन सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न राज्यों के युवाओं ने अपनी-अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं।

दूहरादून कोर्ट से दोषी को हाई कोर्ट सेराहत

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने पॉक्सो एक्ट के तहत विशेष न्यायाधीश देहरादून की अदालत से दोषी ठहराए गए एक व्यक्ति की सजा को निलंबित किया है। हाईकोर्ट ने कहा कि आरोपी सुनील की अपील के विचाराधीन रहने तक निचली अदालत का आदेश निलंबित रहेगा। न्यायमूर्ति रवींद्र मैठानी और न्यायमूर्ति सिद्धार्थ साह की खंडपीठ ने विशेष सत्र न्यायालय देहरादून द्वारा 31 जुलाई 2024 को सुनाए गए दोषसिद्धि के आदेश के खिलाफ दायर अपील पर सुनवाई करते हुए यह निर्णय लिया।

सुनवाई के दौरान अपीलकर्ता के वकील ने तर्क दिया कि इस मामले में मुख्य गवाह यानी पीड़ित स्वयं अपने बयानों से मुकर गया है। पीड़ित ने अदालत में स्पष्ट रूप से कहा कि आरोपी ने उसके साथ कोई गलत काम नहीं किया और न ही उसने आरोपी को पहचाना। अभियोजन पक्ष के मुख्य गवाह के इस रुख ने निचली अदालत द्वारा सुनाई गई सजा के आधार को कमजोर कर दिया जिसे उच्च न्यायालय ने जमानत देने का एक महत्वपूर्ण कारण माना। अदालत ने फारेंसिक साइंस लेबोरेटरी की रिपोर्ट पर भी गंभीर सवाल उठाए, हालांकि राज्य सरकार की ओर से दलील दी गई कि पीड़ित के कपड़ों पर आरोपी का सीमेन पाया गया था लेकिन जांच अधिकारी कुसुमलता पुरोहित के बयानों ने इस दावे को उलझा दिया। जांच अधिकारी ने जिरह में स्वीकार किया कि उन्होंने घटना के समय पहने गए पीड़ित के कपड़े कब्जे में नहीं लिए थे। अदालत ने पूछा कि यदि कपड़े आधिकारिक तौर पर जब्त नहीं किए गए थे तो वे एफएसएल तक सुरक्षित रूप से कैसे पहुँचे?

जिला अस्पताल को मिली नई एक्सरे व अल्ट्रासाउंड मशीन

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। नैनीताल स्थित राजकीय बीडी पांडे जिला अस्पताल में वीरवार को श्री कैंची हनुमान मंदिर एवं आश्रम ट्रस्ट कैंचीधाम के सौजन्य से नई एक्सरे और अल्ट्रासाउंड मशीन दी गई। जिनका शुभारंभ रिबन काटकर अस्पताल प्रबंधन और ट्रस्ट के पदाधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने बताया कि जिला अस्पताल प्रबंधन की ओर से एक पत्र मिला था कि अस्पताल में कुछ मशीनों की आवश्यकता है। मंदिर ट्रस्ट की ओर से सेवा का कार्य किया जाता है जिसके तहत अस्पताल को मशीनें मुहैया कराई गई हैं। बताया कि 68 लाख लागत की एक्सरे और अल्ट्रासाउंड की मशीनें अस्पताल को मुहैया कराई गई हैं साथ ही इसमें 3 साल की मेंटेनेंस भी इन्लूड करके दी गई है। मेंटेनेंस का कार्य कंपनी ही करेगी। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने आगे कहा कि भविष्य में भी जिला अस्पताल प्रबंधन को हर संभव सहायता दी जाएगी। इस मौके पर जिला अस्पताल के पीएमएस डा. तरूण कुमार टम्टा ने जिला अस्पताल प्रबंधन की ओर से ट्रस्ट का विशेष आभार व्यक्त किया। इस दौरान मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष ओपी बिंद्रा, एमपी सिंह, प्रदीप साह तथा शैलेश साह सहित जिला अस्पताल के डा. अनिरुद्ध गंगोला, डा. नरेंद्र रावत, डा. अभिषेक गुप्ता समेत मेट्रन शारदा गिनवाल, जानकी कनवाल, नीमा रौतेला तथा जितेंद्र कुमार सहित सभी डाक्टर्स और स्टाफ मौजूद रहा।

इग्नू में प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़कर अब 15 फरवरी: प्रो. चंद्रकला रावत

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अध्ययन केंद्र कुविवि डीएसबी परिसर नैनीताल की समन्वयक प्रो. चन्द्रकला रावत ने बताया कि इग्नू में प्रवेश की अंतिम तिथि बढ़ाकर अब 15 फरवरी 2026 रविवार हो गई है कहा कि जो प्रवेश से वंचित छात्रों हेतु एक सुनहरा मौका है। अत: प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी यथाशीघ्र आवेदन की प्रक्रिया पूर्ण कर प्रवेश ले लें। प्रो.रावत के मुताबिक इग्नू विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु बेहतर विकल्प प्रदान करता है। प्रवेश से संबंधित अधिक जानकारी हेतु इग्नू अध्ययन केंद्र डीएसबी परिसर नैनीताल में संपर्क कर सकते हैं या इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट आईजीएनओयू डाट एसी डाट इन से ले सकते हैं।

राज्य सरकार अपने आदेश में करे सुधार: हाई कोर्ट

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने वक्फ बोर्ड के मुखय कार्यकारी अधिकारी के पद पर संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारी के बजाय अंडर सेकेट्री स्तर के अधिकारी की नियुक्ति किये जाने के खिलाफ दायर जनहित याचिका की सुनवाई के बाद राज्य सरकार से इस आदेश में सुधार करने को कहा है। इस मामले की अगली सुनवाई अब 17 फरवरी मंगलवार को होगी। जनहित याचिका की सुनवाई मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति मनोज कुमार गुप्ता व न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खण्डपीठ में हुई। याचिकाकर्ता के अनुसार वक्फ बोर्ड के सीईओ के पद पर ज्वाइंट सेकेट्री स्तर के अधिकारी की तैनाती होती है लेकिन हाल ही में सरकार ने इस पद पर मो. आरिफ की नियुक्ति की है जो अब तक लोकायुक्त में अंडर सेकेट्री स्तर के अधिकारी थे। इस मामले में सरकार ने अदालत को बताया कि यह नियुक्ति अस्थाई तौर पर की गई है लेकिन हाईकोर्ट ने इस तर्क को नहीं माना और सरकार से उक्त आदेश में सुधार करने को कहा है।

2026-27 के लिये 58 करोड़ का बजट पास

नैनीताल नगर पालिका की बोर्ड बैठक, 8 उप समितियों के अध्यक्षों का मनोनयन

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। नैनीताल नगर पालिका परिषद की वीरवार को हुई बोर्ड बैठक में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिये 58 करोड़ का बजट पास करने के साथ ही पालिका के 8 उप समितियों के अध्यक्ष मनोनीत किये गए। पालिकाध्यक्ष डा. सरस्वती खेतवाल की अध्यक्षता में हुई बैठक में पालिका की विभिन्न समितियों के अध्यक्षों का मनोनयन किया गया। जिनमें कर निर्धारण समिति को छोड़कर अन्य समितियों के अध्यक्ष निर्विरोध चुने गए। वित्त समिति की अध्यक्ष पालिकाध्यक्ष डा. सरस्वती खेतवाल को बनाया गया जबकि कर निर्धारण समिति के अध्यक्ष पद के लिये नारायणनगर वार्ड के सभासद भगवत सिंह रावत व सैनिक स्कूल वार्ड की सभासद ललिता दफौटी द्वारा दावेदारी करने से मतदान कराना पड़ा जिसमें 12 सभासदों ने मतदान किया जिसमें ललिता दफौटी को 7 व भगवत रावत को 5 मत मिले। अन्य समितियों में स्वास्थ्य समिति का अध्यक्ष रमेश प्रसाद वहीं पुस्तकालय समिति का अध्यक्ष गजाला कमाल वही निर्माण समिति का अध्यक्ष शीतल कटियार जबकि शिक्षा समिति का अध्यक्ष सपना बिष्ट तथा हाट फड़ समिति का अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार तथा फ्लैट्स समिति का अध्यक्ष अंकित चन्द्रा व स्वच्छता समिति का अध्यक्ष राकेश पवार को बनाया गया। बैठक का संचालन अधिशासी अधिकारी रोहिताश शर्मा ने किया। बैठक में सभासद मनोज साह जगाती, भगवत सिंह रावत, जितेंद्र पांडे, गीता उप्रेती, सपना बिष्ट, ललिता दफौटी तथा गजाला कमाल, रमेश प्रसाद, सुरेंद्र कुमार, शीतल कटियार, अंकित चन्द्रा, राकेश पवार सहित लेखाकार सिद्धार्थ शर्मा, कर अधीक्षक दीपेंद्र बमोला, मुखय सफाई निरीक्षक अमित कुमार तथा कार्यालय अधीक्षक शिवराज सिंह नेगी आदि मौजूद थे।

बैंक कर्मियों की हड़ताल से उपभोक्ता रहे परेशान

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। ऑल इंडिया बैंक एम्पलाइज एसोसिएशन के आह्वान पर बीरवार को नैनीताल में उत्तरांचल बैंक एम्पलाइज यूनियन से जुड़े बैंक कर्मियों ने श्रम कानून के विरोध में मल्लीताल पंजाब नेशनल बैंक के सामने विरोध प्रदर्शन कर कार्य बहिष्कार किया। इन बैंकों के ग्राहकों को भी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। उत्तरांचल बैंक एमपलाइज यूनियन के अध्यक्ष प्रवीण शाह ने कहा कि श्रम कानून के बदलाव के विरोध में संगठन की ओर से विरोध प्रदर्शन कर कार्य बहिष्कार किया गया। उन्होंने कहा कि 5 साल पहले संसद में श्रम विरोधी कानून पास कर दिया गया था लेकिन यूनियन के विरोध के चलते अभी तक लागू नहीं हो पाया। कहा कि अभी हाल ही में बिहार चुनाव जीतने के बाद इन्होंने उत्सुकता पूर्वक तुरंत यह कानून लागू कर दिया इसके विरोध में संगठन फिर से सामने आया है और हड़ताल का निर्णय लिया गया है। संगठन की ओर से आगे जो निर्देश प्राप्त होंगे उसका पालन किया जाएगा। इस हड़ताल में नैनीताल बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ इंडिया, बैंक आफ बड़ोदा, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन बैंक तथा पंजाब एंड सिंध बैंक तथा पंजाब नेशनल बैंक व इंडियन ओवरसीज बैंक शामिल रहे जबकि अन्य बैंक खुले रहे। प्रदर्शन के दौरान रोहित कैशले, पंकज खुलबे, चंदन राजपूत, रोशन बिष्ट, रजत शाह, नरेश बिष्ट तथा विनोद वाल्मीकि आदि मौजूद रहे।

भोजनमाताओं ने निकाली रैली

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। प्रगतिशील भोजनमाता संगठन की नैनीताल इकाई ने बीरवार को मल्लीताल स्थित आर्य समाज मंदिर परिसर से तल्लीताल गांधी चौक तक रैली निकाल जमकर नारेबाजी कर धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान संगठन की बलाक अध्यक्ष तुलसी देवी ने बताया कि भोजन माताएं लंबे समय से अपने न्यूनतम वेतन और स्थाई नौकरी के लिए संघर्ष कर रही हैं लेकिन सरकार उनकी मांगों को लगातार अनसुना कर रही हैं जिसकी वजह से उन्हें आंदोलन करना पड़ रहा है। कहा कि भोजनमाताएं कई बर्षो से प्रदेश के सरकारी व अर्धसरकारी विद्यालय में भोजन बनाने का काम कर रही हैं। उन्हें 100 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से 3 हजार रूपये महीना दिया जाता है। बताया कि कई भोजनमाताएं धरने में नहीं पहुंची हैं क्योंकि उन्हें स्कूल प्रशासन द्वारा धमकाया गया है। भोजनमाताओं की मांग है कि उन्हें न्यूनतम वेतन, पीएफई एसआई पेंशन तथा आकस्मिक अवकाश, प्रसूति अवकाश तथा भोजनमाताओं को चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी घोषित किया जाए तथा निकली गई भजनमाताओं को पुन: वापस लिया जाए। कहा की यदि मांग पूरी नहीं हुई तो सभी भोजनमाताएं वृहद आंदोलन करने को मजबूर होंगी। इस दौरान अनीता देवी, पुष्पा जलाल, सीमा देवी, सुशीला, चंपा देवी, लता, शबीना, संतोष, जानकी देवी, हेमा देवी, भगवती देवी, नंदी बिष्ट, पूजा देवी, दीपा देवी, शकीना, दीपा नेगी, नंदी बिष्ट, सरस्वती देवी, कमला पंत तथा हेमा डालाकोटी व निरमा देवी मौजूद रहे।

उत्तराखंड राज्यपाल को सड़क सुरक्षा पर आधारित पुस्तक भेंट

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह को ष्भारत में सडक दुर्घटनाएं नामक पुस्तक भेंट की गई, जो सड़क सुरक्षा पर आधारित है।

यह पुस्तक एम्स गुवाहाटी के अध्यक्ष प्रो. डा. बीकेएस संजय और उनके पुत्र डा. गौरव संजय द्वारा लिखी गई है। पुस्तक में भारत में सड़क दुर्घटनाओं के कारण, दुष्परिणाम और रोकथाम उपायों पर चर्चा की गई है। इसमें यातायात नियमों का पालन, सड़क संरचना में सुधार, ट्रामा केयर सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण और जन जागरूकता अभियानों की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। साथ ही, सड़क सुरक्षा शिक्षा को स्कूलों में पाठ्यक्रम में शामिल करने और गुणवत्तापूर्ण ड्राइविंग स्कूलों की संख्या बढ़ाने की अपील की गई है। राज्यपाल ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे सड़क सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान बताया।

आम हड़ताल के समर्थन में प्रदर्शन

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। फैडरेशन ऑफ मेडिकल एंड सेल्स रिप्रेजेंटेटिव एसोसिएशन के तहत उत्तर प्रदेश उत्तराखंड मेडिकल एंड सेल्स रिप्रेजेंटेटिव एसोसिएशन की हल्द्वानी यूनिट ने अखिल भारतीय आम हड़ताल में केंद्रीय ट्रेड यूनियनों का समर्थन किया। इस दौरान यूनिट के पदाधिकारी और सदस्य रमन मार्केट में एकत्रित हुए और केंद्र सरकार से 29 श्रम कानूनों की बहाली, मनरेगा की पुन: बहाली, फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी दर्जा देने जैसी प्रमुख मांगों के लिए उपजिलाधिकारी हल्द्वानी के माध्यम से ज्ञापन सौंपा। इसके बाद सभी पदाधिकारी और सदस्य बुध पार्क पहुंचे, जहां दूसरी ट्रेड यूनियनों के साथ मिलकर उन्होंने अपनी आवाज उठाई। प्रमुख मांगों में केंद्र सरकार से 4 लेबर कोर्ट को वापस लेने, न्यूनतम मजदूरी 26,000 रुपये प्रतिमाह करने, सेल्स प्रमोशन कर्मचारियों के लिए वैधानिक कार्य नियम लागू करने, सरकारी अस्पतालों और संस्थानों में मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव के प्रवेश पर लगे प्रतिबंध को हटाने, उत्पीड़न और पीड़ित करने की कार्यवाही को रोकने, तथा ट्रैकिंग और निगरानी के लिए डिजिटलीकरण द्वारा नए कार्य मानदंड लागू करने की मांग की गई। अखिल भारतीय आम हड़ताल में यूपीएमएसआरए हल्द्वानी यूनिट के कोषाध्यक्ष संजीव श्रीवास्तव, यूनिट सचिव जिया उल हक, नवीन सुपियाल, नंदन पांडे, रवि कांडपाल, मोहन सिंह, रमेश पंत, प्रेम सिंह, अंशुल शर्मा, दिनेश सती, गौख सिंह बिष्ट, और भरत सिंह शामिल हुए।

हड़ताल में शामिल हुई आशाएं

नैनीताल। उत्तराखण्ड आशा हेल्थ वर्कर्स यूनियन ने वीरवार को ट्रेड यूनियनों के राष्ट्रीय मंच द्वारा आहूत अखिल भारतीय आम हड़ताल में शामिल होकर नैनीताल के तल्लीताल स्थित गांधी चौक पर प्रदर्शन कर उप जिलाधिकारी के माध्यम से केंद्र व राज्य सरकार को ज्ञापन भेजा। यूनियन ने कहा कि नेशनल हेल्थ मिशन के तहत कार्यरत आशा वर्कर्स स्वास्थ्य विभाग के सभी अभियानों और सर्वे में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बावजूद न तो उन्हें न्यूनतम वेतन मिलता है और न ही कर्मचारी का दर्जा। गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं की देखभाल से लेकर विभिन्न स्वास्थ्य कार्यक्रमों तक सभी जिमेदारियां निभाने के बावजूद उन्हें काम के अनुरूप भुगतान नहीं मिल रहा और कई राज्यों में अलग-अलग प्रोत्साहन राशि दी जा रही है। कहा कि सीएम पुष्कर सिंह धामी ने 31 अगस्त 2021 को आशा प्रतिनिधिमंडल से वार्ता के बाद मासिक मानदेय तय करने और डीजी हेल्थ के प्रस्ताव के अनुसार 11 हजार 500 रुपये प्रतिमाह देने का आश्वासन दिया था लेकिन चार साल बाद भी यह वादा लागू नहीं हुआ। यूनियन ने केंद्र सरकार से इस वादे को तत्काल लागू कराने की मांग की। यूनियन ने चारों नए लेबर कोड वापस लेने, आशा वर्कर्स का नियमितीकरण और सम्मानजनक वेतन, पूरे देश में समान मानदेय, न्यूनतम वेतन व कर्मचारी का दर्जा, सेवानिवृति पर अनिवार्य पेंशन या तब तक 10 लाख रुपये की एकमुश्त राशि, विभिन्न मदों के भुगतान समय पर जारी करना, अस्पतालों में सम्मानजनक व्यवहार सुनिश्चित करना, विशेषज्ञ डाक्टरों के खाली पद भरना तथा सभी अस्पतालों में आशा घर का निर्माण शामिल है। यूनियन ने चेतावनी दी है कि यदि मांगों पर समयबद्ध कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन तेज किया जाएगा। इस दौरान चन्द्रा सती, दुगा टम्टा, प्रेमा अधिकारी, भगवती शर्मा, देवकी रौतेला, नीरू पुजारी, प्रभा विष्ट, सरिता कुरिया, रमा गैड़ा, मनीषा आर्या, शांति आर्या तथा निर्मला चंद्रा आदि मौजूद रहे।

सुनियोजित अभियान पर भड़का ट्रस्ट

मां नयना देवी मंदिर की छवि धूमिल करने पर दी तहरीर

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। नैनीताल के श्री मां नयना देवी मंदिर की छवि को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से सोशल मीडिया पर सुनियोजित अभियान चलाए जाने का आरोप लगाया गया है। इस संबंध में श्री मां नयना देवी मंदिर अमर उदय ट्रस्ट नैनीताल की ओर से कोतवाली मल्लीताल में तहरीर दी गई है। ट्रस्ट के अध्यक्ष राजीव लोचन साह के अनुसार कुछ समय पूर्व एक मुस्लिम दंपत्ति की ओर से गलत फहमी में जूते पहनकर मंदिर के मुखय द्वार से भीतर प्रवेश करने की घटना सामने आई थी। इस घटना को लेकर शरारती तत्वों ने सोशल मीडिया पर भड़काऊ प्रचार करते हुए धार्मिक विद्वेष फैलाने का प्रयास किया। इस मामले में तत्काल पुलिस को तहरीर दी गई थी लेकिन दो सप्ताह बीत जाने के बावजूद अब तक की गई कार्रवाई व प्राथमिकी दर्ज होने अथवा पूछताछ की स्थिति की कोई जानकारी ट्रस्ट को नहीं दी गई है, इससे श्रद्धालुओं में असंतोष व्याप्त है। साह ने कहा कि इसके अतिरिक्त ट्रस्ट ने एक अन्य वीडियो का भी संज्ञान लिया है जो वर्तमान में सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो में एक महिला की ओर से दर्शकों से यह कहा जा रहा है कि श्री मां नयना देवी मंदिर का प्रसाद घर नहीं ले जाना चाहिए। ट्रस्ट का कहना है कि यह बयान न केवल मंदिर परंपराओं का अपमान है बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था पर सीधा प्रहार भी है। प्रतिवर्ष देश-विदेश से लाखों भक्त श्रद्धापूर्वक मंदिर का प्रसाद अपने घर ले जाते हैं। उक्त वीडियो को साक्ष्य के रूप में पेन ड्राइव में कोतवाली को सौंपा गया है। ट्रस्ट ने दोनों मामलों में दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की सुसंगत धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर कठोर कार्रवाई की मांग की है ताकि भविष्य में कोई भी व्यक्ति धार्मिक भावनाओं को आहत करने का दुस्साहस न कर सके। ट्रस्ट ने पुलिस से इस प्रकरण में की गई कार्रवाई से लिखित रूप में अवगत कराने का भी अनुरोध किया है। मामले में कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक हेम चंद्र पंत ने बताया कि शिकायत के बाद मामले में जांच की जा रही है। तथ्यों के आधार पर कार्रवाई की जाएगी साथ ही संबंधित जानकारी से ट्रस्ट को अवगत कराया जाएगा।

शांतिपूर्ण शुरु हुई आईएससी की बोर्ड परीक्षा

नैनीताल। सरोवर नगरी नैनीताल में वीरवार से इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट (आईएससी) की 12वीं की बोर्ड परीक्षा शांतिपूर्ण शुरू हो गई। पहले दिन मनोविज्ञान की परीक्षा हुई। दूसरी ओर अब 17 फरवरी मंगलवार से इंडियन सर्टिफिकेट ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन (आइसीएसई) 10वीं की परीक्षाएं शुरु होंगी। शेरवुड कालेज के प्रधानाचार्य अमनदीप संधु ने बताया कि आईएससी बोर्ड से संबद्ध नगर में चार विद्यालय संचालित किए जाते हैं जिनमें शेरवुड कालेज, आल सेंट्स कालेज, सेंट मैरी कॉन्वेंट कालेज और सेंट जोजफ कालेज के शामिल है। संधु के मुताबिक लगभग 225 विद्यार्थी 12वीं की परीक्षा दे रहे हैं और 350 विद्यार्थी 10वीं की परीक्षा में शामिल होंगे। कहा कि 12वी की परीक्षा 6 अप्रैल तक जारी रहेगी जबकि 10वीं की परीक्षा 25 मार्च को समाप्त हो जाएगी। बताया कि वीरवार को 12वीं की मनोविज्ञान की परीक्षा शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। शुक्रवार आज अंग्रेजी का प्रश्न पत्र होंगा।

यूकेडी ने कार्यकर्ताओं को सौंपी गई जिम्मेदारियां

अल्मोड़ा। उत्तराखंड क्रांति दल युवा प्रकोष्ठ की बैठक बुधवार को जिलाध्यक्ष रघुवर सिंह भाकुनी की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में 19 फरवरी को युवा प्रकोष्ठ के केंद्रीय अध्यक्ष आशीष नेगी एवं केंद्रीय युवा टीम के अल्मोड़ा आगमन कार्यक्रम की रूपरेखा तय की गई। कार्यक्रम की सफलता के लिए विभिन्न ब्लॉकों की जिम्मेदारियां सौंपी गईं। अल्मोड़ा नगर की व्यवस्था महानगर अध्यक्ष मोहित शाह को दी गई। लमगड़ा, धौलादेवी, हवालबाग, ताकुला व मजखाली क्षेत्र के पदाधिकारियों को भी दायित्व सौंपे गए। बैठक में जिलाध्यक्ष दिनेश जोशी, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष दीपा जोशी, केंद्रीय मंत्री गिरीश नाथ गोस्वामी समेत अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

संक्षिप्त खेल समाचार

देव-सिन्हा भारतीय टीम को लीड करेंगे

नई दिल्ली, वार्ता। ऑस्ट्रेलिया के डेन स्वीनी और जापान के सेइता वतनबे दिल्ली ओपन 2026 में एक कॉम्पिटिटिव डबल्स फील्ड में हेडलाइन करेंगे, जो 16 से 22 फरवरी तक डीएलटीए कॉम्प्लेक्स में होगा। एटीपी चैलेंजर इवेंट में जाने-माने डबल्स स्पेशलिस्ट और सिगल्स प्लेयर्स का एक मजबूत मिक्स है, जो ड्रॉ में गहराई और रोमांच जोड़ता है। स्वीनी और वतनबे फील्ड में ऑप-रैंक वाली जोड़ी के रूप में एंट्री करते हैं, जिनकी कंबाइंड टीम रैंकिग 265 है। वतनबे, जो डबल्स में 127 रैंक पर हैं, स्वीनी के साथ मिलकर काम करते हैं, जो सिगल्स में 138 पर हैं, जो टूर्नामेंट में सबसे मजबूत कॉम्बिनेशन में से एक है। भारतीय चुनौती का नेतृत्व एस डी प्रज्ज्वल देव व नितिन कुमार सिन्हा करेंगे, जो मेन ड्रॉ में सबसे ऊंची रैंक वाली ऑल-इंडियन जोड़ी हैं। देव (219) व सिन्हा (243) एक अनुभवी इंटरनेशनल फील्ड के खिलाफ जाने-पहचाने घरेलू हालात का फायदा उठाने की कोशिश करेंगे।

इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट की महिला टीम ने जीता खिताब

नई दिल्ली, वार्ता। इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंस ने गत विजेता दिल्ली यूनिवर्सिटी एलुमना को कांटे के संघर्ष में सडनडेथ में 8-7 से पराजित कर 12वें पद्मश्री श्याम लाल मेमो. रियल हॉकी टूर्नामेंट में महिला वर्ग का खिताब जीत लिया। विज. ता टीम की खिलाडी यशस्वी ने प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड प्राप्त किया। श्याम लाल कॉलेज के मैदान पर खेले गए फाइनल में इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंस (आईजीआईपीईएसएस) और दिल्ली यूनिवर्सिटी एलुमना के बीच निर्धारित समय में मुक. ाबला 2-2 से बराबरी पर रहा था। इसके बाद टाईब्रेकर में भी दोनों टीमों ने पांच-पांच गोल कर दिए और स्कोर 7-7 हो गया।

बेंगलुरु आईटीएफ महिला टूर्नामेंट की मेजबानी को तैयार

बेंगलुरु, वार्ता। नीदरलैंड्स पर डेविस कप में भारत की रोमांचक जीत के कुछ दिनों बाद, बेंगलुरु एक और मशहूर इंटरनेशनल टेनिस टूर्नामेंट - केप. ीबी ट्रस्ट आईटीएफ महिला ओपन 100 बेंगलुरु 2026 के चौथे एडिशन को होस्ट करने के लिए तैयार है। यह टूर्नामेंट, जो भारत का सबसे बड़ा आईटीएफ महिला टेनिस टूर्नामेंट है, जो 15-22 फरवरी तक बेंगलुरु के एस-एम- कृष्णा टेनिस स्टेडियम में होगा। आईटीएफ महिला 100 कैटेगरी में डब्ल्यूटीए रैंकिग पॉइंट्स मिलते हैं और यह आईटीएफ और डब्ल्यूटीए टूर्स के बीच एक ब्रिज का काम करता है। इस इवेंट में 32-प्लेयर सिगल्स मेन ड्रॉ, 32-प्लेयर क्वालिफाइंग ड्रॉ और 16-टीम डबल्स ड्रॉ शामिल हैं, जिसका मेन ड्रॉ 17 फरवरी से शुरू होगा। भारत की ऑप रैंक वाली महिला खिलाड़ी सहजा , देश की ऑप रैंक वाली जूनियर खिलाड़ी से होगा।

जिम्बाब्वे की नजरें उलटफेर करने पर

● **जिम्बाब्वे का मुकाबला टूर्नामेंट की फेवरेट टीम ऑस्ट्रेलिया से होगा, ऑस्ट्रेलिया इस मुकाबले में जीत की जबरदस्त संभावना व दुनिया भर में दबदबे के साथ उतरेंगा**

कोलंबो, वार्ता। ग्रुप बी में सबकी नजरें अब क्लासिक डेविड बनाम गोलियथ मुकाबले पर टिकी हैं, जब शुक्रवार को यहां आर- प्रेमदासा इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में टी-20 वर्ल्ड कप 2026 में जिम्बाब्वे का मुकाबला टूर्नामेंट की फेवरेट टीम ऑस्ट्रेलिया से होगा।

ऑस्ट्रेलिया इस मुकाबले में जीत की जबरदस्त संभावना और दुनिया भर में दबदबे के साथ उतर रहा है, लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या जिम्बाब्वे इस एडिशन का पहला बड़ा उलटफेर कर सकता है? सिकंदर रजा की टीम ने चुपचाप मोमेंटम बना लिया है। ओमान पर उनकी आठ विकेट की बड़ी जीत ने गेंद से डिसिप्लिन और बल्ले से धैर्य दिखाया। लेकिन शुक्रवार का मुकाबला एक बिल्कुल अलग चुनौती पेश करता है। ऑस्ट्रेलियाई टीम का सामना करना जिसमें पावर-हिटर्स, अच्छे ऑलराउंडर्स और कोलंबो के हालात के हिसाब से एक मजबूत स्पिन अटैक है।

जिम्बाब्वे की उम्मीदें निडर रवैए पर टिकी होंगी। ब्रायन बेनेट, जिन्होंने पिछले गेम में 48 रन बनाए, पिछले साल उनके सबसे लगातार परफॉर्मर रहे हैं और ऑप पर अहम होंगे। अगर बेनेट और तदीवानाशे मारुमानी नई गेंद को संभालकर एक मजबूत प्लेटफॉर्म तैयार कर पाते हैं, तो ब्रेंडन टेलर, रजा और रयान बर्ल की अनुभवी तिकड़ी बीच के ओवरों में स्कोरिग को आगे बढ़ा सकती है। असली मौका गेंद के साथ हो सकता है। ब्लेसिग मुजराबानी और रिचर्ड नगारवा ने अपने पिछले मैच में छह विकेट लेकर शानदार प्रदर्शन किया था। एक ऐसी सतह पर जिससे शुरू में स्विग और बाद में टर्न मिलने की उम्मीद है, जिम्बाब्वे का पेस-स्पिन कॉम्बिनेशन ऑस्ट्रेलिया के आक्रामक ऑप ऑर्डर की परीक्षा ले सकता है। आयरलैंड के खिलाफ थोड़ी कमजोरी दिखाने वाले मिडिल ऑर्डर को बेनकाब करने के लिए शुरुआती ब्रेकथ्रू जरूरी होंगे। हालांकि, ऑस्ट्रेलिया अभी भी मजबूत है। कप्तान ट्रैविस हेड लीडर के तौर पर पहली जीत हासिल करने के बाद आगे से लीड करने के लिए बेताब होंगे। जोश इंग्लिस, ग्लेन मैक्सवेल, मार्कस स्टोइनिस और कैमरन ग्रीन की मौजूदगी पूर्व चैंपियन को ऐसी गहराई देती है जिसका मुकाबला कुछ ही टीमें कर सकती हैं। एडम जम्पा और मैथ्यू कुहनेमन की उनकी स्पिन जोड़ी भी कोलंबो की धीमी होती पिच का फायदा उठा सकती है। प्रेमदासा की पिच ने हमेशा लक्ष्य का पीछा करने वाली टीमों को फायदा पहुंचाया है, पिछले दस में से आठ मैच बाद में बैटिग करने वाली टीम ने जीते हैं। मैच के दिन बादल छाए रहने का अनुमान है, जिससे गेंदबाजों को शुरुआत में और मदद मिल सकती है, जिससे मुकाबले में एक और अप्रत्याशित बात जुड़ जाएगी। जिम्बाब्वे के लिए, यह सिर्फ ग्रुप-स्टेज का मैच नहीं है। यह सोच को बदलने और खुद को सिर्फ हिस्सा लेने वाले के बजाय असली दावेदार के तौर पर पेश करने का मौका है। उलटफेर टी-20 वर्ल्ड कप की धड़कन रहे हैं, और सबसे छोटे फॉर्मेट में लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं होती। कागज पर ऑस्ट्रेलिया शायद बहुत ज्यादा पसंदीदा हो, लेकिन अगर जिम्बाब्वे खास मौकों का फायदा उठाता है।

आचार संहिता तोड़ने पर अफगानिस्तान के मोहम्मद नबी पर जुर्माना

दुबई, वार्ता। अफगानिस्तान के ऑलराउंडर मोहम्मद नबी पर टी-20 विश्व कप 2026 ग्रुप डी के मैच में दक्षिण अफीका के खिलाफ आईसीसी अचार संहिता के लेवल 1 को तोड़ने के लिए मैच फीस का 15 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है।

इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) की वेबसाइट के मुताबिक, नबी को कोड के आर्टिकल 2-4 को तोड़ने का दोषी पाया गया, जो इंटरनेशनल मैच के दौरान अंपायर के निर्देश को न मानने से जुड़ा है। यह घटना अफगानिस्तान की पारी के 14वें ओवर की शुरुआत में हुई, जब नबी दक्षिण अफीका के तेज गेंदबाज लुंगी एनगिडी के रिस्टबैंड को लेकर मैदानी अंपायरों से बात कर रहे थे। लेवल 1 के उल्लंघन पर कम से कम ऑफिशियल फटकार और ज्यादा से ज्यादा खिलाड़ी की मैच फीस का 50 परसेंट जुर्माना हो सकता है। मैच का अंत बहुत ही नाटकीय तरीके से हुआ, जिसमें दक्षिण अफ्रीका ने दो सुपर ओवर के बाद रोमांचक जीत हासिल की। खास बात यह है कि मोहम्मद नबी ने 150 टी-20 इंटरनेशनल मैच खेले हैं, और इस फॉर्मेट में सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले खिलाड़ियों के एलीट ग्रुप में शामिल हो गए हैं।

स्टर्लिंग के स्कैन की रिपोर्टों का इंतजार

● **आयरलैंड के कप्तान पॉल स्टर्लिंग को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 विश्व कप मैच के दौरान घुटने में लगी थी चोट**

कोलंबो, वार्ता। आयरलैंड को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 वर्ल्ड कप मैच के दौरान कैप्टन पॉल स्टर्लिंग के घुटने में लगी चोट की गंभीरता का पता लगाने के लिए स्कैन के नतीजों का इंतजार है। बुधवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आयरलैंड की 67 रन की हार के दौरान एक कैच पूरा करते समय स्टर्लिंग के दाहिने घुटने में चोट लग गई थी। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) की वेबसाइट के अनुसार, ओपनर ने आयरलैंड के लक्ष्य का पीछा करते हुए बैटिग करने के लिए आने पर समस्या और बढ़ा दी और आखिरकार उन्हें रिटायर हर्ट होना पड़ा। बैटिंग कोच गैरी विल्सन ने मैच के बाद कन्फर्म किया कि स्टर्लिंग को स्कैन के लिए भेजा गया था। विल्सन ने कहा कि यह बहुत अच्छा नहीं लग रहा है। वह आज शाम स्कैन के लिए गए थे, इसलिए हमें कन्फर्मेशन का इंतजार करना होगा। लेकिन मैं कहूंगा कि यह आइडियल नहीं लग रहा है। विल्सन ने बताया कि स्टर्लिंग ने टीम के लिए योगदान देने की कोशिश में तकलीफ के बावजूद बैटिंग करने का फैसला किया। विल्सन ने कहा कि इसका क्रेडिट उसे जाता है। उसे पता था कि वह शायद ठीक नहीं है, और फिर भी उसने टीम के लिए काम पूरा करने की कोशिश की। बदकिस्मती से, आज रात ऐसा नहीं हो सका। यह टूर्नामेंट में आयरलैंड की दूसरी हार थी, जिससे उन्हें सुपर आठ में पहु. चने की अपनी उम्मीदों को जदि रखने के लिए ओमान और जिम्बाब्वे के खिलाफ अपने बाकी ग्रुप मैचों में जीत की जरूरत थी। हालांकि, विल्सन आशावादी बने रहे, उन्होंने कहा कि आयरलैंड ने अपने शुरुआती मैचों में अच्छे संकेत दिखाए थे। उन्होंने कहा कि श्रीलंका के खिलाफ 65.70 प्रतिशत गेम के लिए, मुझे लगा कि हम बेहतर टीम थे। बस उनकी और हमारी पारी के आखिरी पांच ओवर ऐसे थे जहां हम ठीक से तालमेल नहीं बिठा पाए। उस ड्रेसिग रूम में बहुत टैलेंट है और बहुत ज्यादा विश्वास है।

डीवाई पाटिल टी-20 टूर्नामेंट में खेलेंगे वैभव

● **मुंबई में हर साल होने वाले इस टूर्नामेंट में 16 टीमें हिस्सा लेती हैं**

मुंबई, वार्ता। टीनएज सेंसेशन वैभव सूर्यवंशी के मुंबई में डीवाई पाटिल टी-20 टूर्नामेंट में खेलने की संभावना है। नवी मुंबई में होने वाले इस सालाना कॉम्पिटिशन में हर साल 16 टीमें हिस्सा लेती हैं, और इस सीजन में भारत का अंडर-19 वर्ल्ड कप जीतने वाला यह स्टार डीवाई पाटिल की किसी एक टीम को रिप्रेजेंट करने के लिए तैयार है। ऑर्गनाइजर आमतौर पर कॉम्पिटिशन में दो टीमें उतारते हैं। सूर्यवंशी और टूर्नामेंट ऑर्गनाइजर के करीबी सूत्रों ने क्रिकबज को बताया है कि प्लेयर की टीम से बात. चीत चल रही है और इस युवा खिलाड़ी के टूर्नामेंट में खेलने की संभावना बहुत ज्यादा है। यह आईपीएल सीजन से पहले हो रहा है, और इस साल 23 फरवरी से शुरू होने वाले इस टूर्नामेंट में आमतौर पर कई इंटरनेशनल प्लेयर हिस्सा लेते हैं। सूर्यवंशी, जिन्होंने हाल ही में हरारे में इंग्लैंड के खिलाफ अंडर-19 वर्ल्ड कप फाइनल में रिकॉर्ड तोड़ 175 रन बनाए थे, अभी नागपुर के पास तालेगांव में हैं, जहां राजस्थान रॉयल्स की एक फैसिलिटी है। हरारे से आने के बाद, 14 साल का यह खिलाड़ी घर नहीं गया और इसके बजाय आईपीएल सीजन की तैयारी करने लगा। उनके एक करीबी सूत्र ने बताया कि वह अभी तालेगांव में प्रैक्टिस कर रहे हैं, जहां राजस्थान रॉयल्स का कैंप चल रहा है। कैंप 21 फरवरी तक चलेगा, जिसके बाद सूर्यवंशी पटना और फिर अपने होमटाउन जाएंगे। उनके शहर में एक प्रमोशनल इवेंट है। जहां उन्हें एक गाड़ी गि"ट किए जाने की उम्मीद है। लगता है यह बहुत पहले हो जाना चाहिए था और उसके बाद, वह डीवाई पाटिल टूर्नामेंट के लिए मुंबई आ सकते हैं। डीवाई पाटिल स्टेडियम में हर साल होने वाला डीवाई पाटिल टूर्नामेंट, देश के सबसे पुराने टी-20 कॉम्पिटिशन में से एक है, जो 2003 में शुरू हुआ था। यह जगह हाल ही में इंडियन और ग्लोबल क्रिकेट के हॉटस्पॉट में से एक रही है।

ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर ने जीता स्वर्ण पदक

● **ऐश्वर्य प्रताप ने निशानेबाजी चैंपियनशिप 2026 में 20 मी. राइफल थ्री पोजिशन में नए विश्व रिकॉर्ड के साथ जीता पदक**

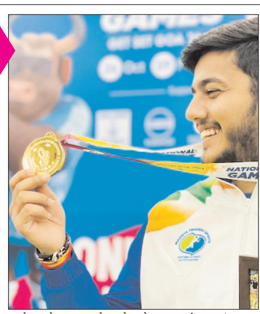

नई दिल्ली, वार्ता। दो बार के ओलंपियन ऐश्वर्य प्रताप सिह तोमर ने गुरुवार को एशियन निशानेबाजी चैंपियनशिप 2026 में पुरुषों की 50मी राइफल थ्री पोजीशन स्पर्धा में शानदार प्रदर्शन कर नया विश्व रिकॉर्ड बनाते हुए स्वर्ण पदक जीता। यहां डॉ. कर्णी सिह शूटिग रेंज में मुकाबला करते हुए, 25 साल के भारतीय निशानेबाज ने फाइनल में नीलिग, प्रोन और स्टैंडिंग राउंड के बाद कुल 362-0 के साथ अपने खिताब का बचाव किया। कुल मिलाकर, यह एशियन चैंपियनशिप में ऐश्वर्य प्रताप सिह तोमर का पांचवां व्यक्तिगत निशानेबाजी पदक है। इससे पहले उन्होंने दोहा 2019 में कांस्य, चांगवोन 2023 में स्वर्ण, जकार्ता 2024 में रजत और शिमकेंट 2025 में स्वर्ण पदक जीता था। भारत ने पुरुषों की 50मी राइफल थ्री पोजीशन स्पर्धा में भी क्लीन स्वीप किया, जिसमें नीरज कुमार ने 361-8 के साथ रजत और अखिल श्योरण ने 343.5 के स्कोर के साथ कांस्य पदक जीता। इससे पहले, नीरज, ऐश्वर्य और अखिल की तिकड़ी ने क्वालिफिकेशन राउंड में कुल 1769.106 स्कोर करके भारत को टीम स्वर्ण दिलाया। जापान 1754.86 के साथ दूसरे स्थान पर रहा, जबकि कजाकिस्तान ने 1748.87 के साथ कांस्य पदक जीता। नीरज 593.34 के साथ क्वालिफाइंग में शीर्ष पर रहे, उनके बाद रुद्रांक्ष पाटिल (591.33) रहे, जिन्होंने रैंकिग पॉइंट्स ओनली (आरपीओ) के लिए मुकाबला किया। ऐश्वर्य (588.40) क्वालिफिकेशन में तीसरे और अखिल (588.32) चौथे स्थान पर रहे। आरपीओ के लिए निशानेबाजी कर रहे निखिल तंवर ने 587.29 के साथ छठा स्थान हासिल किया। आज मिले पदकों के साथ चैंपियनशिप में भारत के पदकों की कुल संख्या 26 हो गई है। भारत ने 10 स्वर्ण, नौ रजत और सात कांस्य पदक जीते है।

श्रीलंका ने ओमान को 105 रनों से रौंदा

पल्लेकेले, वार्ता। कुसल मेंडिस (61), पवन रत्नायके (60) और कप्तान दासुन शनाका (50) की आतिशी अर्धशतकीय पारियों के बाद गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत श्रीलंका ने गुरुवार को टी-20 विश्वकप के 16वें मुकाबले में ओमान को 105 रनों से करारी शिकस्त दी। 226 रनों के विशाल लक्ष्य का पीछा करने उतरी ओमान के बल्लेबाज श्रीलंकाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे नहीं टिक सके और लगातार विकेट गंवाते रहे। ओमान की टीम निर्धारित 20 ओवर में नौ विकेट पर 120 रन ही बना सकी और 105 रनों से मुक. ाबला हार गई। वसीम अली ने 20 गेंदों में तीन छक्के उड़ाते हुए 27 रन बनाए।

उत्तराखण्ड पॉवर कारपोरेशन लिमिटेड
(उत्तराखण्ड सरकार का उपक्रम)
कॉरपोरेट आईडेन्टीटी नं० : UA40109UP2001SGC025867/2358, वि.क्रा.वि. गबर सिंह ऊर्जा भवन, कांवली रोड, देहरादून-248001
दूरभाष संख्याः 91-135-2763672-76, फैक्सः 91-135-2760289, वेबसाईटः www.uktenders.gov.in

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि०

ई-निविदा सूचना
(निविदा विशिष्टीकरण संख्या सीसीपी-II/21/2025-2026)

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि०, देहरादून निम्नलिखित सामग्री की आपूर्ति हेतु ई-निविदा आमंत्रित करता है :-

सामग्री का नाम	मात्रा	अनुमानित लागत (₹)	विगत तीन वित्तीय वर्षों का औसत टर्न ओवर (₹)	धरोहर राशि (₹)	निविदा प्रपत्र का मूल्य बिक्रीकर सहित (₹)	निविदा क्रय करने एवं निविदा प्रपत्र आनलाईन एवं आफलाईन जमा करने की अन्तिम तिथि एवं समय	आनलाईन एवं आफ लाईन निविदा भाग- एक खुलने की तिथि एवं समय
नया परिवर्तक ऑयल	200 कि० ली०	2.183 करोड़	4.000 करोड़	4.370 लाख	11 800	12.03.2026 को 17:00 बजे तक	13.03.2026 को 15:30 बजे

अन्य विवरण के लिए कृपया हमारी वेबसाईट www.uktenders.gov.in को देखें।
No.: 125/EE(CM)/UPCL/A-2 Date : 12.02.2026

अधीक्षण अभियन्ता
कारपोरेट (अनुबन्ध एवं क्रय-द्वितीय)

राष्ट्र हित में बिजली बचायें, कस्टमर केयर नं0- 18004190405
"विद्युत बिलों के 24X7 ऑन लाईन भुगतान हेतु www.upcl.org पर जायें"
(विद्युत चोरी की सूचना टोल फ्री नं. 18001804185 / फैक्स नं. 0135-2760911 पर दें)

कार्यालय जिला पंचायत पिथौरागढ़।

पत्रांक: 1905/जि0पं0/नि0अनु0/निविदा/ 2025-26 दिनांक: 11-02-2026

निविदा सूचना

जिला पंचायत, पिथौरागढ़ के समस्त पंजीकृत ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि, वित्तीय वर्ष 2025-28 में दैवीय आपदा मद में प्राप्त धनराशि से निम्न निर्माण कार्यो हेतु दिनांक 25.02.2026 तक कार्यालय में निर्धारित शुल्क जमा कर निविदा प्राप्त की जायेंगी। प्राप्त निविदायें दिनांक 26.02.2026 को अपरान्ह 1:00 बजे तक ठेकेदारों / प्रतिनिधियों द्वारा निविदा बॉक्स में जमा की जायेगी तथा जमा निविदायें दिनांक 26.02.2028 को ही अपरान्ह 3:00 बजे निविदा समिति एवं ठेकेदारों / प्रतिनिधियों के सम्मुख खोली जायेंगी। प्रत्येक निविदा प्रपत्र पर दरों का उल्लेख अंकों तथा शब्दों अथवा प्रतिशत में करना होगा। निविदा के साथ ठेकेदार द्वारा रु0 100.00 मूल्य का नॉन ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर एवं जिला पंचायत पिथौरागढ़ के ठेकेदारी पंजीकरण प्रमाण-पत्र तथा जी0एस0टी0 अदेय प्रमाण पत्र की छायाप्रति संलग्न करना अनिवार्य है। निविदा के साथ 2 प्रतिशत की जमानत धनराशि एन0एस0सी0 / के0वी0पी0/एफ0डी0आर0 जो कि अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत पिथौरागढ़ के नाम बंधक होनी आवश्यक है, प्रत्येक कार्य के लिए पृथक - पृथक लगानी अनिवार्य होगी। अन्य शर्तों की जानकारी हेतु किसी भी कार्यदिवस में कार्यालय में आकर सम्पर्क कर सकते हैं। बिना कारण बताये किसी भी निविदा को अस्वीकृत / निरस्त करने का अधिकार मा0 अध्यक्ष महोदय, जिला पंचायत, पिथौरागढ़ में निहित होगा।

नोटः- अवकाश की स्थिति में निविदा जमा एवं खुलने की प्रकिया उक्त तिथि से अगले कार्यालय दिवस में सम्पन्न होगी।

क0 स0	कार्य का नाम	स्वीकृत धनराशि (लाख में)	जमानत की धनराशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य	जी0एस0टी0 की धनराशि	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	जाजरी गाड़ में पुलिया क्षतिग्रस्त मरम्मत कार्य	10.20	20400	2040	367	45 दिन
2	प्रा0वि0 गिरगॉव स्कूल का मरम्मत कार्य	7.50	15000	1500	270	45 दिन
3	बड़गाड़ी में क्षतिग्रस्त पुलिया का निर्माण	11.00	22000	2200	396	45 दिन
4	चामी भैस्कोट शिवालय के पास पुलिया का एप्रोच कार्य	5.25	10500	1050	189	45 दिन
5	गडेरा के बगडीगाड गधेरे में क्षतिग्रस्त पुलिया का निर्माण	6.10	12200	1220	220	45 दिन
6	चामी भैस्कोट के पन्यारौली में आर0सी0सी0 पुलिया का एप्रोच कार्य	3.95	7900	790	142	45 दिन
7	आगनबाडी केन्द्र गणकोट भवन मरम्मत कार्य	3.00	6000	600	108	45 दिन
8	जिंखू खोल्टा में क्षतिग्रस्त पुलिया का निर्माण	7.10	14200	1420	256	45 दिन
9	जोशाल पट्टी आर0सी0सी0 गधेरे में क्षतिग्रस्त पुलिया का निर्माण	6.20	12400	1240	223	45 दिन
10	उर्ग में कैलीगाड़ गधेरे में भूमि सुरक्षा हेतु सुरक्षा दीवार निर्माण कार्य	8.30	16600	1660	299	45 दिन
11	उर्ग में भूमि सुरक्षा हेतु सुरक्षा दीवार निर्माण कार्य	8.25	16500	1650	297	45 दिन
12	बडाबे रोड से शिलिंग गधेरे तक क्षतिग्रस्त सी0सी0मार्ग	2.20	4400	440	79	45 दिन

अपर मुख्य अधिकारी
जिला पंचायत पिथौरागढ़।

पीएसएल के पहले ऑक्शन में नसीम, फहीम को मिली रिकॉर्ड फीस

ऑक्शन में नसीम शाह व फहीम अशरफ बड़े विनर रहे, जिन्हें सबसे ज्यादा कीमत मिली

इस्लामाबाद, वार्ता। पीएसएल के पहले ऑक्शन में नसीम शाह और फहीम अशरफ बड़े विनर रहे, जिन्हें सबसे ज्यादा कीमत मिली। 86.5 मिलियन पाकिस्तानी रुपए में, नसीम शहर के उस पार इस्लामाबाद यूनाइटेड से इस्लामाबाद के ट्विन सिटी, रावलपिडी में बनी नई टीम में चले गए, जबकि फहीम 85 मिलियन पाकिस्तानी रुपए में इस्लामाबाद यूनाइटेड लौट आए। हर टीम को रिटेंशन की संख्या आठ से घटाकर चार कर दी गई थी, इसलिए यह साफ था कि खिलाड़ियों को उनकी पुरानी टीमों ने ले लिया क्योंकि फेंचाइजी अपनी टीमों को मजबूत करना चाहती थीं। 2025 में कराची किग्स के कप्तान, डेविड वार्नर, 79 मिलियन पाकिस्तानी रुपए में फ्रेंचाइजी में लौट आए, जबकि लाहौर कलंदर्स हारिस रऊफ की सर्विस फिर से लेना चाहते थे, और उन्हें 76 मिलियन पाकिस्तानी रुपए में ले लिया। उन्होंने फखर जमान को रिटेन करने के लिए और भी ज्यादा पैसे दिए, जिसके लिए उन्हें 79.5 मिलियन पाकिस्तानी रुपए देने पड़े। राइली रोसौ एक और खिलाड़ी थे जो उस टीम में वापस जा रहे थे जहां उन्होंने पहली बार पीएसएल में अपना नाम बनाया था। क्वेटा ग्लैडिएटर्स, जिन्हें उन्होंने 2022 में अपना एकमात्र टाइटल जीतने में मदद की थी, ने साउथ अफीकन खिलाड़ी को 55 मिलियन पाकिस्तानी रुपए में खरीदा, जबकि हसन अली 47.6 मिलियन पाकिस्तानी रुपए में कराची लौटे। न्यूजीलैंड के दो खिलाड़ियों को नीलामी में ऊंची कीमतें मिलीं। डेरिल मिशेल ने एक जबरदस्त बोली लगाई, जिसका अंत रावलपिडी द्वारा 80. 5 मिलियन पाक रुपए में उनके लिए किए जाने के साथ हुआ, जबकि इस्लामाबाद यूनाइटेड ने इसी तरह की दिलचस्पी को रोकते हुए मार्क चैपमैन को 70 मिलियन पाक रुपए में साइन किया। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों में, एडम जम्पा को कराची ने 45 मिलियन पाकिस्तानी रुपए में साइन किया, जबकि 41 साल के पीटर सिडल को उनके हालिया बीबीएल फॉर्म के लिए 25 मिलियन पाक रुपए की डील मिली। हैदराबाद ह्यूस्टन किग्समेन ने मार्नस लाबुशेन को डायरेक्ट साइन किया था और सैम अयूब को रिटेन किया था। वे ऑक्शन में ज्यादा कंट्रोल में थे, लेकिनपाक -अमेरिकन फ्रेंचाइजी के तौर पर अपनी ब्रांड इमेज को मजबूत करने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने हम्माद आजम और शायन जहांगीर को लिया, जो पाक में जन्मे दो खिलाड़ी हैं और अब अमेरिका को रिप्रेजेंट करते हैं।

सेरुंडोलो अर्जेंटीना ओपन के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

ब्यूनस आयर्स, वार्ता। लोकल फेवरेट और ऑप सीड फ्रांसिस्को सेरुंडोलो बुधवार को बोलीविया के ह्यूगो डेलियन को 6-0, 7-6 (6) से हराकर अर्जेंटीना ओपन के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए। वर्ल्ड नंबर 19 सेरुंडोलो ने शुरुआती सेट में दम दिखाया और दूसरे सेट में आठ सेट पॉइंट बचाकर ब्यूनस आयर्स लॉन टेनिस क्लब के आउटडोर क्ले कोर्ट पर एक घंटे 24 मिनट में मैच अपने नाम कर लिया। 27 साल के सेरुंडोलो ने कहा कि शुरुआत में चीजें जिस तरह से हुईं, उससे मैं खुश था लेकिन फिर उसने अग्रेसिव खेलना शुरू कर दिया और यह मुश्किल हो गया। मैंने कुछ सेट पॉइंट बचाए और मैं बस आगे बढ़कर खुश हूं। सेरुंडोलो एटीपी 250 इवेंट के अगले राउंड में चेक रिपब्लिक के विट कोप्रिवा से भिड़ेंगे।

गंगनहर में होने वाले हादसों पर आखिर कब लगेगी लगाम!

निगम पुल से सोलानी पार्क तक पिकनिक स्पॉट तो बना दिया पर सुरक्षा के नहीं किए गए है पुख्ता इंतजाम

अख्तर मलिक

रुड़की। नगर निगम पुल से सोलानी पार्क तक गंगनहर के घाटों पर पिकनिक स्पॉट व कुछ पूजा के धाम तो बना दिये है लेकिन सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम नहीं किए गए हैं जिसकी वजह निगम पुल से सोलानी पार्क तक लगातार हादसे से हो रहे हैं। हादसों में जहां काफी आमजन नहर में पैर फिसलने से डूब चुके हैं तो कई बार छात्रों की भी इसी तरह जान चली गई है। लेकिन प्रशासन ने इन हादसों से सबक लेते हुए आज तक सुरक्षा के स्थायी इंतजेमाम नहीं किय हैं।

ऐसे में अगर नगर निगम पुल से सोलानी पार्क तक इन घाटों पर अगर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाएं तो शायद होने वाले इन हादसों पर लगाम लग सकती है इसके लिए अगर प्रशासन इन घाटों पर परमानेंट जल पुलिस या एसडीआरएफ के जवानों की ड्यूटी भी लगाई जाये तो जरूर आगे लोगों की जान बच सकती है।

अवगत करा दें कि रुड़की नगर निगम लोहे वाले पुल से लेकर सोलानी पार्क तक गंग नहर के घाटों को एक तरह से पिकनिक स्पॉट के तौर पर विकसित कर दिया है और अब तो यहा पूजा धाम भी बना दिये हैं। खासकर गर्मियों में शाम के टाइम लोगों का जमावाड़ा भी लगा रहता है कुछ लोग इन घाटों पर नहर में पैर लटका कर बैठते हैं तो कुछ लोग फ्री टाइम में यहां शाम के समय

❖अब से पहले भी कई छात्र व आमजन गंवा चुके हैं इसी तरह अपनी जान

❖इन घाटों पर अगर जल पुलिस या एसडीआरएफ की परमानेंट ड्यूटी लगे तो हादसों पर लग सकती है लगाम

ठंडे पानी का लुफ्त लेने के लिए भी आते हैं। तो कुछ लोग यहां अपने परिवार के साथ भी मौज मस्ती के लिए अक्सर देखे जा सकते हैं और जब से निगम प्रशासन ने घाटों पर सौंदर्यकरण कराने के साथ गंगा आरती स्थल बनाया है तब से तो यहां आरती करने वालों की व पिकनिक के तौर पर घूमने वालों का और ज्यादा भीड बढ गयी है। शाम 5:00 के बाद अक्सर गंग नहर नगर निगम पुल से सोलानी पार्क तक हजारों की संख्या में लोग यहां देखे जा सकते हैं कुछ लोग इन घाटों पर नीचे बैठे रहते हैं तो कुछ लोग दूर से ही यहां एंजॉय करने आते हैं। अब जिस तरह से निगम प्रशासन ने यहां लाइटिंग की व्यवस्था कर दी है बैठने के

लिए बैंच लगवा दी हैं घाटों पर साफ सफाई का भी ध्यान रखा जा रहा है तो उसे यहां आने वाले लोगों की संख्या में और भारी इजाफा हो गया है लेकिन यहां पहले से ही होने वाले हादसों को लेकर निगम व प्रशासन ने आजतक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। ऐसा नहीं है कि यहां हादसे नहीं हो रहे हैं कभी ना कभी अक्सर नगर निगम पुल से लेकर सोलानी पार्क तक इसी तरह पैर फिसलने से हादसे होते रहे हैं जब हादसे होते हैं तो तब निगम प्रशासन व अन्य प्रशासन सुरक्षा को लेकर सोचता है लेकिन अभी तक यहां प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम नहीं किए हैं जबकि इतनी बड़ी तादाद में यहां लोग रोज आते हैं और घंटों तक अपना वक्त बिता कर चले जाते हैं।

जिस तरह से बुधवार को आईआईटी का छात्र पैर फिसलने से नहर में डूबा और काफी देर तक बचाव के लिए चिल्लाता रहा अगर इस दौरान यहां कोई जल पुलिस या एसडीआरएफ का जवान तैनात होता तो शायद उसकी जान बच सकती थी। और इत्तेफाक की बात यह है कि अब तक जितने पहले हादसे हुए हैं उनमें भी जल पुलिस से पहले यहां तैराकी में माहिर कुछ युवकों ने व एक मोनू जलवीर के नाम से मशहूर युवक ने ही काफी लोगों की जान बचाई है। लेकिन प्रशासन ने लगातार होने वाले गंगनहर घाटों पर हादसों से सबक लेते हुए जन सुरक्षा के लिए गंभीरता से ठोस कदम नहीं उठाया है। प्रशासन को यहां आने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए भी स्थाई इंतजाम करने होंगे तभी आगे चलकर इन हादसों पर रोक लगा सकती है। अन्यथा लोग यहां घूमने आते रहेंगे और यूं ही अपनी जान गवाते रहेंगे। और यूं ही प्रशासन की कार्यशैली पर भी सवाल खड़े होते रहेंगे। अब देखना होगा कि यहां होने वाले इन दर्दनाक हादसों से प्रशासन क्या सबक लेता है क्या निगम पुल से सैलानी पार्क तक एसडीआरएफ व जल पुलिस के जवानों की स्थायी नियुक्ति करता है यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा।

गंगनहर में डूबे छात्र का 24 घंटे में भी नहीं लगा सुराग

एसएसपी ने गंगनहर पहुंच कर लिया सर्च ऑपरेशन का जायजा

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। बुधवार को देर शाम आईआईटी के द्वितीय वर्ष के छात्र आशीष शुक्ला गंगेर नहर में पैर फिसलने से लापता हो गया। जिसकी तलाश के लिए बुधवार शाम से ही लगातार सर्च आपरेशन चल रहा है। लेकिन 24 घंटे के बाद भी लापता हुए छात्र का सुराग नहीं लग पाया है।

बनारस निवासी आईआईटी का छात्र आशीष शुक्ला अपने दो दोस्तो के साथ देर शाम आइआइटी से रूडकी गंगनहर पुल पर घूमने गया था लेकिन अचानक ही उसका पैर फिसल गया और नहर में डूबता चला गया। तुरंत ही लोगों व दोस्तों ने उसे बचाने का काफी प्रयास किया लेकिन वह नहर में समाता चला गया। सूचना पर स्थानीय पुलिस व जल पुलिस के एसडीआरएफ लगातार छात्र को ढूंढने के लिए सर्च ऑपरेशन चल रही है लेकिन अभी तक कोई पता नहीं चल पाया है आज बृहस्पतिवार को एसएसपी प्रमिंदर सिंह डोभाल भी सर्च

❖बुधवार देर शाम आईआईटी रूडकी का छात्र आशीष शुक्ला गंगनहर में पैर फिसल कर हो गया था लापता

अभियान का जायजा लेने के लिए गंग नहर किनारे पहुंचे और सर्च ऑपरेशन के तमाम हालात काजल जालिया। जानकारी के अनुसार, आशीष शुक्ला अपने कुछ साथियों के साथ नहर किनारे घूमने गए थे। इसी दौरान अचानक उनका पैर फिसल गया और वह सीधे गहरे पानी में जा गिरे। तेज बहाव और गहराई के कारण वह कुछ ही पलों में पानी में समा गए। साथियों ने शोर मचाकर मदद की गुहार लगाई, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस, जल पुलिस और राहत-बचाव दल तत्काल मौके पर पहुंच गए। बचाव टीमों ने नहर में नावों के जरिए व्यापक तलाशी अभियान चलाया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रमेन्द्र सिंह डोभाल स्वयं घटनास्थल पर पहुंचे और पूरे ऑपरेशन की निगरानी की। उन्होंने नाव में बैठकर नहर के कई किलोमीटर क्षेत्र में सघन तलाशी अभियान चलवाया। मौके पर क्षेत्राधिकारी, थाना प्रभारी सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। प्रशासन की ओर से गोताखोरों को भी लगाया गया, लेकिन देर रात तक छात्र का कोई पता नहीं चल सका। घटना की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थान के छात्र के साथ हुई इस घटना ने पूरे क्षेत्र को स्तब्ध कर दिया है। सहपाठियों और शिक्षकों में भी गहरा शोक व्याप्त है। एस एसपी ने बताया कि बुधवार शाम से ही सर्च ऑपरेशन लगातार चल रहा हैजल पुलिस में एसडीआरएफ की टीम छात्र को खोजने के लिए पूरी ताकत झोंक हुए हैं जल्द ही लापता छात्र को खोज लिया जाएगा।

पुलिस ने दो मासूम बच्चों को परिजनों से मिलाया

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। कोतवाली गंगनहर पुलिस की तत्परता और सजगता के चलते आज दो मासूम बच्चों को सकुशल उनके परिजनों से मिलाया गया।प्राप्त जानकारी के अनुसार तेलीवाला, पाडली गुज्जर निवासी बालिका आनालिया (4 वर्ष) पुत्री इब्राहिम एवं बालक उमर (4 वर्ष) पुत्र मुस्तकीम को उनके परिजनों द्वारा आंगनबाड़ी केंद्र तेलीवाला में छोड़ा गया था। खेल-खेल में दोनों बच्चे आंगनबाड़ी से निकलकर अकेले ही रेलवे स्टेशन रुड़की की ओर पहुंच गए। रेलवे स्टेशन क्षेत्र में ड्यूटी के दौरान चेतक-47 पर तैनात कांस्टेबल सुरेंद्र सिंह एवं स्पेशल पुलिस ऑफिसर राजेंद्र त्यागी की नजर जब इन बच्चों पर पड़ी तो उन्होंने मानवीय संवेदनशीलता दिखाते हुए तत्काल दोनों बच्चों को अपनी अभिरक्षा में लेकर कोतवाली गंगनहर पहुंचाया।पुलिस टीम द्वारा तत्परता से बच्चों के परिजनों की तलाश शुरू की गई। काफी खोजबीन और प्रयासों के बाद माता-पिता का पता लगाकर दोनों मासूमों को सकुशल उनके सुपुर्द कर दिया गया। अपने बच्चों को सुरक्षित पाकर परिजनों ने गंगनहर पुलिस का हृदय से आभार व्यक्त किया। गंगनहर पुलिस की सक्रियता से एक संभावित अप्रिय घटना टल गई। पुलिस ने आमजन से अपील की है कि छोटे बच्चों पर विशेष निगरानी रखें और उन्हें अकेला न छोड़ें।

सड़क हादसे में मौत पर मुकदमा

झबरेडा। थाना क्षेत्र में चार माह पूर्व हुई सड़क दुर्घटना के मामले में तहरीर मिलने पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है।ग्राम जोला डिडौली थाना नागल जिला सहारनपुर निवासी सुबोध कुमार ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसका जीजा शैलेन्द्र कुमार पुत्र मामचन्द निवासी ग्राम सैनिक कालोनी थाना गंगनहर रुडकी जिला हरिद्वार 1 अक्टूबर को इकबालपुर की ओर से मोटरसाइकिल पर सवार होकर रुड़की जा रहा था जब वह इकबालपुर से कुछ आगे पहुंचा तो एक तेज रफ्तार ट्रक ने ट्रक को लापरवाही से चलते हुए गलत साइड से टक्कर मार दी थी जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया था घायल को ऋषिकेश एम्स ले जाया गया लेकिन जहां इमरजेंसी में बेड न मिलने पर घायल को देहरादून अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां पर 5 अक्टूबर को उपचार के दौरान घायल की मृत्यु हो गई थी।

लंढौरा में बिजली बकायादारों के कनेक्शन काटे

शाह टाइम्स संवाददाता

लंढौरा। वीरवार को ऊर्जा निगम की टीम ने लंढौरा में बिजली बकायादारों के खिलाफ अभियान चलाया। जिसमें ढाई लाख रुपए के करीब वसूली तथा 14 बिजली के मीटर उतार कर जब्त कर किए गए हैं। कार्रवाई के दौरान बकायादारों में हडकंप मचा रहा।

वीरवार को एसडीओ गुलशन बुलानी के निर्देश पर उर्जा निगम की टीम ने बिजली बकायादारों के खिलाफ अभियान चलाकर ढाई लाख रुपए की वसूली तथा 14 लोगों के घरों और दुकानों से बिजली के मीटर उखाड़ कर जब्त कर जब्त किए है। एसडीओ का कहना है कि 25 हजार से अधिक के बकायेदार के खिलाफ मीटर उखाड़ने का कार्य लगातार जारी रहेगा। कार्रवाई के दौरान उपभोगताओं को स्मार्ट मीटर के बारे में भी जानकारी दी गई टीम में जेई विनोद कुमार, गौरव पुंडीर, नदीम आलम, गालिब राव आदि शामिल रहे।

निजीकरण के खिलाफ ऊर्जा कर्मियों की हुंकार प्रदर्शन

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। ऊर्जा निगम के निजीकरण के विरोध में कर्मचारियों और अधिकारियों का गुस्सा फूट पड़ा है। गुरुवार को रुड़की स्थित अधीक्षण अभियंता कार्यालय पर ऊर्जा निगम के विभिन्न संगठनों से जुड़े कर्मचारियों और अधिकारियों ने एक दिवसीय सांकेतिक धरना देकर सरकार की नीतियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इस आंदोलन को भारतीय किसान यूनियन (रोड) गुट ने भी अपना समर्थन दिया है।

आम जनता के लिए घातक है निजीकरण: ऊर्जा निगम के अधीक्षण अभियंता विवेक राजपूत ने धरने को संबोधित करते हुए निजीकरण के दूरगामी परिणामों पर चिंता जताई। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा की बिजली का निजीकरण न केवल कर्मचारियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है, बल्कि इससे आम जनता को भी भारी नुकसान होगा। निजी कंपनियां सिर्फ मुनाफे के लिए काम करती हैं, जिससे बिजली की दरें बेतहाशा बढ़ेंगी और गरीब व मध्यम वर्ग की पहुंच से बिजली दूर हो जाएगी। इस विरोध प्रदर्शन की खास बात यह रही कि भारतीय किसान यूनियन (रोड) के पदाधिकारियों ने भी ऊर्जा निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर धरने में शिरकत की। भाकियू नेताओं ने कहा कि यदि ऊर्जा क्षेत्र निजी हाथों में गया, तो किसानों को दी जाने वाली सब्सिडी और रियायतों पर भी तलवार लटक जाएगी। यूनियन ने चेतावनी दी कि यदि निजीकरण का फैसला वापस नहीं लिया गया, तो किसान और कर्मचारी मिलकर बड़े स्तर पर आंदोलन करेंगे।

सोशल मीडिया पर फायरिंग का वीडियो वायरल

रुड़की। कोतवाली गंगनहर क्षेत्र में सोशल मीडिया पर एक युवक का बंदूक से फायरिंग करता वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने तत्काल जांच शुरू कर दी। वीडियो के आधार पर युवक की तलाश करते हुए पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया। जांच के दौरान पता चला कि वीडियो में दिखाई दे रही बंदूक असल में एयरगन थी। युवक ने सोशल मीडिया पर सुर्खियां बटोरने के उद्देश्य से एयरगन के साथ वीडियो बनाकर प्रसारित किया था। पुलिस ने आरोपी अयान पुत्र नौशाद, निवासी ग्राम माधोपुर, कोतवाली गंगनहर, उम्र 22 वर्ष के खिलाफ पुलिस एक्ट के तहत चालान काटा और सख्त लहजे में भविष्य में इस तरह की हरकत दोबारा न करने की चेतावनी दी।

फरार आरोपी के घर कुर्की नोटिस

मंगलौर। कोतवाली मंगलौर क्षेत्र के ग्राम खेड़ाजट में 3 फरवरी 2026 की शाम हुई सनसनीखेज फायरिंग की घटना में फरार चल रहे आरोपियों पर पुलिस का शिकंजा लगातार कसता जा रहा है। पुलिस प्रशासन ने इस मामले में सख्त रुख अपनाते हुए प्रभावी कार्रवाई तेज कर दी है। पुलिस बल के साथ ग्राम खेड़ाजट पहुंची, जहां फरार आरोपी हिमांशु उर्फ मौला पुत्र प्रवीण के घर न्यायालय के आदेश पर कुर्की की कार्रवाई की प्रक्रिया पूरी की गई। इस कार्रवाई के दौरान पुलिस ने ढोल-नगाड़े बजाकर पूरे गांव में मुनादी कराई। इसके साथ ही न्यायालय द्वारा जारी नोटिस आरोपी के घर के मुख्य द्वार तथा सार्वजनिक स्थानों पर चस्पा किए गए।

बीएसएम कॉलेज में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। बी. एस. एम इण्टर कॉलेज रूड़की में आज बड़े हर्ष का विषय है कि गायत्री तीर्थ शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा आयोजित श्भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षाश में विद्यालय को पूरे हरिद्वार जनपद में सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार को विद्यालय के प्रधानाचार्य कैप्टन अजय कौशिक द्वारा शांतिकुंज हरिद्वार में प्राप्त किया गया। विद्यालय के एक छात्र को जनपद स्तर पर द्वितीय स्थान एवम एक छात्र को तहसील स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। जिला स्तर पर द्वितीय स्थान कक्षा 12 में रितिक तथा तहसील स्तर पर प्रथम स्थान कक्षा 11 में हिमाँशु को प्राप्त हुआ है । इस अवसर पर बी. एस. एम इण्टर कॉलेज के प्रबंधक, बी. एस. एम शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष माननीय ममतेश कुमार शर्मा (एडवोकेट) एवम बी. एस. एम शिक्षण संस्थान के सचिव परम आदरणीय रजनीश कुमार शर्मा एडवोकेट ने संबोधित करते हुए कहा कि विद्यालय में पठन-पाठन के साथ पाठ्य सहगामी अनेकों क्रियाओं का संचालन किया जाता है जो छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। उन्होंने गायत्री तीर्थ शांतिकुंज हरिद्वार को धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, गायत्री शक्ति पीठ शांतिकुंज द्वारा आयोजित की जाने वाली एक परीक्षा है, इस परीक्षा का मकसद, छात्रों को भारतीय संस्कृति, परंपराओं, मूल्यों, और नैतिक शिक्षाओं के बारे में जानकारी देना है। यह परीक्षा छात्रों के मानसिक और चरित्र विकास को बढ़ावा देने के लिए आयोजित की जाती

है। विद्यालय के प्रधानाचार्य कैप्टन अजय कौशिक ने बी. एस.एम शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष, ममतेश कुमार शर्मा एडवोकेट जी एवम बी. एस.एम शिक्षण संस्थान के सचिव रजनीश कुमार शर्मा एडवोकेट जी का धन्यवाद अदा करते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन एवं सकारात्मक सोच की वजह से ही विद्यालय विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता रहता है। प्रधानाचार्य ने कहा कि शांतिकुंज द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा छात्रों में भारतीय संस्कृति के ज्ञान का प्रसार करती है। प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाने वाली यह परीक्षा छात्रों को संस्कृति एवम संस्कारों का ज्ञान देती है। प्रत्येक वर्ष विद्यालय में इस परीक्षा का आयोजन किया जाता है। विद्यालय के होनहार छात्रों द्वारा प्रत्येक वर्ष जनपद स्तर पर उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किए जाते हैं। इस वर्ष भी विद्यालय के दो छात्रों ने जूनियर एवम सीनियर वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया। उन्होंने गायत्री परिवार द्वारा वर्षों से संचालित की जाने वाली श्भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षाश को एक सकारात्मक एवं अग्रणीय कदम बताया है। शांतिकुंज का आंतरिक वातावरण बेहद सुख की अनुभूति प्रदान करने वाला एवं आत्मसार करने वाला है। इस पुरस्कार की उपलब्धि के लिए प्रधानाचार्य कैप्टन अजय कौशिक ने परीक्षा प्रभारी डॉक्टर अभय ढौंडियाल तथा विद्यालय के समस्त शिक्षकों एवम कर्मचारियों को शुभकामनायें प्रेषित की।

लेबर कोड्स के विरोध में बैंक कर्मचारियों का प्रदर्शन

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। 10 केंद्रीय ट्रेड यूनियनो के आह्वान पर चार श्रम संहिताओं (लेबर कोड्स) के विरोध में गुरुवार को एक दिवसीय राष्ट्रीय हड़ताल के तहत केनरा बैंक मकतूलपुरी शाखा के समक्ष विरोध प्रदर्शन आयोजित किया गया। इस हड़ताल को ऑल इंडिया बैंक एम्पलाइज एसोसिएशन (।प्ठम्।), ऑल इंडिया बैंक ऑफिसर्स एसोसिएशन (।प्ठव्ब) और बैंक एम्पलाइज फेडरेशन ऑफ इंडिया (ठम्थ्प्) का भी समर्थन मिला। प्रदर्शन में रुड़की क्षेत्र के सभी बैंकों के कर्मचारियों और अधिकारियों ने हिस्सा लिया। बताया गया कि इस राष्ट्रव्यापी हड़ताल में देशभर से लगभग 25 लाख कर्मचारियों और अधिकारियों ने सहभागिता की। प्रदर्शन को संबोधित करते हुए केनरा बैंक एम्पलाइज यूनियन उत्तराखंड के सचिव और न्थ्ठन् के संयोजक मन्नू माकिन ने सरकार से मांग की कि श्रम संहिताओं को वापस लिया जाए या उनमें उचित संशोधन किया जाए, ताकि मजदूरों, कर्मचारियों और महिलाओं के हितों की रक्षा सुनिश्चित हो सके। वक्ताओं ने कहा कि इन कानूनों के लागू होने से श्रमिकों के अधिकार प्रभावित हो सकते हैं और उन्हें कई प्रकार के नुकसान उठाने पड़ सकते हैं।

संबंध विच्छेद-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र मनफूल व उसकी पत्नी संगीता का आचरण मेरे व मेरे परिवार के प्रति ठीक न होने के कारण मैंने मनफूल व संगीता को अपनी तमाम चल अचल संपत्ति से बेदखल कर संबंध विच्छेद कर लिया है आज के बाद उक्त दोनों के किसी भी अनैतिक कृत्य व लेनदेन की मेरे व मेरे परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

जगराम पुत्र स्व. बारूराम नि. ग्राम आन्नेकी हेतमपुर, थना सिडकुल, जिला हरिद्वार।

350 किलो प्रतिबंधित मांस के साथ चार गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

पिरान कलियर। थाना क्षेत्र के कलियर नई बस्ती में गोवंश सरंक्षण स्क्वायड और पुलिस की संयुक्त टीम ने कार्रवाई करते हुए 341 किलोग्राम प्रतिबंधित पशु का मांस बरामद किया है। इस मामले में पुलिस ने चार व्यक्तियों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ उत्तराखंड गोवंश संरक्षण अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया है। थाना प्रभारी रविंद्र कुमार ने बताया कि बुधवार को मुखबिर से सूचना मिली कि कलियर नई बस्ती एक दुकान पर प्रतिबंधित मांस बेचा जा रहा है।सूचना के आधार पर पुलिस और गोवंश सरंक्षण स्क्वायड की संयुक्त टीम ने दुकान पर छापा मारा।दुकान के स्लैब के ऊपर और दुकान में लगे कुंडों में प्रतिबंधित मांस रखा हुआ है।पुलिस ने मौके से चार व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। साथ ही पूछताछ में आरोपियों ने अपने नाम समीर ,सावेज,मोफीक और दानिश निवासी कलियर बताया।पुलिस ने मौके से मांस काटने के उपकरण, दीप फ्रीजर, और एक मोटरसाइकिल बरामद की। बरामद मांस के नमूने प्रयोगशाला परीक्षण के लिए भेजे गए।

16 फरवरी को राज भवन के घेराव को लेकर

कांग्रेसियों ने बैठक कर बनाई रणनीति

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। 16 फरवरी को प्रस्तावित राजभवन घेराव के संबंध में गुरुवार को रुड़की महानगर कांग्रेस की एक महत्वपूर्ण बैठक रामनगर चौक स्थित एक होटल में आयोजित की गई। बैठक में पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को अधिक से अधिक लोगों को देहरादून लेकर जाने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

महानगर कांग्रेस अध्यक्ष एडवोकेट चौधरी राजेंद्र सिंह ने कहा कि जनता से जुड़े मुद्दों को लेकर पार्टी सड़कों पर उतरने के लिए तैयार है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे लोगों से संपर्क कर आंदोलन को सफल बनाएं।महासचिव सचिन गुप्ता ने कहा कि प्रदेश में बढ़ते भ्रष्टाचार और महंगाई से आम जनता परेशान है। इन जनविरोधी नीतियों के खिलाफ कांग्रेस मजबूती से आवाज उठाएगी । पूर्व हज कमेटी अध्यक्ष हाजी राव शेर मोहम्मद ने कहा कि युवाओं से जुड़े मुद्दों की लगातार अनदेखी की जा रही है। अंकिता भंडारी हत्याकांड जैसे गंभीर मामलों में न्याय की मांग को लेकर युवा भी आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे। बैठक में बताया गया कि राजभवन घेराव के दौरान भ्रष्टाचार, महंगाई और अंकिता भंडारी हत्याकांड समेत

कई ज्वलंत मुद्दों को प्रमुखता से उठाया जाएगा।इस अवसर पर गोपाल नारसन, भूषण त्यागी, सरदार हरविंद्र सिंह, मोहित त्यागी, नीरज सैनी, मदनपाल भड़ाना, अजय सिंह, संजय तोमर, मकसूद हसन,गुलसन्नवर,सलमान सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

किसान दिवस पर नई तकनीकों व सुरक्षा पर चर्चा

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। लक्सर विकासखंड के ब्लॉक सभागार में किसान दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी देना था।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद उप जिला अधिकारी लक्सर, सौरभ अस्वाल ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के लिए निरंतर नई-नई तकनीकी योजनाएं ला रही है। उन्होंने किसानों से इन तकनीकों को अपनाने और अपनी फसलों की उत्पादकता बढ़ाने का आह्वान किया।ब्लॉक प्रमुख डॉ. हर्ष कुमार दौलत ने भी सरकार की योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज के आयोजन का उद्देश्य किसानों को सक्षम बनाना है ताकि वे अधिक पैदावार लेकर खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेंआवारा पशुओं और जंगली जानवरों का मुद्दा छायातकनीकी जानकारी के बीच, एक किसान ने आवारा पशुओं और जंगली जानवरों से फसल की सुरक्षा का गंभीर मुद्दा उठाया। किसान ने बताया कि जंगली जानवरों का खतरा लगातार बना हुआ है। हाल ही में एक जंगली हाथी के हमले में एक किसान गंभीर रूप से घायल हो गया, जो वर्तमान में अस्पताल में जिंदगी और मौत के बीच जूझ रहा है। किसानों ने सुरक्षा के

पुख्ता इंतजाम करने की मांग कीफसल चक्र अपनाने की सलाहजिला कृषि अधिकारी ने किसानों को मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए वैज्ञानिक खेती के गुर सिखाए। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वे हर साल एक ही फसल न उगाएं, बल्कि श्फसल चक्रश अपनाएं। उन्होंने कहा कि जमीन को उपजाऊ बनाए रखने के लिए विविधतापूर्ण खेती जरूरी है, जिससे किसान न केवल अधिक उपज ले पाएंगे, बल्कि अपनी आमदनी भी बढ़ा सकेंगी।

Dainikshahtimes@gmail.com For Articles

घूसखोर पंडित पर रोक

गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट ने घूसखोर पंडित फिल्म की रिलीज पर रोक लगा दी। साथ ही इसके फिल्म मेकर नीरज पाण्डेय को भी फटकार लगाई और स्पष्ट कहा कि ऐसे टाइटल का इस्तेमाल कर समाज के एक हिस्से को बदनाम नहीं किया जा सकता। भारतीय ब्राह्मण समाज के राष्ट्रीय संगठन सचिव अतुल मिश्रा ने एक याचिका दायर की थी, जिसमें कहा था कि फिल्म घूसखोर पंडित की रिलीज पर रोक लगाई जाए। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी बताती है कि उसने याचिकाकर्ता की शिकायत को गंभीरता से लिया है और माना है कि इस तरह के टाइटल समाज में वैमनस्य का कारण बनते हैं। इस मामले की सुनवाई जस्टिस बीवी नागरत्ना और उज्जल भूयान की बेंच कर रही है। यह फिल्म ओटीटी प्लेटफार्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने वाली थी। पीठ ने मेकर्स से साफ कहा कि आप ऐसे टाइटल का इस्तेमाल कर समाज के एक हिस्से को बदनाम क्यों कर रहे हैं। यह नैतिकता के खिलाफ है। हालांकि मैकर्स ने फिल्म का नाम बदलने पर सहमति जताई है। इस पर पीठ का कहना था कि जब तक आप हमें बदला हुआ नाम नहीं बताते तब तक हम आपको इसी रिलीज करने नहीं देंगे। कोर्ट ने फिल्म मेकर्स को एक एफिडेविट फाइल करने का निर्देश भी जारी किया है। जिसमें यह बात साबित करने के लिए कहा गया है कि घूसखोर पंडित समाज के किसी भी वर्ग को नीचे नहीं दिखाता। असल में मेकर्स का कहना रहा है कि घूसखोर पंडित मात्र एक टाइटल है और इसका किसी व्यक्ति या समाज से लेना देना नहीं है। इस फिल्म में मनोज वाजपेयी जैसे मंझु हुए अभिनेता काम कर रहे हैं। उनके अलावा नुसरत भरूचा, साकिब सलीम, अक्षय ओबेरॉय और दिव्या दत्ता जैसे कलाकार जुड़े हुए हैं। इसमें कोई दोराय नहीं है कि फिल्में समाज को कहीं न कहीं से अवश्य प्रभावित करती हैं। इसलिए फिल्म मेकर्स को चाहिए कि वह इस तरह का कोई काम न करे। जिससे समाज में किसी तरह का वैमनस्य पैदा हो, लेकिन यहां यह कहना भी जरूरी है कि घूसखोर पंडित कोई आज इकलौती फिल्म नहीं है जो विवादों के घेरे में है। पिछले कुछ समय से हम देख रहे हैं कि इस तरह की फिल्में लाई जाती हैं जो बड़े विवाद का कारण बनती हैं और समाज के एक हिस्से को प्रभावित करती हैं। कई बार तो यह भी देखने में आया है कि इस तरह की फिल्मों को राजनीतिक संरक्षण प्राप्त होता है। छावा, कश्मीर फाइल्स, गुजरात फाइल्स आदि कई फिल्में काफी विवादों के घेरे में रहीं हैं। कई फिल्मों पर तो बवाल भी कटा। इस तरह की फिल्में वास्तव में नहीं बननी चाहिएं। सच तो यह भी है कि इस तरह की बातें सुप्रीम कोर्ट में नहीं जानी चाहिएं और जो इससे संबंधित विभाग है, यह उनके स्तर तक ही रहनी चाहिए। यही कारण है कि सुप्रीम कोर्ट ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय सेंट्रल बोर्ड फॉर फिल्म सर्टिफिकेशन को भी नोटिस दिया है।

किसानों, मजदूरों और श्रमिकों का भविष्य खतरे में

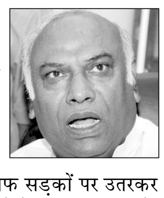

विदेशी दबाव में आकर किए गए समझौते देशहित के खिलाफ हैं और सरकार की नीतियां करोड़ों मेहनतकश किसानों, मजदूरों और श्रमिकों के भविष्य को खतरे में डाल रही हैं, देशभर में ट्रेड यूनियन, किसान और मजदूर सरकार की नीतियों के खिलाफ सड़कों पर उतरकर विरोध कर रहे हैं, सरकार की नीतियां करोड़ों मेहनतकश किसानों, मजदूरों और श्रमिकों के भविष्य को खतरे में डाल रही हैं, विदेशी दबाव में आकर किए गए समझौते देशहित के खिलाफ हैं और इससे आम नागरिकों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, छोटे व्यापारी, कामगार और आम जनमानस इस कथित जन-विरोधी डील का सबसे ज्यादा विरोध कर रहे हैं, पार्टी इस मुद्दे पर सड़क से लेकर संसद तक संघर्ष जारी रखेगी। **मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस अध्यक्ष**

संघर्ष, सेवा और साहित्य का संगम था सरोजिनी नायडू का जीवन

योगेश कुमार गोयल

आजादी के राष्ट्रीय आन्दोलन में उल्लेखनीय योगदान देने वाली स्वतंत्रता सेनानियों में 'नाइटिंगेल ऑफ इंडिया' तथा 'भारत कोकिला' के नाम से विख्यात प्रख्यात कवयित्री और देश के सर्वोत्तम राष्ट्रीय नेताओं में से एक सरोजिनी नायडू का नाम सदैव आदर के साथ स्मरण किया जाता है। उनके नाम का जिक्र होते ही एक ऐसी महिला की छवि उभरकर सामने आती है, जिन्हें कई भाषाओं में महारत हासिल थी और जिनकी लिखी कविताएं हर ओर धूम मचाती थी। उन्हीं के सम्मान में उनके जन्मदिवस 13 फरवरी को अब प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में एक बंगाली परिवार में जन्मी सरोजिनी नायडू की 135वीं जयंती के अवसर पर 13 फरवरी 2014 से देश में राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की शुरुआत की गई थी और आज समूचा देश उनकी 147वीं जयंती मना रहा है।

सरोजिनी नायडू के पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय एक रसायन वैज्ञानिक और निजाम कॉलेज के संस्थापक थे जबकि उनकी माता वरदा सुंदरी बंगाली कवयित्री थी। सरोजिनी के पिता चाहते थे कि उनकी बेटी भी उन्हीं की भांति महान् वैज्ञानिक बने लेकिन सरोजिनी को कविताओं से अगाध प्रेम था, जिसे वह कभी त्याग नहीं सकी। वह बचपन से ही पढ़ाई-लिखाई में बहुत तेज थी और उन्होंने केवल 12 वर्ष की आयु में ही मद्रास यूनिवर्सिटी से मैट्रिक की परीक्षा में शीर्ष स्थान हासिल किया था तथा केवल 13 वर्ष की आयु में ही 1300 पदों की लेडी ऑफ द लेक नामक पहली लंबी कविता और करीब 2000 पंक्तियों का अपना पहला विस्तृत नाटक लिखकर अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं पर अपनी पकड़ का परिचय दिया था। पढ़ाई के साथ-साथ वह कविताएं भी लिखती थी और उनका पहला कविता संग्रह द गोल्डन थ्रैशहोल्ड 1905 में प्रकाशित हुआ, जो आज भी पाठकों के बीच बेहद लोकप्रिय है। अत्यंत मधुर स्वर में अपनी कविताओं का पाठ करने के कारण उन्हें भारत कोकिला कहा जाता था। उन्हें शब्दों की जादूगरनी के नाम से भी जाना जाता था। 14 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने लगभग सभी प्रमुख अंग्रेजी कवियों की रचनाओं का अध्ययन कर लिया था।

मेधावी होने के कारण 1895 में हैदराबाद के निजाम ने उन्हें ज्यादा से ज्यादा ज्ञान अर्जित करने के लिए वजीफे पर इंग्लैंड भेजा और इस प्रकार केवल 16 साल की उम्र में ही वह उच्च शिक्षा के लिए लंदन चली गई। पहले लंदन के किंग्स कॉलेज और उसके बाद कैम्ब्रिज के गिरटन कॉलेज में उन्हें अध्ययन करने का अवसर मिला। इंग्लैंड का मौसम अनुकूल नहीं होने के कारण वह 1898 में ही इंग्लैंड से स्वदेश लौट आई। जब वह इंग्लैंड से लौटी, तब फौजी डॉक्टर डा। गोविन्दराजुलु नायडू के साथ विवाह करने को उत्सुक थी, जिन्होंने तीन साल पहले उनके समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा था। हालांकि शुरू में सरोजिनी के पिता इस शादी के खिलाफ थे लेकिन बाद में 19 साल की उम्र में उनकी शादी डा। गोविन्दराजुलु के साथ हो गई।

1914 में जब सरोजिनी नायडू पहली बार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से मिली, तभी उनके विचारों से प्रभावित होकर वह वतन के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने को तत्पर हो गई और अपना जीवन देशसेवा में समर्पित कर दिया। 1915 से 1918 तक उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आजादी की लड़ाई में संकटों का डटकर मुकाबला करते हुए वह एक वीरांगना की भांति गांव-गांव, गली-गली घूमकर देश-प्रेम की अलख जगाकर देशवासियों को उनके कर्त्तव्य की याद दिलाती रही। उन्होंने न केवल गांधीजी के अनेक सत्याग्रह आन्दोलनों में हिस्सा लिया और जीवन-पर्यन्त उनके विचारों तथा मार्ग का अनुसरण किया बल्कि 'भारत छोड़ो आंदोलन' के तहत जेल भी गई थी। दांडी मार्च के दौरान गांधीजी के साथ अग्रिम पंक्ति में चलने वालों में वह भी शामिल थी। उनके विनोदी स्वभाव के कारण उन्हें 'गांधीजी के लघु दरबार में विदूषक' भी कहा जाता था।

महात्मा गांधी के अलावा सरोजिनी नायडू गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, गोपाल कृष्ण गोखले, एनी बेसेंट तथा पं. जवाहरलाल नेहरू के साथ भी विशेष रूप से जुड़ी रही। गोपाल कृष्ण गोखले को तो वह अपना राजनीतिक पिता मानती थी। गांधीजी तो अपने पत्रों में सरोजिनी नायडू को कभी 'डियर बुलबुल' तो कभी 'डियर मीराबाई' और कभी-कभी मजाक में 'अम्माजान' या 'मदर' भी लिखते थे, वहीं सरोजिनी भी गांधीजी को मजाकिया अंदाज में कभी 'जुलाहा' तो कभी 'लिटिल मैन' और कभी 'मिकी माउस' कहा करती थी। गांधीजी ने 8 अगस्त 1932 को सरोजिनी नायडू को लिखे एक पत्र में उन्हें 'बुलबुल' नाम से सम्बोधित किया था और उसी पत्र में उन्होंने स्वयं के लिए 'लिटिल मैन' शब्द इस्तेमाल किया था। सरोजिनी कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष भी बनी। वह 1925 में कानपुर में हुए कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्ष बनी और 1932 में भारत की प्रतिनिधि बनकर दक्षिण अफ्रीका भी गई। अंग्रेजी भाषा पर सरोजिनी की बहुत मजबूत पकड़ थी, लंदन की सभा में अंग्रेजी में बोलकर उन्होंने वहां उपस्थित सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया था। बहुभाषाविद सरोजनी नायडू अपना भाषण क्षेत्रानुसार अंग्रेजी, हिन्दी, बांग्ला अथवा गुजराती भाषा में देती थी। गांधीजी ने मधुर आवाज और उनके भाषणों से प्रभावित होकर ही उन्हें 'भारत कोकिला' की उपाधि दी थी। देश की आजादी के बाद सरोजिनी नायडू भारत की पहली महिला राज्यपाल बनी लेकिन यह पद स्वीकार करते समय उन्होंने कहा था कि वह स्वयं को 'कैद कर दिए गए जंगल के पक्षी' की भांति अनुभव कर रही हैं किन्तु वह पं. जवाहरलाल नेहरू का बहुत सम्मान करती थी, इसलिए उनकी इच्छा को टाल नहीं सकी। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए काफी संघर्ष किया और समाज में फैली कुरीतियों के प्रति महिलाओं को जागृत किया तथा भारतीय समाज में जातिवाद, लिंग-भेद को मिटाने के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किए। भारत में प्लेग महामारी के दौरान किए गए सराहनीय कार्यों के लिए उन्हें 1908 में ब्रिटिश सरकार द्वारा 'केसर-ए-हिंद' से सम्मानित किया गया था लेकिन जलियांवाला बाग हत्याकांड से क्षुब्ध होकर उन्होंने यह सम्मान वापस कर दिया था। 2 मार्च 1949 को हृदयाघात के कारण लखनऊ में अपने कार्यालय में कार्य करने के दौरान उनका निधन हो गया। सरोजिनी नायडू का निधन 2 मार्च 1949 में हुआ था। भारत सरकार द्वारा उनकी जयंती के अवसर पर उनके सम्मान में 13 फरवरी 1964 को 15 पैसे का एक डाक टिकट जारी किया गया था।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

यह विदाई बजट से भाजपा की विदाई तय!

इस बार के बजट में और पिछली बार के बजट में क्या अंतर है इस बजट में ऐसी क्या खास बात है और यह चुनावी बजट है। अगले साल जनवरी-फरवरी में इस वक्त चुनाव चल रहा होगा यानी वोटिंग चल रही होगी कई चरण का चुनाव निपट गया होगा। जनरल बजट लाने का अवसर सरकार के पास नहीं रहेगा। फिर क्या रहेगा यही चुनावी बजट है इसके बाद आप मानकर चलिए। सितंबर वगैरा तक सरकार सप्लीमेंट्री बजट भी लेकर आएगी वे सप्लीमेंट्री बजट किसका होगा डायरेक्ट कैश ट्रांसफर उसकी भी सरकार के पास व्यवस्था है।

शमशाद रशीद माहीगीर

किसी भी मुख्यमंत्री के लिए यह बड़ा गौरवशाली क्षण होता है और खासकर उत्तर प्रदेश की सरकार के मुख्यमंत्री के लिए उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य के लिए योगी सरकार ने एक नहीं दो नहीं कर नहीं दसवां बजट पेश किया है उत्तर प्रदेश सरकार की बड़ी उपलब्धि योगी सरकार के नेतृत्व में दसवां बजट पेश किया गया है उत्तर प्रदेश का जो बजट है वह 9 लाख करोड़ से भी ज्यादा का है आप सोचिए कितना बड़ा बजट है हमारे प्रदेश का क्या है इस बजट में और सरकार के इस बजट के पीछे का विजन क्या है जो वित्त मंत्री ने विधानसभा में स्पीच बोली है उसमें तीन-चार बातें हैं। 1 घंटा 50 मिनट की स्पीच में उन्होंने इंफ्रास्ट्रक्चर पर काफी धन खर्च करने का वायदा किया है सड़कें बनेगी एक्सप्रेस वे बनेंगे हाईवे बनेंगे और जो भी बड़ी-बड़ी आवश्यक इमारतें होंगी उनको तैयार किया जाएगा जो हमारा मूलभूत तंत्र है ढांचा है उसको तैयार किया जाएगा आईटी इंडस्ट्री पर बड़ा जोर है उत्तर प्रदेश में डाटा सेंटर तो है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वेस्ट डाटा सेंटर नहीं है तो सरकार ने उसके लिए बजट में प्रोविजन किया है नए एलोकेशन किए हैं फंड के ताकि उत्तर प्रदेश में हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वेस्ट डाटा सेंटर तैयार कर सकें। खाली डाटा सेंटर की कोई वैल्यू नहीं रह गई है। वह सिर्फ नाम रह गए हैं। वैसे डाटा का एक स्मार्ट गोदाम है। सरकार ने स्टार्टअप के लिए भी बड़ा फंडा लोकेट किया है। पारंपरिक मत जो है वह तो है ही शिक्षा स्वास्थ्य बिजली सिंचाई का इनका एक अलग बजट होता है सब्सिडी का वह तो है ही और सरकार ने यह वादा किया है इस बार का जो बजट है लोगों को जॉब्स भी मुहैया कराई जाएगी। डायरेक्ट जॉब्स और इनडायरेक्ट जॉब्स। डायरेक्ट जॉब्स वह जो सरकारी नौकरियां मिलेगी और इनडायरेक्ट जब वह सरकार इंफ्रास्ट्रक्चर क्रिएट करेगी और उद्योग धंधे लेगी उसमें जो इनडायरेक्ट जॉब मिलेगी उसे पर भी सरकार का एक बार विधानसभा में बड़ा फॉकस रहा है। इस बार के बजट में और पिछली बार के बजट में क्या अंतर है इस बजट में ऐसी क्या खास बात है और यह चुनावी बजट है। अगले साल जनवरी-फरवरी में इस वक्त चुनाव चल रहा होगा यानी वोटिंग चल रही होगी कई चरण का चुनाव निपट गया होगा। जनरल बजट लाने का अवसर सरकार के पास नहीं रहेगा। फिर क्या रहेगा यही चुनावी बजट है इसके बाद आप मानकर चलिए। सितंबर वगैरा तक सरकार सप्लीमेंट्री बजट भी लेकर आएगी वे सप्लीमेंट्री बजट किसका होगा डायरेक्ट कैश ट्रांसफर उसकी भी सरकार के पास व्यवस्था है

आज की डेट में मेरे अंदाज से सरकार के पास बचपन से 60000 करोड़ का कैश इस वक्त मौजूद है। सरप्लस पैसा रखा है जो अगले साल सितंबर नवंबर में बाउंसर आएगी खर्च कर लेंगे। चुनाव के लिए विपक्ष का गंभीर आरोप है सरकार बड़ी-बड़ी फिगर लेकर आती है लेकिन पैसे खर्च ही नहीं करती। यह बजट कहा जो पिछली बार विधानसभा से पास हुआ था 55 प्रतिशत खर्च हुआ है। ऐसा विपक्ष का कहना है अखिलेश यादव जी का कहना है कि यह सरकार का अंतिम बजट है अगला बजट हम पेश करेंगे यह जो बजट पेश हुआ है यह झूठ का पुलिंदा है और इसमें कोई सच्चाई नहीं है यह सत्ता पर के दावे और विपक्ष के दावे की बात है आम आदमी को क्या मिला योगी सरकार ने पहला बजट 2 लाख 70000 करोड़ से शुरू किया था और यह बढ़ता जा रहा है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

पुलिस की मनमानी गिरफ्तारियों पर रोक लगाता सुप्रीम कोर्ट

रजनीश कपूर

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में एक महत्वपूर्ण फैसले में पुलिस की मनमानी गिरफ्तारियों पर सख्त अंकुश लगाया है। यह फैसला उन अपराधों से संबंधित है जहां सजा की अधिकतम अवधि सात साल तक की कैद है। सतेंद्र कुमार एंटिल बनाम सीबीआई मामले में न्यायमूर्ति एम।एम। सुंदरेश और एन। कोटिस्वर सिंह की पीठ ने स्पष्ट किया कि ऐसे मामलों में गिरफ्तारी अपवाद है, जबकि नोटिस जारी करना नियम। यह निर्णय न केवल पुलिस की कार्यप्रणाली में सुधार लाएगा, बल्कि आम नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करेगा। फैसले के बाद इस मामले की पृष्ठभूमि, कानूनी प्रावधानों, गिरफ्तारी की आवश्यकता और आम नागरिकों पर इसके प्रभाव परचर्चा होने लगी है। जिससे कि नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

पहले समझते हैं कि यह फैसला ऐतिहासिक क्यों है। भारत में आपराधिक न्याय प्रणाली में गिरफ्तारी एक संवेदनशील मुद्दा रहा है। पुराने दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) के तहत पुलिस को बिना वारंट गिरफ्तारी का अधिकार था, लेकिन इसका अक्सर दुरुपयोग होता था। विशेष रूप से कम गंभीर अपराधों में, जहां सजा सात साल से कम थी, पुलिस बिना सोचे-समझे लोगों को हिरासत में ले लेती थी। इससे न केवल जेलों में भीड़ बढ़ती थी, बल्कि निर्दोष नागरिकों का जीवन बर्बाद होता था। 2014 में अर्नेश कुमार बनाम बिहार राज्य मामले में सुप्रीम कोर्ट ने पहली बार दिशानिर्देश जारी किए थे, जिसमें कहा गया था कि ऐसे अपराधों में गिरफ्तारी निश्चित नहीं होनी चाहिए। पुलिस को पहले जांच करनी चाहिए और गिरफ्तारी केवल आवश्यक होने पर ही करनी चाहिए, लेकिन अब नई व्यवस्था में, 1 जुलाई 2024 से लागू भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) ने इस प्रक्रिया को और मजबूत किया है। बीएनएसएस धारा 35 सीआरपीसी की धारा 41 का स्थान लेती है, जबकि बीएनएसएस धारा 35(3) सीआरपीसी की धारा 41ए के समान है। भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 35 भी गिरफ्तारी से संबंधित है, लेकिन मुख्य रूप से प्रक्रियात्मक पहलू बीएनएसएस में हैं। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि बीएनएसएस धारा 35(1) पुलिस को गिरफ्तारी का अधिकार देती है, लेकिन शब्द में (may) का प्रयोग दर्शाता है कि यह विवेकाधीन है, न कि अनिवार्य। धारा 35(1)(बी) में कहा गया है कि पुलिस को विश्वास होना चाहिए कि आरोपी ने अपराध किया है और गिरफ्तारी जांच के लिए जरूरी है, लेकिन धारा 35(3) के तहत पुलिस द्वारा पहले नोटिस जारी करना अनिवार्य है, जिसमें आरोपी को पुलिस स्टेशन में हाजिर होने और सहयोग करने को कहा जाता है।

सवाल है कि क्या गिरफ्तारी आवश्यक है? इस पर सुप्रीम कोर्ट का स्पष्ट उत्तर है- 'नहीं, यह अपवाद है।' फैसले में कहा गया कि सात साल तक की सजा वाले अपराधों में गिरफ्तारी केवल तब की जा सकती है जब आरोपी नोटिस का पालन न करे, या जांच में बाधा डाले, सबूतों से छेड़छाड़ करे, गवाहों को प्रभावित करे, या अदालत में पेश न होने का खतरा हो। पुलिस को गिरफ्तारी के कारण लिखित रूप में दर्ज करने होंगे।

सवाल है कि क्या गिरफ्तारी आवश्यक है? इस पर सुप्रीम कोर्ट का स्पष्ट उत्तर है- 'नहीं, यह अपवाद है।' फैसले में कहा गया कि सात साल तक की सजा वाले अपराधों में गिरफ्तारी केवल तब की जा सकती है जब आरोपी नोटिस का पालन न करे, या जांच में बाधा डाले, सबूतों से छेड़छाड़ करे, गवाहों को प्रभावित करे, या अदालत में पेश न होने का खतरा हो। पुलिस को गिरफ्तारी के कारण लिखित रूप में दर्ज करने होंगे। यदि नोटिस के बाद भी आरोपी सहयोग करता है, तो गिरफ्तारी की कोई जरूरत नहीं। यह अर्नेश कुमार फैसले की भावना को दोहराता है, जहां कोर्ट ने कहा था कि गिरफ्तारी जांच का साधन है, न कि सजा। बीएनएसएस धारा 35(6) गिरफ्तारी को धारा 35(1)(बी) के साथ जोड़ती है, लेकिन कोर्ट ने जोर दिया कि पुलिस को सतर्क रहना चाहिए और गिरफ्तारी को अंतिम विकल्प ही मानना चाहिए।

यदि नोटिस के बाद भी आरोपी सहयोग करता है, तो गिरफ्तारी की कोई जरूरत नहीं। यह अर्नेश कुमार फैसले की भावना को दोहराता है, जहां कोर्ट ने कहा था कि गिरफ्तारी जांच का साधन है, न कि सजा। बीएनएसएस धारा 35(6) गिरफ्तारी को धारा 35(1)(बी) के साथ जोड़ती है, लेकिन कोर्ट ने जोर दिया कि पुलिस को सतर्क रहना चाहिए और गिरफ्तारी को अंतिम विकल्प ही मानना चाहिए।

ऐसे में यह फैसला आम नागरिकों के लिए क्या मायने रखता है? सबसे बड़ा प्रभाव यह है कि अब पुलिस की मनमानी कम होगी। पहले, छोटे-मोटे अपराधों जैसे धोखाधड़ी, मारपीट या संपत्ति विवाद में लोग रातोंरात जेल में डाल दिए जाते थे, जिससे उनका करियर, परिवार और सम्मान प्रभावित होता था। लेकिन अब, नोटिस मिलने पर नागरिक पुलिस के समक्ष पेश होकर अपना पक्ष रख सकते हैं, बिना हिरासत में लिए। इससे जेलों में अनावश्यक भीड़ कम होगी। उल्लेखनीय है कि भारत में जेलों की क्षमता से 130: अधिक कैदी हैं, जिनमें से अधिकांश विचाराधीन हैं। यह निर्णय संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार को मजबूत करता है। महिलाओं, बुजुर्गों और कमजोर वर्गों के लिए यह विशेष रूप से फायदेमंद है, क्योंकि वे गिरफ्तारी के दौरान अधिक शोषण का शिकार होते हैं, लेकिन इस फैसले का असली लाभ तभी मिलेगा जब नागरिक अपने अधिकारों से अवगत होंगे। आम आदमी को पता होना चाहिए कि यदि अपराध सात साल से कम सजा वाला है, तो पुलिस सीधे गिरफ्तार नहीं कर सकती। ऐसे में आपको नोटिस मिलने पर आप क्या करें? सबसे पहले, नोटिस को ध्यान से पढ़ें, इसमें अपराध का विवरण, हाजिर होने की तारीख और समय होता है। एक वकील से सलाह लें और पुलिस स्टेशन जाएं। यदि आप जांच में पुलिस का सहयोग करते हैं, तो गिरफ्तारी की संभावना कम है। यदि पुलिस बिना नोटिस गिरफ्तार करने की कोशिश करे, तो आप इसे कोर्ट में चुनौती दे सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस को चेतावनी दी है कि दिशानिर्देशों का उल्लंघन करने पर अधिकारी दंडित हो सकते हैं। नागरिकों को यह भी जानना चाहिए कि बीएनएसएस में इलेक्ट्रॉनिक नोटिस (जैसे व्हाट्सएप) अमान्य हैंय नोटिस व्यक्तिगत रूप से या डाक से ही दिया जाना चाहिए। हालांकि, इस फैसले की कुछ सीमाएं भी हैं। गंभीर अपराधों (सात साल से अधिक सजा वाले) में गिरफ्तारी अभी भी आसान है और पुलिस दुरुपयोग कर सकती है। जांच की गुणवत्ता में सुधार के बिना, अपराधी बच सकते हैं। फिर भी, यह न्यायिक सक्रियता का उदाहरण है, जो पुलिस सुधार की दिशा में एक कदम है। सरकार को पुलिस प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान चलाने चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला लोकतंत्र की मजबूती है, जहां नागरिक पुलिस से डरें नहीं, बल्कि सहयोग करें। हर नागरिक को अपने अधिकार जानने चाहिए, गिरफ्तारी कोई सजा नहीं, बल्कि जांच का हिस्सा है। यदि हम जागरूक होंगे, तो न्याय व्यवस्था अधिक निष्पक्ष बनेगी। यह फैसला हमें याद दिलाता है कि कानून सबके लिए समान है और स्वतंत्रता हमारा मौलिक हक।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

बांग्लादेश चुनावः मतदान खत्म, वोटों की गिनती जारी

48% वोटिंग हुई, बीएनपी-जमात में मुकाबला, पूर्व पीएम हसीना बोलीं: फर्जी चुनाव रद्द हों, नतीजे आज रात 8 बजे से आने शुरू हो गए

- **एक वोटिंग सेंटर के बाहर जमात-ए-इस्लामी कार्यकर्ताओं के साथ झड़प में एक बीएनपी नेता मोहिबुज्जमान कोच्चि की मौत**
- **जमात-ए-इस्लामी के नेता शफीकुर रहमान ने कहा: अगर चुनाव निष्पक्ष हुए तो उनकी पार्टी चुनाव परिणाम स्वीकार कर लेगी**

ढाका। बांग्लादेश में आम चुनाव के लिए वोटिंग खत्म हो गई है। देशभर में वोटों की गिनती जारी है। चुनावी नतीजे आज रात 8 बजे से आने शुरू हो जाएंगे। दोपहर 2 बजे तक देश के 36 हजार वोटिंग सेंटर्स पर 47.91 प्रतिशत मतदान हुआ। अंतरिम सरकार के चीफ एडवाइजर मोहम्मद यूनुस, बीएनपी चीफ तारिक रहमान और छात्र नेता नाहिद इस्लाम वोट डालने पहुंचे।

इस दौरान यूनुस ने कहा कि आज नए बांग्लादेश का जन्म हुआ। दूसरी तरफ पूर्व पीएम शेख हसीना ने चुनाव को फर्जी बताते हुए रद्द करने की मांग की है। साथ ही यूनुस से इस्तीफा भी मांगा हैं। बांग्लादेश चुनाव को लेकर भारत ने नतीजों का इंतजार करने के लिए कहा है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि नतीजे आने के बाद ही यह देखा जाएगा कि जनादेश किस तरह का है। वोटिंग के दौरान कई जगहों पर झड़पें भी हुई। खुलना में एक वोटिंग सेंटर के बाहर जमात- ए-इस्लामी कार्यकर्ताओं के साथ झड़प में एक बीएनपी नेता मोहिबुज्जमान कोच्चि की मौत हो गई। दूसरी तरफ मुंशीगंज-3 और गोपालगंज सदर इलाके में वोटिंग सेंटर के बाहर देसी बम फेंके गए।

गोपालगंज सदर इलाके में धमाके से 3 लोग घायल हो गए थे। जमात-ए-इस्लामी के नेता शफीकुर रहमान ने कहा कि अगर चुनाव निष्पक्ष हुए तो उनकी पार्टी चुनाव परिणाम स्वीकार कर लेगी। इस चुनाव में महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में वोट डाला। मतदान पूरा होने के बाद वोटों की गिनती शुरू हो गई है। बीएनपी ने चुनाव के नतीजे निष्पक्ष तरीके से घोषित करने की अपील की है। पार्टी ने कहा है कि नतीजों में किसी तरह की गड़बड़ी न हो, इसके लिए सभी को सतर्क रहना चाहिए। यह बयान बीएनपी की चुनाव प्रबंधन समिति के प्रवक्ता महदी अमीन ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दिया। उन्होंने सभी हितधारकों से अपील की कि वे पूरी प्रक्रिया पर नजर रखें, ताकि मतदाताओं की इच्छा सही रूप में सामने आ सके। महदी ने चुनाव प्रक्रिया में शामिल चुनाव आयोग, सशस्त्र बलों, कार्यवाहक सरकार और कानून- व्यवस्था एजेंसियों का आभार जताया। साथ ही उन्होंने चुनावी हिंसा में घायल और मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने गुरुवार को हुए चुनाव को 'फर्जी चुनाव' करार देते हुए इसे रद्द करने की मांग की है। चुनाव के बाद जारी एक बयान में हसीना ने इसे 'मतदाताओं के बिना, अवैध और असंवैधानिक चुनाव' बताया। अपने बयान में शेख हसीना ने कहा कि यह चुनाव कातिल यूनुस द्वारा कराया गया एक दिखावटी चुनाव है। हसीना ने आरोप लगाया कि 11 फरवरी की शाम से ही कई जगहों पर मतदान केंद्रों पर कब्जा, गोलीबारी, पैसे बांटकर वोट खरीदना, मतपत्रों पर मुहर लगाना और एजेंटों से रिजल्ट शीट पर जबरन हस्ताक्षर करवाने जैसी घटनाएं शुरू हो गई थीं। उन्होंने दावा किया कि 12 फरवरी की सुबह से देशभर के ज्यादातर पोलिंग बूथ पर मतदाता उपस्थिति बेहद कम रही और राजधानी ढाका समेत कई जगहों पर मतदान केंद्र लगभग खाली रहे।

बांग्लादेश की मैमनसिंह-11 (वलुका) सीट के एक मतदान केंद्र पर गुरुवार को बड़ी गड़बड़ी सामने आई। पांच युवक बूथ के अंदर घुसे और खुद ही मतपत्रों पर मुहर लगाकर उन्हें बैलेट बॉक्स में डालने लगे। पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई। मामला सामने आते ही आधे घंटे के लिए वोटिंग रोक दी गई। यह घटना लोहाबोई बरादी सरकारी प्राथमिक स्कूल मतदान केंद्र की है। स्थानीय लोगों के मुताबिक, दोपहर करीब 2:30 बजे कुछ युवक अंदर गए। इनमें से पांच सीधे एक बूथ में घुस गए। उस समय बूथ में कोई कर्मचारी मौजूद नहीं था। 1 मिनट 33 सेकंड के वीडियो में दो युवक मतपत्रों पर मुहर लगाते दिख रहे हैं। तीन युवक उन पर्चियों को मोड़कर बैलेट बॉक्स में डाल रहे हैं। वीडियो सोशल मीडिया पर भी वायरल हो गया।

बांग्लादेश के प्रमुख नेताओं ने डाला अपना मत

ढाका। बंगलादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के अध्यक्ष तारिक रहमान ने गुरुवार को गुलशन मॉडल हाई स्कूल और कॉलेज में अपना मत डाला। इस अवसर पर उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह बहुप्रतीक्षित चुनाव लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों को बहाल करेगा। रहमान ने कहा कि बंगलादेशी नागरिक स्वतंत्र रूप से मतदान करने के अवसर के लिए एक दशक से अधिक समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने नागरिकों से किसी भी 'साजिश' को विफल करने और लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए बड़ी संख्या में मतदान करने का आग्रह किया। बीएनपी ने रात भर कुछ क्षेत्रों में 'अवांछनीय घटनाओं' की खबरें मिलने की बात स्वीकार की, लेकिन कानून प्रवर्तन एजेंसियों पर अपना विश्वास भी जताया। उन्होंने कहा कि यदि पूरे बंगलादेश के लोग दिन भर बाहर आकर अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं, तो किसी भी साजिश को नाकाम किया जा सकता है। मैं आशावादी हूं, दृढ़ता से आशावादी हूं।

चुनाव से ठीक पहले हिंदू युवक की हत्या चाय बागान में मिली खून से लथपथ लाश

ढाका। बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय के खिलाफ हिंसा की घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। ताजा मामला मौलवीबाजार जिले से सामने आया है, जहां आम चुनाव से महज एक दिन पहले एक 28 वर्षीय हिंदू युवक की हत्या कर दी गई। युवक का शव मिलने के बाद से इलाके मे तनाव का माहौल है। इस घटना ने वहां के अल्पसंख्यक समुदायों में डर और चिंता बढ़ा दी है। मृतक की पहचान रतन शुवो कर के रूप में हुई है। वह इस्लामपुर यूनियन के चंपारा चाय बागान में काम करता था। पुलिस को उसकी लाश हाथ-पैर बंधी हुई हालत में मिली। स्थानीय मीडिया के अनुसार, रतन के शरीर पर चोट के कई निशान थे और वह खून से लथपथ था। बांग्लादेश के जाने-माने अखबार, द डेली स्टार की एक रिपोर्ट के मुताबिक, लोकल लोगों ने बुधवार सुबह करीब 10:00 बजे चाय बागान के अंदर उसकी लाश देखी, जहां कर काम करता था। उन्होंने तुरंत पुलिस को इसकी जानकारी दी। रतन के साथ काम करने वाले लोगों का आरोप है कि उसे किसी दूसरी जगह मारा गया और फिर लाश को बागान में फेंक दिया गया। हालांकि, अभी इस बात की पुष्टि नहीं हुई है।

संक्षिप्त समाचार

नाटो में अपना खर्च बढ़ाएं यूरोप, कनाडा: मार्क रट

ब्रसेल्स। उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) महासचिव मार्क रट ने यूरोपीय और कनाडाई सहयोगियों से 'रक्षा व्यय और औद्योगिक उत्पादन' बढ़ाने का आह्वान करते हुए कहा है कि अमेरिका गठबंधन के प्रति प्रतिबद्ध है, लेकिन उसका रणनीतिक ध्यान अब हिंद-प्रशांत क्षेत्र की ओर अधिक केन्द्रित हो रहा है। टीआरटी वर्ल्ड की एक रिपोर्ट के अनुसार, रट ने गुरुवार को संवाददाताओं से कहा कि चर्चा का मुख्य केन्द्र हेग शिखर सम्मेलन में लिए गए।

तीसरी बार कोसोवो के प्रधानमंत्री बने अल्बिन कुर्ती

बेलग्रेड। कट्टरपंथी सेल्फ- डिटरमिनेशन मूवमेंट (एलवीवी) के नेता अल्बिन कुर्ती को स्वयं-घोषित कोसोवो की संसद ने मार्च 2021 के बाद तीसरी बार प्रधानमंत्री चुना है। कार्यवाहक प्रधानमंत्री कुर्ती के नेतृत्व वाले स्वनिर्धारण आंदोलन (एलवीवी) ने 28 दिसम्बर को कोसोवो में हुए अचानक संसदीय चुनाव में निर्णायक जीत हासिल की। संसदी चुनाव के बाद बुधवार (11 फरवरी) को एलवीवी की अल्बुलेना हाक्सियू को अध्यक्ष चुना गया।

सूडान में नाव पलटने से 15 लोगों की मौत

खार्तूम। उत्तरी सूडान के नाइल नदी प्रांत में यात्री नौका के डूबने से कम से कम 15 लोगों की मौत हो गई। सूडान के नागरिक सुरक्षा प्राधिकरण के एक सूत्र ने बुधवार को यह जानकारी दी। सूत्रों के अनुसार लकड़ी की नाव तैयबा अल-खावद और दैम अल-कराई गांवों के बीच यात्रा कर रही थी और उसमें महिलाओं, बुजुर्गों तथा बच्चों समेत 27 से अधिक यात्री सवार थे। उच्च लहरों के कारण नाव पलट गई। घटना की सूचना मिलते ही नागरिक सुरक्षा इकाइयां मौके पर पहुंचीं। अब तक 15 से अधिक शव बरामद किये जा चुके हैं।

सीरिया ने अमेरिका से अपने नियंत्रण में लिया अल-तन्फ़ सैन्य बेस

दमिश्क। सीरिया की अंतरिम सरकार ने गुरुवार को सीरिया-इराक-जॉर्डन सीमा पर अल-तन्फ़ सैन्य बेस से अमेरिका के नेतृत्व वाले अंतरराष्ट्रीय गठबंधन के हटने की पुष्टि करते हुए कहा कि सीरियाई सेना की इकाइयों ने इस ठिकाने पर कब्जा कर लिया है। सीरिया के रक्षा अधिकारियों ने एक बयान में कहा कि सीरियाई और अमेरिकी पक्षों के बीच सहमति के बाद उन्होंने इस सैन्य बेस को अपने काबू में लिया।

इजरायल ने गिराए थे गाजा में प्रतिबंधित वैक्यूम बम

रिपोर्ट 'द रेस्ट ऑफ स्टोरी': वैक्यूम बमों से तापमान 3500 डिग्री पहुंचा, हजारों इंसान भाप बनकर गायब हुए

वाशिंगटन। इजरायल पर गाजा में 'वैक्यूम बम' इस्तेमाल करने का आरोप लगा है। रिपोर्ट 'द रेस्ट ऑफ द स्टोरी' के मुताबिक, ये बम पहले हवा में ईंधन जैसा एक बादल फैलाते हैं और फिर उसमें आग लगा देते हैं। इससे बहुत बड़ा आग का गोला बनता है और आसपास की हवा खिंचकर एक तरह का जीरो (वैक्यूम) पैदा हो जाता है। इन धमाकों से तापमान 3500 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है।

इन बमों में एल्यूमिनियम और मैग्नीशियम जैसे तत्व होते हैं, जो कुछ ही सेकेंड में शरीर को जला देते हैं। मिलिट्री एक्सपर्ट्स और चश्मदीदों का भी कहना है कि इजरायल ने वहां ऐसे हथियारों का इस्तेमाल किया, जिन्हें 'वैक्यूम बम', 'थर्मल' या 'थर्मोबैरिक' बम कहा जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक, हमलों में मारे गए कई लोगों के शव तक नहीं मिले। गाजा की सिविल डिफेंस टीम ने 2842 ऐसे फलस्तीनियों का रिकॉर्ड दर्ज किया है, जिनके बारे में कहा गया कि दफनाने के लिए उनका कोई हिस्सा तक नहीं बचा। वहीं 3500 से ज्यादा लोग अब भी लापता हैं। इस वक्त गाजा में औपचारिक सीजफायर लागू है और समझौते के 100 दिन पूरे होने के बाद यह दूसरे चरण में पहुंच चुका है, लेकिन तनाव अभी भी बना हुआ है। 10 अक्टूबर 2025 से अब तक 500 से ज्यादा फलस्तीनियों के मारे जाने की खबरें आई हैं। एक मां, यासमीन महानी, ने अपनी आपबीती सुनाई। 10 अगस्त 2024 को गाजा सिटी के अल-तबिन स्कूल पर हमले के बाद वह अपने बेटे साद को ढूंढ रही थीं। उन्हें वहां अपने पति तो मिल गए, लेकिन बेटे का कोई निशान नहीं मिला। उन्होंने बताया कि मस्जिद में उन्हें जमीन पर मांस और खून बिखरा मिला, लेकिन दफनाने के लिए बेटे का कोई हिस्सा तक नहीं मिला। अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, यासमीन जैसी हजारों माताएं आज भी अपने बच्चों को अस्पतालों और मुर्दाघरों में तलाश रही हैं। इस युद्ध में मरने वालों की संख्या 72,000 से ज्यादा बताई जा रही है। मानवाधिकार संगठनों ने इजरायल पर युद्ध अपराधों के आरोप लगाए हैं। एक्सपर्ट्स का कहना है कि ऐसे बमों का इस्तेमाल घनी आबादी वाले इलाकों में करना बहुत गंभीर मामला है। इजरायली हमले से गाजा की लगभग 90 प्रतिशत इमारतें खंडहर हो चुकी हैं। एमके-84 'हैमर': करीब 900 किलो का बम, जो 3500 डिग्री तक तापमान पैदा कर सकता है। इसका दबाव और गर्मी शरीर को गंभीर नुकसान पहुंचाते हैं। बीएलयू-109 बंकर बस्टर: यह मजबूत ढांचे में घुसकर अंदर फटता है और बंद जगहों में आग का बड़ा गोला बनाता है। जीबीयू-39: इसे सटीक निशाना लगाने वाला ग्लाइड बम बताया गया है। अल-तबिन स्कूल पर हमले के बाद इसके टुकड़े मिलने की बात कही गई है। इन हथियारों को एयरोसोल या वैक्यूम बम भी कहा जाता है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि इनका असर इतना भीषण होता है कि इमारत बाहर से ज्यादा खराब नहीं दिखती, लेकिन अंदर मौजूद हर चीज जलकर राख हो सकती है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की बुधवार को व्हाइट हाउस में मुलाकात हुई। ये बैठक करीब 2 घंटे तक बंद कमरे में चली। ट्रम्प ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर लिखा: मैंने नेतन्याहू से साफ कहा है कि अमेरिका को ईरान के साथ परमाणु समझौते पर बातचीत जारी रखनी चाहिए। उन्होंने लिखा कि बैठक बहुत अच्छी रही, लेकिन कोई अंतिम फैसला नहीं हुआ। ईरान के साथ अच्छा समझौता हो सकता है तो यह बेहतर होगा, लेकिन नहीं हुआ तो आगे क्या करना है, यह देखा जाएगा।

- **इन बमों में एल्यूमिनियम और मैग्नीशियम जैसे तत्व होते हैं, जो कुछ ही सेकेंड में शरीर को जला देते हैं**

'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट' में भाग लेंगे ऋषि सुनक

नई दिल्ली। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026' के पूर्वावलोकन कार्यक्रम (कर्टेन रेजर) 'एआई फॉर ऑल: रीइमेजिनिग ग्लोबल कोऑपरेशन' में वक्तव्य देंगे।

सार्वजनिक नीति शोध संस्था कार्नेगी इंडिया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि हमें यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026' के कर्टेन रेजर कार्यक्रम को संबोधित करेंगे। इस आयोजन के लिए 100 से अधिक देशों के 35000 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया है, जिनमें 500 से अधिक स्टार्टअप सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निमंत्रण पर फ्रांस के राष्ट्रपति इमानुएल मैक्रों 17 से 19 फरवरी तक भारत की यात्रा पर रहेंगे और इस शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। उनकी यह यात्रा उभरती और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों, विशेष रूप से एआई के क्षेत्र में सहयोग को लेकर दोनों राष्ट्रों की प्राथमिकता को रेखांकित करती है। अपनी यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति मैक्रों मोदी के साथ 'होराइजन 2047 रोडमैप' के अंतर्गत द्विपक्षीय सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए व्यापक चर्चा करेंगे। वे मुंबई में संयुक्त रूप से 'भारत-फ्रांस नवाचार वर्ष 2026' का भी उद्घाटन करेंगे। नई दिल्ली के भारत मंडपम में 16 से 20 फरवरी तक आयोजित होने वाला 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट' पांच दिवसीय कार्यक्रम है, जो नीति, अनुसंधान, उद्योग और सार्वजनिक सहभागिता पर केंद्रित है।

- **इस आयोजन के लिए 100 से अधिक देशों के 35000 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया**

ढाका। बांग्लादेश में देश के 13वें संसदीय चुनाव के दौरान मतदान करते बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस।

वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति ने अमेरिकी ऊर्जा मंत्री से की मुलाकात

काराकास। वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज ने अपने आधिकारिक आवास मिराफ्लोरेस पैलेस में अमेरिका के ऊर्जा मंत्री क्रिस राइट से मुलाकात कर द्विपक्षीय ऊर्जा एजेंडे की समीक्षा की है। वेनेजुएला के राष्ट्रपति कार्यालय की ओर से बुधवार को जारी बयान के मुताबिक, बैठक में वेनेजुएला की ऊर्जा संप्रभुता और द्विपक्षीय रिश्तों के नीतिगत ढांचे में 'दोनों देशों के लिए फायदेमंद ऊर्जा एजेंडे' पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इसमें अमेरिका की चार्ज डी' अफेयर्स लॉरा डोगू, वेनेजुएला की सरकारी तेल कंपनी पेट्रोलियोस डी वेनेजुएला एसए के अध्यक्ष हेक्टर ओब्रेगॉन और अमेरिका में वेनेजुएला के कूटनीतिक प्रतिनिधि फेलिक्स प्लासेंसिया भी मौजूद थे।

ईरान के साथ बातचीत जारी रहेगी: ट्रम्प

मैंने इजरायल के पीएम नेतन्याहू और उनके प्रतिनिधियों से मुलाकात की: राष्ट्रपति

वॉशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि अमेरिका और ईरान के बीच वार्ता इस बात की संभावनाओं का पता लगाने के लिए जारी रहेगी कि क्या परमाणु हथियारों को लेकर कोई समझौता किया जा सकता है। यह बयान उन्होंने व्हाइट हाउस में इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ बंद कमरे में हुई बैठक के तुरंत बाद दिया।

ट्रम्प ने सोशल मीडिया मंच ट्रुथ सोशल पर पोस्ट में कहा कि मैंने अभी-अभी इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू और उनके प्रतिनिधियों से मुलाकात पूरी की है। ईरान के साथ वार्ता जारी रखने के अलावा कोई निर्णायक सहमति नहीं बनी, ताकि यह देखा जा सके कि कोई समझौता संभव है या नहीं। यदि समझौता हो सकता है, तो मैंने प्रधानमंत्री को बताया कि यही मेरी प्राथमिकता होगी। यदि ऐसा नहीं हो पाता, तो हमें देखना होगा कि आगे क्या परिणाम निकलता है। उन्होंने कहा कि बैठक में गाजा और पूरे क्षेत्र में हो रही प्रगति पर भी चर्चा हुई। नेतन्याहू बुधवार सुबह व्हाइट हाउस के दक्षिणी लॉन से होते हुए पहुंचे और बिना किसी संवाददाता सम्मेलन या आधिकारिक बयान के रवाना हो गए। दोनों नेताओं के बीच यह ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल के दौरान सातवीं मुलाकात थी, जो करीब तीन घंटे तक चली। बैठक से पहले नेतन्याहू ने अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो से मुलाकात की और औपचारिक रूप से 'शांति बोर्ड' का सदस्य बनने पर सहमति दी, जिसे इजरायली संसद में विवादास्पद पहल बताया जा रहा है। अमेरिका रवाना होने से पहले नेतन्याहू ने कहा था कि वह राष्ट्रपति ट्रम्प के समक्ष ईरान से वार्ता के सिद्धांतों को रखेंगे, जो न केवल इजरायल बल्कि पश्चिम एशिया में शांति और सुरक्षा चाहने वालों के लिए अहम हैं। नेतन्याहू के कार्यालय के अनुसार, वह चाहते हैं कि वार्ता में ईरान के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम पर सीमाएं लगाई जाएं और हमास तथा हिजबुल्लाह जैसे संगठनों से उसके संबंधों में कटौती शामिल हो। ट्रम्प ने मंगलवार को फॉक्स बिजनेस नेटवर्क को दिए साक्षात्कार में कहा था कि समझौता अच्छा होना चाहिए। कोई परमाणु हथियार नहीं, कोई मिसाइल नहीं। इस बीच, ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान ने तेहरान में 1979 की इस्लामी क्रांति की 47वीं वर्षगांठ के अवसर पर कहा कि पश्चिम द्वारा खड़ी की गई 'अविश्वास की दीवार' अमेरिका के साथ परमाणु वार्ता में बाधा बन रही है।

- **ईरान के साथ वार्ता जारी रखने के अलावा कोई निर्णायक सहमति नहीं बनी, ताकि यह देखा जा सके कि कोई समझौता संभव है या नहीं**

किम जोंग ने 13 साल की बेटी को उत्तराधिकारी चुना

बीजिंग दौरे पर पिता के साथ दिखी थीं, पब्लिक प्रोग्राम्स में भी नजर आ रही

सिओल। उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन ने अपनी 13 साल की बेटी किम जू ऐ को अपना उत्तराधिकारी चुन लिया है।

दक्षिण कोरिया की खुफिया एजेंसी ने गुरुवार को सांसदों को दी गई जानकारी में यह दावा किया। दक्षिण कोरिया की नेशनल इंटेलिजेंस सर्विस (एनआईएस) ने कहा कि किम जू ऐ की लगातार बढ़ती सार्वजनिक मौजूदगी को देखते हुए यह आकलन किया गया है। एनआईएस ने कहा कि उसने 'कई परिस्थितियों' को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला है। इनमें आधिकारिक कार्यक्रमों में किम जू ऐ की प्रमुख उपस्थिति भी शामिल है। हाल के महीनों में जू ऐ कई बड़े कार्यक्रमों में अपने पिता के साथ नजर आई हैं। सितम्बर में बीजिंग दौरे के दौरान भी वह किम जोंग उन के साथ दिखीं थी। यह उनका पहला विदेशी दौरा था, जिसकी जानकारी सामने आई। किम जू ऐ सितम्बर में बीजिंग दौरे के दौरान पिता किम जोंग उन के साथ दिखीं थी। एनआईएस ने यह भी कहा है कि वह इस बात पर नजर रखेगी कि क्या जू ऐ इस महीने होने वाली पार्टी सम्मेलन में शामिल होती हैं। यह उत्तर कोरिया का सबसे बड़ा राजनीतिक कार्यक्रम है, जो हर पांच साल में एक बार होता है। इसी पार्टी सम्मेलन में प्योंगयांग अगले पांच साल के लिए अपनी प्राथमिकताओं जैसे-विदेश नीति, युद्ध की तैयारी और परमाणु कार्यक्रम पर विस्तार से जानकारी दे सकता है। दक्षिण कोरिया के सांसद ली सोंग-क्वेन ने गुरुवार को पत्रकारों से कहा कि एनआईएस पहले जू ऐ को 'उत्तराधिकारी बनने की ट्रेनिंग ले रही' बता चुकी है। अब एजेंसी का मानना है कि वह 'औपचारिक तौर पर उत्तराधिकारी घोषित' किए जाने के चरण में पहुंच गई हैं। ली ने कहा, किम जू ऐ कई बड़े कार्यक्रमों में अपने पिता के साथ दिखी हैं। वह कोरियाई पीपुल्स आर्मी की स्थापना दिवस के कार्यक्रम में शामिल हुईं और कुमसुसान पैलेस ऑफ द सन भी गईं। कुछ सरकारी नीतियों पर उनकी राय सामने आने के संकेत भी मिले हैं। इन सब बातों को देखते हुए एनआईएस मानती है कि अब उन्हें उत्तराधिकारी के तौर पर नामित कर दिया गया है।

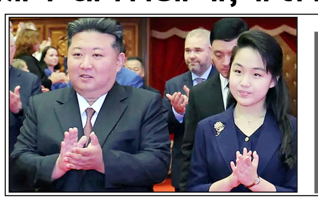

- **हाल के महीनों में जू ऐ कई बड़े कार्यक्रमों में अपने पिता के साथ नजर आई हैं**